[श्री बाबू राव परांजपे]

कच्चे माल का ग्राभाव होने के कारण ग्राज उत्पादन की गति ग्रत्यंत दयनीय है।

ग्रत: केन्द्रीय मंत्री जी से अनुरोध है कि कर्नाटक शासन के प्रभुत्व से उद्योग मुक्त कराकर स्वयं केन्द्र शासन इसको ढीक ढंग से संचालित करे ताकि यह उद्योग बन्द होने से बच जाए।

(x) Financial Assistance to Tamilnadu to rehabilitate flood-affected people.

SHRI S.T.K. JAKKAYAN (Periyakulam) : The unseasonal torrential rain throughout Tamil Nadu from February 5th to 15th has left a trail of destruction. 110 people have lost their lives; 16,300 heads of cattle are dead. 43 lakhs of people in 5893 villages are affected. The crops on 2.2 lakh acres have been uprooted. 3 27 lakh huts have been destroyed. 3183 irrigation works, 611 bridges, 1,110 school and hospital buildings have been damaged. 7000 kms. of roads are under repair. 319 kms. of roads have been completely destroyed. The districts of Tiruchirpalli, South Arcot, Pudukottai, Ramanathapuram, Tirunelveli North Arcot and Chengleput are reeling under the flood havoc. This has been preceded by heavy rains for three days in December and the vast areas of the State are submerged in water. The Central Government has so far given Rs. 15 crores as flood relief assistance. But the State Government has spent Rs. 37 54 crores. After sending detailed reports about the floods, the State Government has asked for a sum of Rs. 128 crores. It is requested that the Centre may sanction immediately flood relief assistance to the tune of Rs. 128 crores and rehabilitate the flood-affected people of Tamilnadu.

———

12.43 hrs.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS – Contd.

MR. DEPUTY SPEAKER : The House shall now take up further consideration of the following motion moved by Shri B.R. Bhagat and seconded by Shri Xavier Arakal on the 27th February, 1984, namely :—

"That an Address be presented to the President in the following terms :—

'That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which be has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on the 23rd February, 1984."

Shri Kamal Nath Jha to continue. He has already taken 15 minutes. Today, there is no lunch hour.

श्री कमल नाथ झा (महरसा) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं कल यह निवेदन कर रहा था कि हमारी सरकार या हमारे राष्ट्र का मूल्यांकन सिर्फ उसकी शक्ति या सम्पत्ति से करना बड़ी भारी भूल होगी हमारे देश भारतवर्ष की एक बड़ी ही प्राचीन संस्कृति है। वह संस्कृति अभी भी जीवित है और मानव जाति को आज भी उसकी आवश्यकता है।

आज विश्व की जो परिस्थिति है, हिन्दुस्तान की जो स्थिति है और हिन्दुस्तान के इर्द-गिर्द जो स्थिति है, उसे हमारे राष्ट्रपति महोदय ने अपने अभिभाषण में इंगित किया है कि क्या खतरनाक स्थिति संसार की और खासकर भारत की है। हमारे पड़ोस में पाकिस्तान, श्री लंका, ईरान, ईराक लेबनान

की परिस्थिति से हम सब अवगत हैं। आज भारतवर्ष में जो प्रवृत्तियां उभर कर आ रही हैं, उनके मूल में जो हिंसा की भावनाएं हैं, वह सम्पूर्ण विश्व को लील और निगल जाना चाहती है। इसी अहिंसा की भावना ने भारत की संस्कृति से लड़ने के लिए मानव जाति को असंतोष प्रदान किया है।

भगवान बुद्ध, महावीर, तीर्थंकर, हमारे सैकड़ों सन्तो, सम्राट अशोक, सम्राट अकबर, मोहन दास कर्मचन्द गांधी, इंडियन नेशनल कांग्रेस और हमारे संविधान ने उसी संस्कृति को सम्पोषित किया है, समवर्द्धित और संशोधित किया है।

अहिंसा परमोधर्मः यतो धर्मस्ततो जय।

इस चीज को आज हम गौरव के साथ कहते हैं। आज मानव जाति अपनी रक्षा हिंसा से नहीं कर सकती है, अहिंसा से कर सकती है। हिन्दुस्तान में जिस अहिंसा का दामन पकड़कर महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमने आजादी हासिल की और संविधान द्वारा गणतंत्र की स्थापना की, वह गणतंत्र सशक्त है। जनता ने इसे समझा है। जनता ने कांग्रेस पार्टी को दिल्ली के सिंहासन से उठ कर सडक पर फेंक दिया और जब दूसरी पार्टी की सरकार जनता के मानस पर सही नहीं उतरी तो उसको भी सिंहासन से उठाकर दिल्ली की सड़कों पर फेंक दिया ऐसे देश में जहां परिवर्तन के लिए संविधान का मार्ग प्रशस्त है, वहां किसी भी अल्पमत, बहुमत, किसी भी पोलिटिकल पार्टी या दल को या गिरोह को हिंसा की बात करना सरासर अनुचित, संविधान-विरोधी और जन-विरोधी है। आज मुझे दुःख के साथ इस सदन में कहना पड़ता है कि इस देश में कुछ लोग अपनी धार्मिक या तथाकथित राजनीतिक मांग के लिए आज से ही नहीं, बल्कि दो-चार साल से हिंसक कार्यवाहियों और खूनखराबे का एक वातावरण तैयार कर रहे हैं और देश के एक हिस्से में अराजकता की स्थिति पैदा कर रहे हैं। उनकी इस स्थिति को दूसरे लोग, जो अपने को समझते है कि हम भी डैमोक्रेसी अहिंसा और कांस्टीटुशनलिज्म के अलम्बरदार है, वह इसे चुपचाप देखते है। वह कहते हैं मैं उसका साथ नहीं देता हूं लेकिन गुनाहवश चुपचाप—

बुझा रहे ज्वाला सहमो से
कर से आच लगाकर

आज अगर हिन्दुस्तान की तमाम राजनीतिक पार्टियां, दल, जो कुछ पंजाब में हो रहा है और दूसरे इलाकों में हुआ है, उनको अन-क्वालीफाईड वर्डो मे, ताकत और मजबूती के साथ कडम करे तो मै समझता हूं कि तुरन्त ये बातें काबू मे आ सकती है। यह कांग्रेस पार्टी का सवाल नही है। यह श्रीमती इन्दिरा गांधी की सरकार का सवाल नही है। सवाल भारतवर्ष की जनता का है हिन्दुस्तान की सार्वभौमिकता का है। राष्ट्रपति जी ने सही कहा है कि हमारे राजनैतिक मतभेद जो भी हों, हम लोगों को एक साथ मिल कर, कदम से कदम मिलाकर इन खतरों से जूझना चाहिए। कल मेरे साथी कह रहे थे कि हमारी यह परम्परा रही है कि देश पर जब भी कोई खतरा आया है, तो हमने एक-साथ मिल कर उसका मुकाबला किया है।

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी (निजामाबाद) : सिर्फ खतरे के समय ही नहीं, हमेशा एक-साथ मिलकर रहना चाहिए।

श्री कमल नाथ झा : राष्ट्र के निर्माण के संबंध में आपस में मतभेद हो सकते हैं।

दूसरा खतरा है साम्प्रदायिकता का। हिन्दुस्तान में हमने सेकुलरिज्म को स्वीकार किया है। सारी दुनिया में हमारा ही देश है, जहां रंग, जाति या जन्म का कोई भेद नहीं है। हमने इस सिद्धांत को संविधान में स्वीकार किया है। यह ठीक है कि हमारे यहां हजारों बरसों से जाति-प्रथा है और इसके कुपरिणाम हमारा समाज भोग रहा है। जो दबे, कुचले, नीचे के लोग है, आज भी उनके साथ अन्याय होता है। इस सप्ताह मे दोनों पक्ष के वे लोग, जिन्हे ऐसे लोगो के प्रति हमदर्दी तथा सहानुभूति है, इस बारे में कुछ करने के लिए कटिबद्ध है। लेकिन सोशल चेंज, सामाजिक परिवर्तन में समय लगता है। पिछले 35 सालों मे हिन्दुस्तान ने इस दिशा मे काफी प्रगति की है, मगर आगे भी बहुत कुछ करना बाकी है।

आज हिन्दुस्तान में सब से अहम सवाल है गरीबी मिटाने का सवाल। बगैर गरीबी मिटाए हुए, बगैर नीचे के तबके के लोगों को ऊचा उठाए हुए, हम सामाजिक बराबरी पैदा नही कर सकते। ये प्रश्न इंटर-वोवन है, एक दूसरे से गुथे हुए है। इस लिए हमारा काम कठिन है। मैं अपने कम्युनिस्ट दोस्तों को बताना चाहता हूं कि हमारा डेमाक्रेटिक और पार्लियामेंटरी प्रासेस है, उसमें हमरी स्पीड, गति धीमी होगी। हमारे यहां एक डिक्टेटोरियल फार्म आफ गवर्नमेंट नही है। हम बैंकों का नेशनलाइजेशन करते है, देशी रजवाड़ो के प्रिवी पर्स खत्म करते है या जमींदारी एबालिशन करते हैं, तो उसे सुप्रीम कोर्ट मे चेलेंज किया जाता है। यानी गरीबी को मिटाने के लिए हम जो भी पहल करते हैं, उसमें हमारे सामने कानूनी व्यवधान होता है। इस लिए हमारी गति स्लो होगी। लेकिन हमने देखना है कि क्या स्लोली एंड स्टेडिली हम हम एक इगैलिटेरियन समाज की तरफ बढ़ है या नहीं, हम देश को आगे ले जा रहे हैं या नहीं।

जो लोग इस प्रगति से घबराते है, जो इसमें बाधा डालना चाहते है, वे आज देश में अशांति पैदा करना चाहते है साम्प्रदायिकता पैदा करना चाहते है, देश को कमजोर करना चाहते है, देश में हिंसा फैलाना चाहते है, जिससे हमारा शातिपूर्ण प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाए। इससे देश का नुकसान होगा, गरीब तबके का नुकसान होगा, देश कमजोर होगा। इस लिए हम अपील करते है कि सभी राजनैतिक दल राष्ट्रीय मुद्दों पर एकमत हो कर देश को कमजोर करने वाली शक्तियों का डट कर मुकाबला करें।

इन शब्दों के साथ मैं धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री रशीद मसूद (सहारनपुर) : मोहतरिम डिप्टी स्पीकर साहब, मैं आज न सिर्फ शुक्रिया के प्रस्ताव में खड़ा हुआ हूं बल्कि मैं समझता हूं कि आज जो मुल्क की हालत है उस हालत में सदर साहब से मेरी यह दरख्वास्त होनी चाहिए कि वह इस सरकार को फौरन बरख्वास्त कर दें। कांग्रेस के 1980 के एलेक्शन मैनिफेस्टो से देखिए, फिर 1980 के खुतबे-सदारत को देखिए, 1981 के सदारत के खुतबे को देखिए, 1982 और 83 के देखिए और फिर 1984 के सदर साहब के खुतबे को देखिए। उस में बहुत ज्यादा फर्क महसूस नहीं होता। सन् 1980 के सदर साहब के खुतबे में इस सरकार ने वादा

किया था कि वह इस मुल्क से बेरोजगारी को दूर कर देगी, इस मुल्क से गुरबत को दूर कर देगी, कम्यूनल रायट्स को दूर कर देगी, बढ़ती हुई कीमतों को न सिर्फ आगे बढ़ने नहीं देगी बल्कि उस लेवेल पर लाएगी जो 1971-72 में थी। उस ने वादा किया था कि कानून की हालत और कानून की व्यवस्था को इस मुल्क में दुरुस्त कर देगी। लेकिन मैं समझता हूं कि इन में कोई भी बात पूरी नही हुई और आज जब 1984 का खुतबे-मदारत पढ़ा जाता है तो यह महसूस होता है कि आज उन सारी चीजो पर से जिन पर जोर दिया गया था, वह जोर हटा कर के मैं नहीं जानता क्यों और किस वजह से अन्दरूनी और ताहरूनी खतरात की तरफ पूरी शिद्दत के साथ जोर लगाया जा रहा है। लोगों को यह बताने की कोशिश की जा रही है कि मुल्क अंदरूनी और बाहरूनी खतरात से घिरा हुआ है। मुल्क टूट रहा है, मुल्क बरबाद हो रहा है, मुल्क खत्म हो रहा है, लिहाजा इस मुल्क को बचा सकती है तो सिर्फ कांग्रेस सरकार और हमारी प्राइम मिनिस्टर साहबा। मैं पूछना चाहता हूं कि इन तमाम खतरात के लिए जिम्मेदार कौन है ? मुझे एक शेर याद आता है :

महसूस यह होता है
यह दौरे तबाही है
शीशे की अदालत में
पत्थर की गवाही है
दुनिया में कहीं इस की
तनशीर नहीं मिलती
कातिल ही मुहाफिज है
कातिल ही सिपाही है ॥

मैं पूछना चाहता हूं आप के जरिए कि आज पंजाब में हो रहा है उस की जिम्मेदारी किस पर है ? जो आसाम में हुआ उस की जिम्मेदारी किस पर है ? पंजाब पर मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा क्योंकि उस पर आज डिस्कशन होने वाला है। आज कश्मीर के अंदर आप ने जो सिचुएशन पैदा कर दी है उस की जिम्मेदार कौन है ? कौन नहीं जानता कि भिंडरावाले का ताल्लुक किस से रहा है ? सन् 80 के एलेक्शन में ये किस के एजेंट थे ? कौन नहीं जानता कि प्रोफेसर शेर सिंह जो हिन्दु समिति के अध्यक्ष है हरयाना में वह किस पार्टी से ताल्लुक रखते है ? अगर भिण्डरावाले ने सन् 80 में हम लोगो की मदद की होती और वह इस तोड़ फोड़ के जिम्मेदार होते तो हम अपनी जिम्मेदारी मान लेते। अगर प्रोफेसर शेर सिंह हमारी पार्टी के मेम्बर होते और वह तोड़ फोड के जिम्मेदार होते तो हम अपनी जिम्मेदारी मान लेते। लेकिन बदकिस्मती से या खुशकिस्मती से, मुल्क की बदकिस्मती से और हमारी खुशकिस्मती से न भिण्डरावाले का हमारी जमात से कोई ताल्लुक रहा है न वह हमारे किसी एलेक्शन के कैंडीडेट के एजेंट रहे है और न प्रोफेसर शेर सिंह हमारी पार्टी से कोई ताल्लुक रखते है। फिर यह किस की जिम्मेदारी है ...(**व्यवधान**)...

हमारे साथ कभी नही थे, आपके साथ थे

आज कश्मीर में क्या हो रहा है ? कश्मीर के अन्दर कौन गड़बड़ करना चाहता है ? एक तरफ फारूख अब्दुल्ला है जिसकी एक तारीख है, जिस के बाप की एक तारीख है कि जिस ने हिन्दुस्तान के साथ इलहाक के लिए मुसलसल कुर्बानियां दी है, जिस ने हिन्दुस्तान के साथ इलहाक के लिए मुश्तकिल जेलें काटी है। एक तरफ वह फारूख अब्दुल्ला है जो दिन में और रात में, अंधेरे

[श्री रशीद मसूद]

में और उजाले में सामने और पोशीदा तौर पर यह कहता है कि हिन्दुस्तान के साथ काश्मीर का इलहाक फाइनल है, इस के ऊपर कोई बात नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान का अटूट हिस्सा है काश्मीर और दूसरी तरफ मौलवी इफ्तखारुद्दीन साहब हैं जो इत्तफाक से असेम्बली मे आप के सदर है, क्या आप को याद नही है सन 68 मे लाल चौक पर तकरीर करते हुए इफ्तखारुद्दीन साहब ने यह बात कही थी कि प० जवाहर लाल नेहरू के वायदे के मुताबिक हिन्दुस्तान के साथ कश्मीर का इल्हाक फाइनल नही है। मैं नही समझता कि वह आदमी जो दिन-रात यह बात कह रहा हो कि हिन्दुस्तान के साथ काश्मीर का इल्हाक फाईनल है, वह आदमी जो दिन रात यह बात कह रहा हो कि काश्मीर हिन्दुस्तान का एक अटूट हिस्सा है वह गद्दार है ? वह बागी है, वह सेशेशनिस्ट है और वह आदमी जो हिन्दुस्तान के साथ कश्मीर का इल्हाक मानता न हो, वह आदमी जो मुल्क के पहले वजीरे आजम के वायदो की याद दिलाकर यह दिलाने की कोशिश करता हो कि हिन्दुस्तान के साथ कश्मीर का इल्हाक फाइनल नही है, कश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा नही है, वह आज देशभक्त है ? क्या आपके यहा देशभक्ती का पैमाना यह है कि जो कांग्रेस पार्टी मे रहकर इस मुल्क के टुकड़े-टुकड़े करने की कोशिश करेगा वह देशभक्त होगा ? और जो कांग्रेस पार्टी के खिलाफ रहकर इस मुल्क को जोड़ने की बात करेगा, जो कांग्रेस पार्टी के खिलाफ रहकर इस मुल्क के इत्तहाद की बात करेगा, वह गद्दार होगा ? आपकी यहा वह पालिसी है जिसने आज तक हिन्दुस्तान मे हिन्दुस्तानी को पैदा नही होने दिया। आज आपको इस देश में हिन्दु मिल जाएगा, मुसलमान मिल जाएगा, सिख मिल जाएगा, ईसाई मिल जाएगा, बौध मिल जाएगा दूसरे लोग मिल जायेंगे लेकिन क्या कहीं पर हिन्दुस्तान भी मिलता है ? नहीं मिलता है। इसके लिए कौन जिम्मेदार हैं ? इसके जिम्मेदार आप है। आपने यह कोशिश की होती कि हमें हिन्दुस्तान मे एक नेशन बनानी है, इस मुल्क में हिन्दुस्तानियों को पैदा करना है और यहां पर अगर दर्द शुमाल में होता हो तो वह जुनूब में महसू किया जाय, अगर मशरिक में दर्द हो तो मशरिब में महसूस किया जाए, अगर हिन्दु के दर्द होता हो तो मुसलमान को भी वह दर्द महसूस हो, एक हरिजन का दर्द ब्राह्मण को महसूस हो और किसी राजपूत का दर्द जाट को महसूस हो। किसानों का दर्द इंडस्ट्रिलिस्ट को महसूस हो। अगर इस बात की कोशिश आपने की होती तो आज हिन्दुस्तान का नक्शा ही मुख्तलिफ होता। लेकिन आपने ऐसा नही किया। 1952 में जब इस पार्लमेंट का पहला एलेक्शन हुआ उस वक्त एक सुनहरी मौका था, हिन्दुस्तान की आजादी ताजी-ताजी थी, उस वक्त हर हिन्दुस्तानी के दिल में हिन्दुस्तान के लिए मोहब्बत थी, उस वक्त हर देशवासी अपने को हिन्दुस्तानी समझता था और उस वक्त हर हिन्दुस्तानी इस बात की कोशिश करता कि वह कुर्बानी दे करके इस मुल्क की तामीर करे, इस मुल्क को एक बनाए और इस मुल्क से मोहब्बत करे। काश, उस वक्त आपने अकल से काम लिया होता। काश, उस वक्त आपको अपनी कुर्सी की नही देश की फिक्र होती। उस वक्त आपने एक मुसलमान को एक ऐसी जगह से खड़ा किया होता जहां कोई मुसलमान नहीं होता। वह मुसलमान मुकम्मिल तौर पर हिन्दुओं के वोटो पर जीतकर यहां आता और हिन्दुओं

के दु:ख दर्द की बात इस पार्लमेंट में रखता एक हिन्दु को आप उस जगह से खड़ा करते जहा मुसलमानों की तादाद ज्यादा होती तो वह हिन्दु इस पार्लमेट मे आकर मुसलमानो के दु ख दर्द की बात रखता और बताता कि मुसलमानो को क्या-क्या तकलीफे है। इसी तरह से जहा पर हरिजनो की तादाद सबसे कम होती वहा से आप हरिजन को खडा करते और वह हरिजन यहा पर ब्रह्मणो को रेप्रे जेन्ट करता और जहा पर हरिजनो की तादाद ज्यादा थी वहा से आप ब्रह्मण को खडा करते या राजपूत को खडा करते। तब इस देश के हरिजन, राजपूत, ब्राह्मण और मुसलमान जानते यह हिन्दुस्तान क्या है। जो ब्राह्मण हरिजनो के वोटो पर जीतकर इस पार्लमेट मे आता वह आकर बताता कि हरिजनो को क्या तकलीफे है। लेकिन आपको तो अपनी कुर्सी चाहिए थी आपको मेम्बर्स नही चाहिए थे। आपको तो एसे लोग चाहिए थे जो आपके कहने पर हाथ उठाते आपको ऐसे लोग चाहिए थे जो आपके नाम पर जिन्दा रहते। उनको इस बात का अहसास रहता कि वे आपके नाम पर जीत-कर आ रहे है, वे कोई पापुलर काम करके, अच्छा काम करके, मुल्क मे इत्तहाद कायम करने के लिए काम करके और हिन्दुस्तान मे एक कौम पैदा करने का काम करके इस एवान मे नही आ रहे है बल्कि आपके नाम पर ही जीत कर आ रहे है। इसलिए आपको जरूरत इस बात की ही थी कि ऐसे लोग आये जोकि आपके नाम पर हाथ उठाये, आपके कहने पर वोट दे, आपके कहने पर चले और आप उनको भेड-बकरियो की तरह जैसे भी चाहे हाक दे। आपने इस मुल्क के हिन्दुस्तानी को हिन्दुस्तानी बनने ही नही दिया। और आज आप अपोजीशन पर इल्जाम लगाकर बैठ जायेगे। यह कह देना बडा आसान है कि आज कश्मीर मे क्या हो रहा है। वहा पर एक एलेक्टेड गवर्नमेंट आई है लेकिन आप वहा पर हंगामा करा रहे है ताकि उस सरकार को डिसमिस कर दिया जाए क्योकि इत्तफाक से डा० फारूख अब्दुल्ला साहब कांग्रेस (आई) से नही है और कांग्रेस आई की बात सुनने के लिए वे तैयार नही है। आप नही चाहते है कि मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसा कोई नेता मुसलमानो को रेप्रेजेन्ट करने वाला पैदा हो। क्या इसकी जिम्मेदारी भी अपोजीशन पर है? दोस्तो मैं आपके जरिए अर्ज करना चाहता हू कि अभी भी वक्त है, देर आए दुरुस्त आए, आप हिन्दुस्तान के तामीर की बात करो। लेकिन अफसोस होता है, जब हरिजन यहा से पिटता है, आपकी पुलिस के जरिए पिटता है, आफिसर्स के जरिए पिटता है, तो उधर के लोग आफिसर्स को सपोर्ट करते है। कांग्रेस का हरिजन यदि पिटता है और हम लोग यहा से आवाज उठाते है कि वह क्यो पिट रहा है, तो कोई असर नही होता है। आपको अपनी कुर्सी प्यारी है। आप समझते है कि अगर कही हमने आफिसर को सजा दे दी तो वह आफिसर हमसे कही नाराज न हो जाए और एक वजह यह कि आप को नजायज फायदे उठाने है उस आफिसर से। आपको दर्द क्यो नही होता है जो हिन्दुस्तान की एवाम का मैम्बर है, जो पार्लियामेट का मैम्बर है, क्या वे सब एक नही है। पार्लि-यामेंट के मैम्बर के दु ख दर्द को आप क्यो नही समझते है। इस पार्लियामेंट के अन्दर 542 के करीब सदस्य है और जब हिन्दु-स्तान की इस पार्लियामेट के अन्दर इस तरफ बैठे हुए लोग या इस तरफ बैठे हुए लोगो के दु ख दर्द को उस तरफ बैठे हुए लोग नही समझ सकते है, तो मे पूछना

[श्री रशीद मसूद]

चाहता हूं कि हिन्दुस्तान कहां है, जिसका ख्वाब महात्मा गांधी ने देखा था। हिन्दुस्तान को बनने नहीं दिया, यह आसानी से कह दिया जाता है कि अपोजीशन वाले लोग इसको टुकडे में बदल रहे है। मैंने यह बात पहले भी कही थी और आज भी कह रहा हूं, आप बताइये ऐसा कौन सा मौका आया है, जहां अपोजीशन वालो ने एक हो कर सोल्यूशन तैयार करने की कोशिश नही की है। लेकिन हर मीटिंग के बाद कह दिया जाता है कि अपोजीशन वाले इस काम को नही करने देना चाहते है।

मोहतरिम डिप्टी स्पीकर साहब, गुरबत को हटाने का नारा सन् 1980 में इस सरकार द्वारा दिया गया था। इसी सरकार के 1980, जुलाई के एक प्रश्न के जवाब के मुताबिक सन् 1980 मे हमने जब यह सरकार आपको दी थी, उस वक्त इस मुल्क के अन्दर गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या 48·13 परसेंट थी। अब 28 जुलाई, 1982 को एक पूछे गए प्रश्न के जवाब मे इनके अनुसार बिलो पावर्टी लाइन लोगो की सख्या बढ कर 56·56 परसेंट हो गई है। इस प्रकार दो साल के अन्दर दस प्रतिशत लोगो को गरीबी की रेखा से नीचे ढकेल दिया है। यह आपकी कौन सी इकानामी है, कौन सा तरीका है, मुल्क की बेरोजगारी को दूर करने का। अब यह संख्या बढ़ कर 66-67 परसेंट हो गई है। यह अफसोस का मुकाम है, जिस मुल्क को सन् 1980 मे यह कह कर के, कि लॉ एंड आर्डर की प्राब्लम को दूर करेगे, महगाई को दूर करेगे भूखे-नंगे लोगों को रोटी-कपडा और मकान देगे बिलो पावर्टी लाइन से लोगो को ऊपर उठायेंगे, इस मुल्क को अपने हाथ में लिया है। इस वक्त भी मुल्क की दो-तिहाई आबादी गरीबी की रेखा से नीचे अपना जीवन व्यतीत कर रही है। आपके चमचमाते बड़े-बड़े शहर, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास और बम्बई, जहां रोशनियो से आदमियों की आंखे चुंधिया जाती है, उन शहरो के अन्दर भी 33 प्रतिशत, 48 प्रतिशत और 28 प्रतिशत लोग सलम्स में रह रहे है। जहां पीने को पानी नही है। जहां रहने के लिए मकान नहीं है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या आपको इसका इल्म नही है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आप ने कितनी चीजो को अब तक हटाया है? आपके जमाने मे हर शहर में सलम्स बढ़ रहे है। आपके जमाने मे झुग्गी-झोपड़ी मे रहने वालो की सख्या बढ रही है। चार साल पहले जिनको खाने को भरपेट मिल रहा था, आपके जमाने मे शायद दो तिहाई आदमियो को भी भरपेट खाने को नही मिल रहा है। फिर भी इन सब के लिए जिम्मेदार अपोजीशन है। अपोजीशन बजट बनाती है, अपोजीशन उसको इम्पलीमेंट करती है। ला-एंड-आर्डर की जिम्मेदारी अपोजीशन की है— यह सारा काम आपका है। अगर आप यह समझते है कि इन सब के लिए जिम्मेदारी अपोजीशन है, तो सरकार किस लिए है। यह बात मेरी समझ में नही आती है। लेकिन एक रसम चल रही है। आपको कोई न कोई बात कई मर्तबा कहनी है, जिससे वह सच महसूस होने लगे। आप सन् 1980 से लेकर 1984 तक कांफ्रेंसेज कर रहे है। बाहर के लोगो को बुला रहे है। बाहर के लोगो को बुला-बुलाकर दावते दे रहे है। दुनिया का लीडर बनने का ख्वाब देख रहे है। दुनिया को लीडरशिप प्रोवाइड करने की बात कर रहे है, चाहे अपने

यहां लोग मरते रहें। इन नौटंकियों के ऊपर 2400 करोड़ रुपया खर्च किया जा रहा है। ऐसे मुल्क जहां 1 लाख 30 हजार 761 गाव ऐसे है जहां आज तक पीने का पानी मुयस्सर नहीं है, उस मुल्क में 2400 करोड़ रुपये नौटंकी पर खर्च किए जा रहे है और बड़े खुश हो रहे हैं कि हम दुनिया के लीडर बन गए है, दुनिया को दिखला दिया है कि हम एक तरक्कीयाफ्ता मुल्क है यह कौन सी तरक्की है ? डिप्टी स्पीकर साहब, जहां हमारी बहनें और बेटियां पेट भरने के लिए अपनी इज्जत बेचती है वहां 48 करोड़ रुपया 48 घंटों मे गोवा में खच कर दिया। लोगो को पान का पानी नही मिलता, लेकिन हम उन को शराब पिलाते है। इस मुल्क का अवाम आज यह कहते हुए नजर आता है—

"गुल फेंके है औरों की
तरफ बल्कि समर भी
ऐ खानाबर अन्दाजे चमन
कुछ तो इधर भी।"

हिन्दुस्तान की गुरबत किस को नजर आती है, उस को कौन देखना चाहता है ? जो देखना चाहते है वे अपोजीशन में बैठे है। सारी बातों की जिम्मेदारी अपोजीशन पर है। मैं पूछना चाहता हूं - अगर यह सारी जिम्मेदारी हमारी है तो बराये-मेहरबानी सरकार को छोड़िये, हम अपनी जिम्मेदारी निभाने की कोशिश करेंगे।

मैंने अभी कहा था कि गुरबत की लाइन 48.1 परसेंट से 66 परसेंट पर आ गई है। आज अन-एम्पलाएड का क्या हाल है ? जब हम ने सरकार छोड़ी थी, उस वक्त 1 लाख 26 हजार लोग एजुकेटेड अनएम्पलाएड रजिस्टर्ड थे, लेकिन 20 जुलाई के जवाब के मुताबिक आज 2 करोड़ 10 लाख आदमी एजूकेटेड अनएम्पलाएड रजिस्टर्ड हैं। आप यह न समझियेगा कि यह कुल हिन्दुस्तान के बेरोजगारो की तादाद है, हिन्दुस्तान के कुल बेरोजगारों की तादाद है, हिन्दूस्तान के कुल बेरोजगारों की तादाद तो इस से कहीं ज्यादा है और मेरा अंदाजा है शायद 10-12 करोड ऐसे लोग होंगे जिन के पास कोई रोजगार नहीं है। यह तादाद तो रजिस्टर्ड लोगों की थी। जो लोग देहातों मे रहते है, हमारे मजदूर भाई और दूसरे लोग वहां रजिस्टर कराते है। दिल्ली जैसे शहर मे भी हजारों बेरोजगार लोग हमारे पास आते है और उन से पूछते है कि क्या आप का रजिस्ट्रेशन हो चुका है, तो वे कहते है कि रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ है। इस लिए पढे-लिखे लोगों की यह सही पिक्चर नहीं है, यह तादाद कुछ नहीं तो 3 करोड़ 4 करोड़ के करीब होनी चाहिए। लेकिन उसके बावजूद भी आप फरमाते है कि हिन्दुस्तान तरक्की कर रहा है, आगे बढ़ रहा है— क्या खाक आगे बढ़ रहा है ?

एक और तमाशा देखिए—इस मुल्क के 1980 के खुतबे में सदर साहब के जरिये एक बड़ा जबरदस्त नारा दिया गया— हिन्दुस्तान में साम्प्रदायिकता बढ़ गई है, हिन्दुस्तान खतरे में है, मैं हिन्दुस्तान की माइनारिटीज की हिफाजत अपना फर्ज समझता हू। हिन्दुस्तान की माइनारिटीज ने 1977 में कांग्रेस को वोट नहीं दिया और इसलिए नहीं दिया था कि उन पर जुल्म और जबरदस्ती चल रही थी। हरिजनों ने 1977 में काग्रेस को वोट नहीं दिया इसलिए कि उन पर जुल्म और जबरदस्ती हो रही थी। 1980 के खुतबे में यह कहा गया कि हम हिन्दुस्तान की माइनारिटीज और वीकर सैक्शंज को प्रोटेक्शन देंगे, लेकिन वोट देने की सजा उन को क्या दी गई ? 1980

[श्री रशीद मसूद]
से पहले भी हिन्दु-मुस्लिम फिसाद होते थे, ऐसा हो सकता है, दो भाई लड सकते है—यह बात समझ मे आ सकती है। हिन्दु-हिन्दु से लड सकता है, मुसलमान-मुसलमान से लड सकता है, हरिजन-हरिजन से लड सकता है, इसी तरह हिन्दु मुसलमान से लड सकता है, मुसलमान हिंदु से लड सकता है ये सब बातें हो सकती है, क्योंकि हम हिंदुस्तान मे रहते है, हमारी अपनी कई लोकल प्राबलम्ज है या दूसरी प्राबलम्ज है, लेकिन इस वक्त का यह मतलब नही है कि हम एक-दूसरे से नफरत करते है। आप ने 1980 मे वायदा किया था कि आप प्रोटेक्शन देंगे और हम इस मे कोई शक नही कि आप ने उन को बनाया और इस के लिये हम आप का धन्यवाद करते है। आप ने हिंदु मुसलमान के जुल्म से, मुसलमान को हिंदु के जुल्म से, हरिजन को दूसरो के जुल्म से बचाया, लेकिन उस के बाद आप का अपना जुल्म शुरू हो गया। आप बतलाइये —13 अगस्त, 1980 को मुरादाबाद मे कौन सा हिंदु मुसलमानो को मारने के लिए गया था? बताइए, अगर आप के पास कोई जवाब है। एक आदमी भी हिन्दु नही था, जो मुसलमानो को मारने के लिए गया हो सन् 1980 मे ईदाह पर। मुसलमान अपने बच्चो को लेकर गये थे। मुसलमानो के 165 बच्चे, बूढे और जवान शहीद हो गये उस ईदगाह मे। किस के जरिए? क्या हिन्दुओं के जरिये। नही, वहा हिंदुओ ने नही मारा बल्कि आप की जो पुलिस है और पी० ए० सी० है, उस की गोलियो से वे मरे। उस की जिम्मेदारी भी क्या अपोजीशन पर होगी। जो गोलियां आप की पुलिस चलाएगी मुसलमानों को मारने के लिए, क्या उसकी जिम्मेवारी भी अपोजीशन वाले उठाएंगे? क्या जो गोली आप चलाएंगे, हमारे ऊपर उस की जिम्मेवारी हमारी होगी। नही होगी। आप की पुलिस और पी० ए० सी० ने ईदगाह मे मुसलमानो पर गोलिया चलाईं और वहा हिन्दुओ ने गोली नही चलाई। यह आप ने वहा मुसलमानों को प्रोटेक्शन दिया? आप सजा देने लगे उन लोगों को, उन मुसलमानो को जिन्होने आपके खिलाफ वोट देने की जुर्रत की। वह कहने लगे कि तुमने हमारे खिलाफ वोट देने की जुर्रत कैसे की। जर-खरीद मुसलमान कांग्रेस को वोट देना था। इस के अन्दर जुर्रत कैसे हुई कि कांग्रेस के खिलाफ वोट दिया। इसलिए आप को यह बर्दाश्त नही हुआ। और आप ने उस को गोली का निशाना बना लिया। क्या आप ने एक आदमी का भी ट्रांसफर किया? क्या आप ने किसी अफसर को सजा दी? क्या आप ने एक आदमी का भी तबादला किया और क्या आप ने एक आदमी को बुला कर पूछा कि ऐसा क्यो हुआ? सवाल यही है। इस से भी बढ़कर मेरठ के अन्दर दुबारा वही सिलसिला शुरू हो गया। आज मै फिर कहता हू कि आप ने मेरठ के अन्दर एक साम्प्रदायिक फिजा पैदा की लेकिन अच्छी बात यह है कि एक मुकाम पर भी हिन्दु और मुसलमान मे आपस मे मुठभेड नही हुई। जहा भी मिलता है यही मिलता है हो सकता है कि कोई इक्का-दुक्का कोई केस हो गया हो लेकिन आप की पुलिस और पी० ए० सी० ने जा कर गोली चलाई और आप के जवाबात के जरिए से मैं आप को बता देना चाहता हूं कि आप के जमाने मे क्या हुआ। हिन्दुस्तान को सेकुलरइज्म की जरूरत है और आप कहते है कि हम हिंदुस्तान को आगे बढाना चाहते है और साम्प्रदायिकता के झगडो को खत्म करना चाहते

हैं। आप ने सन् 1980 में यह वायदा किया था कि दृढ़ता और शक्ति के साथ हम साम्प्रदायिकता को कुचल देना चाहते है लेकिन जरा आप अपनी तस्वीर देखिए। जो 15, 20 साल के आप के आंकड़े है आप के जवाबों के मुताबिक, वे मेरे पास है। सन् 1977 में हमारी सरकार आई और सन् 1979 के दिसम्बर तक रही। इन तीन सालों के अन्दर कुल फसादात हिन्दु-मुसलमानों के 722 हुए। इस को 36 से आप तकसीम कर दीजिए क्योंकि 3 साल में 36 महीने हुए। इन तीन साल का एवरेज आता है 19.8 आप इस को 20 ही मान लीजिए यानी एक महीने के अंदर 20 हिन्दु मुसलमानो के फसाद हुए उस सरकार के अन्दर जिस सरकार में आर० एस० एस० के लोग भी बैठे थे और वकील आप के, जिस सरकार अन्दर साम्प्रदायिक लोग बैठे थे। उस सरसरकार के जमाने मे एक महीने के अन्दर 20 फसाद हुए यानी एक दिन के अन्दर एक फसाद से कम हुआ। उस के बाद जब आप की सरकार आ जाती है, साम्प्रदायिकता विरोधी सरकार, इस मुल्क से साम्प्रदायिकता खत्त कर देने वाली सरकार आ जाती है तो उस की स्थिति क्या है। मेरे पास 15 जून 1983 तक के आंकड़े है। आप के जवाब के मुताबिक कुल फसादात की तादाद 1448 है। इस को आप 42 मे तकसीम कर दीजिए क्योंकि 42 महीने साढ़े तीन साल में होते है। 42 से तकसीम करने पर एवरेज आता है 34 47 एक महीने का और एक दिन का एवरेज एक से ज्यादा हुआ। इस तरह से आप की सरकार ने एवरेज को 20 से बढ़ा कर 34 कर दिया और अगर आज की तारीख का एवरेज लगाया जाए और पंजाब के झगड़ों को उस में जोड़ा जाए, मैं तो सिर्फ उन झगड़ों के बारे में बता रहा हूं, जिन में आप के जुल्म शामिल हैं, तो ऐवरेज 75 से ऊपर जा कर बैठेगा। इस तरह से आपने इस मुल्क को तबाह कर दिया और साम्प्रदायिकता को खत्म करने की बजाय उस को बढ़ा दिया। आप ने मुल्क को तोड़ने की साजिश की है और मैं नही समझता कि आप ने सोच क्या रखा है। शायद आप ने भी वही सोच रखा है जो कि अंग्रेजों की सरकार ने सोचा था कि लड़ाओ और राज्य करो और मैं तो समझता हूं कि आप उस से भी आगे बढ़ गये।

आप अपने पिछले रिकार्ड को भी सुन लें क्योकि अपने जवाब मे शायद आप यह कहे कि हमारा पिछला रिकार्ड बहुत अच्छा था। मुझे आप का सन् 1969 से लेकर 1976 तक का रिकार्ड मिला है और आप के जो जवाबात है, उन का पहले का रिकार्ड भी मेरे पास है लेकिन वह अनआफिशियल रिकार्ड है, जिसके मुताबिक दो फसाद पर मन्थ बैठना है लिहाजा मैं अनआफिशियल रिकार्ड वाली बात नही कहता। आप का जो आफिशियल रिकार्ड है, उस के मुताबिक पिछले 7 सालो मे 2465 फसाद हुए है सन् 1969 से ले कर सन् 1976 तक। इस तरह से इन सात सालो मे जो 2465 फसादात हुए, उन का एवरेज निकाले तो 25.61 पर मन्थ जाता है यानी करीब-करीब एक फसाद हर रोज हुआ। यह आप का रिकार्ड है। अब आप बताइए कि वह सरकार बेहतर थी या यह सरकार। कम्युनल और साम्प्रदायिक दृष्टि से आप की सरकार 25.61 एवरेज पर थी और इस एवरेज को हमारी सरकार ने घटा कर 19.8 कर दिया था। यह आपकी सरकार थी कि जितने 20 फीसदी महीने में होते थे, उनको बढ़ा कर 34.47 पर मथ कर दिया। अब

[श्री रशीद मसूद]

आप ही बताएं दोनों सरकारों में कौन-सी अच्छी सरकार है।

डिप्टी स्पीकर साहब, अब मैं आपकी इजाजत से दो तीन पैराग्राफ पढ़ कर सुनाना चाहता हूं 1981 से लेकर 1984 तक जो प्रेजीडेंट के एड्रेस हुए हैं उनमें कोट करना चाहता हूं। ये खेती की पैदावार के मुतल्लिक है। सन् 1981 में आप फरमाते हैं -

"The production of nearly 79.5 million tonnes of foodgrains during kharif was an alltime record. Prospects of the current wheat crops are promising."

लेकिन साल 1982 के बारे में आप फरमाते हैं कि चार फीसदी प्राडक्शन कम हुआ। इसके लिए आप फरमाते हैं कि प्राडक्शन को बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। ये सब इस ढंग से कहा है ताकि हिन्दुस्तान का कम पढ़ा-लिखा इन्सान इन चीजों को समझ न सके। आप फरमाते हैं --

"The outlook for the agricultural production in 1981-82 is encouraging. Preliminary assessment indicates that the kharif foodgrains production might reach an all-time level of 79 95 million tonnes for the year as a whole."

फिर आप प्रोडक्शन की बात नहीं करते, आप फरमाते है कि प्रोक्योरमेंट सब से ज्यादा हुआ। आप लोगों को यह बताना चाहते हैं कि यह सब रिकार्ड टाइम में सब कुछ रिकार्ड हुआ है। आपको रिकार्ड में ज्यादा दिलचस्पी है, आपको इसमें इंट्रेस्ट नहीं है कि मुल्क से गुरबत दूर हो, लोगों को रोजगार मिले, मुल्क से साम्प्रदायिकता गायब हो रिकार्ड का लफ्ज चारों प्रेजीडेंशल एड्रेसिज में है। 1983 में देखिए—

"Despite the problems faced by kharif and rabi, the procurement of rice and wheat was higher than in any previous year."

अगर प्रोडक्शन रिकार्ड नहीं हुआ तो प्रोक्योरमेंट रिकार्ड हुआ। डिप्टी स्पीकर साहब, एक बात बड़े ताज्जुब की है जो कि दुनिया की पार्लियामेंट में नहीं हो सकती। यह मेरे पास किताब है, मैं उससे आपको पढ़ कर सुना सकता हूं दुनिया की पार्लियामेंट में और यहां किस तरह से जवाब दिये जाते हैं। एक ही सवाल के जवाब में सरकार फरमाती है कि फूडग्रेस का रिकार्ड प्रोडक्शन हुआ और फूडग्रेंस का इम्पोर्ट रिकार्ड हुआ। जिस साल में फूडग्रेंस का रिकार्ड प्रोडक्शन हो रहा है, उसी साल में रिकार्ड इम्पोर्ट भी हो रहा है। (**व्यवधान**) हां रिकार्ड प्राईस इंक्रीज भी हो रहा है। किस तरह से लोगों को बेवकूफ बनाया जाता है।

प्रो० मधु दंडवते (राजापुर) : बेवकूफ बनाने में भी रिकार्ड।

श्री रशीद मसूद : हां, बेवकूफ बनाने में भी रिकार्ड है। अब जरा 1984 के एड्रेस से सुनिये—

"Agricultural Production is expected to grow by 9 per cent as against a decline of 4 per cent in the previous year. The production of foodgrains is likely to exceed the target of 142 million tonnes, compared to the actual production of 128.4 million tonnes in 1982-83 and the previous best record of 133.3 million tonnes."

डिप्टी स्पीकर साहब, आपको यह सुन कर ताज्जुब होगा कि जब से हम आजाद हुए है तब से मुल्क में तीन साल ऐसे रहे है जिनमे कि हमने भीख पर जिदगी नही गुजारी है। नही तो हर साल हम बाहर से अनाज मगाते रहे है, कभी गेहूं, कभी चावल। आप बता दीजिए कि इन तीन सालों के अलावा कब आपने बाहर से अनाज नही मंगाया। ये तीन साल थे 1977, 1978 और 1979 के जिन सालों मे हमने बाहर से अनाज नहीं मंगाया, बल्कि बाहर के मुल्को को अनाज भेजा। जब से आपकी सरकार आई तब से क्या आपने गेहूं नही मंगाया ? उसके बाद जो सरकार आई उसने रिकार्ड प्रोडक्शन किया और रिकार्ड इंपोर्ट किया। पर कैपिटा अवेलबिलिटी डाउन जा रही है, अफसोस की बात यह है। समझ में नहीं आता कि कैसे शुरू करूं और कैसे खत्म करूं। दो तीन बातें जरूर कहना चाहता हूं। आज आप किसान को जाकर देखें तो आपको उसकी मुश्किलों का अहसास होगा। किसान को परेशानी होगी तो मजदूर को परेशानी होगी। मजदूर परेशान होगा तो देहात में रहने वाला छोटा दस्तकार परेशान होगा। लेकिन आज किसान की प्राब्लम को कोई देखना नहीं चाहता। हम एग्रीकल्चर प्राइसेस कमीशन के कंपोजीशन के खिलाफ है। उसमे मजदूरो का नुमाइंदा होना चाहिए, किसानो का नुमाइदा होना चाहिए। उन लोगों का नुमाइंदा होना चाहिए जो देश के लिए खाने पहनने की चीजें पैदा करते हैं। लेकिन वह कुछ नहीं होता। चलिए यह भी छोड़िए ताज्जुब की बात तो यह है कि वह भी जो रिकमण्ड करता है उससे घटाकर मंजूर किया जाता है। कभी एक-आध रुपया बढ़ा दिया जब इलेक्शन करीब हो। मैं पूछना चाहता हूं कि यह आप कौन सा इकानामिक्स इन्वाल्व कर रहे है। किस तरफ आप हिन्दुस्तान को ले जा रहे है। जब डेढ़ रुपया किलो प्याज बिक रहा था उस वक्त शर्मा जी ने खुश होकर कहा था कि डेढ़ रुपए किलो प्याज पर हकूमत बदलेंगे। आज ढाई रु० किलो प्याज बिक रहा है। लेकिन आज कोई आगे नही आ रहा प्याज पर हकूमत बदलने। जबकि प्याज असेंशियल नही है, आज तो गेहूं नही मिल रहा है, अनाज नही मिल रहा है।

आपने बडे जोर-शोर से कहा है कि हम देहात में हैल्थ के लिए प्रोग्राम शुरू करेंगे। आज कौन देहात के लोगों को देखने के लिए तैयार है। कौन देहात के लोगो की

फिक्र कर रहा है। जब हमारी सरकार थी, जनता और लोकदल दोनो की सरकार की बात कर रहा हूं, उस वक्त देहात के अंदर हास्पीटल खुले, डाक्टरो को जबरदस्ती भेजा गया था। उस वक्त देहात मे नर्सेस को रखा गया था ताकि देहात के अंदर जच्चा-खाना खुल जाए। आज देहात की बात तो छोड दीजिए वहा तो डाक्टर नही मिलेगा, नर्सेस नही मिलेंगी, देहात मे तो कोई जाने के लिए तैयार नही है, मेरे अपने क्षेत्र के अंदर जितने भी देहात के हास्पीटल है उनके अंदर डाक्टर नही है। अपाइण्टमेंट किया है लेकिन जाते नही हे। हम लिख लिख परेशान हो गए है चीफ मिनिस्टर जवाब तक नही देता है। आज मै यहा बैठे बैठे आपके ऊपर 307 का मुकदमा दायर करा सकता हूं, 200 रुपया खर्च होगा। इनके डाक्टर आज यह काम कर रहे है। देहातो की बात छोड दीजिए, शहरो के अंदर दवाइया नही है। हास्पीटल की दवाइया वहा के कैमिस्ट के यहा बिक रही है, खुलेआम बिक रही है। आप देहात मे हैल्थ का ख्याल रखने का दावा करते है लेकिन शहर के लोगो का ही नही कर पा रहे हैं। यहा डाक्टर है, अस्पताल है, सारी सहूलियते है। ये सरकार देहात के लोगो का क्या ख्याल रखेगी जहा न अस्पताल है, न डाक्टर है, न नर्सेस है, न सहूलियते है। मैं नही समझता कि सरकार का कुछ करने का इरादा है।

जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, हमारे मगल राम प्रेमी जी बैठे है ये बेचारे एक ऐसी जाति मे ताल्लुक रखते है जिसको बदकिस्मती से इज्जत की निगाह से नही देखा जाता, न देखा जा रहा है। और इस सरकार के चलते न देखा जाएगा। इस सरकार के यहा तो बाइज्जत लोगो की जरूरत नही है। यहा तो ऐसे लोगो की जरूरत है जो जाहिल हो, जो गरीबी की रेखा से नीचे हो, जो ये न समझ सकते हो कि इनका प्रपोगंडा क्या है और जो बिना सोचे समझे उनके निशान पर मोहर लगा दे। ऐसे लोगो की इनको जरूरत है। हमारे प्रेमी जी मुस्तकिल इस बात की कोशिश कर रहे है कि सफाई कर्मचारियो को कुछ बेरिाक सहूलियते दी जाए। उनकी दवा वगैरह का ख्याल किया जाए और उनकी फैमिलीज के लिए मकान वगैरह अलाट किए जाएं या कुछ ऐसे तरीके अख्तियारात किए जाए जिससे वे बाइज्जत जिन्दगी गुजार सके। आपका बच्चा तो फौरन ही डी० पी० एस० मे दाखिल हो जाएगा लेकिन उनके बच्चो को म्युनिसिपेलीटी भी लेने के लिए तैयार नही होती है। उन लोगो के लिए आप क्या कर रहे है? आप उनको जाहिल और गुरबत की रेखा से नीचे रखना चाहते है। मैं इन अल्फाज के साथ इस शुक्रिया प्रस्ताव का मुखालफत करता हू जो हमारे एवान के सामने है।

شری رشید مسعود (سہارنپور)

محترم ڈپٹی اسپیکر صاحب۔ میں آج نہ صرف شکریہ کے پرستاؤ کی مخالفت میں کھڑا ہوا ہوں بلکہ میں سمجھتا ہوں کہ آج جو ملک کی حالت ہے۔ اس حالت میں صدر صاحب سے میری یہ درخواست ہونی چاہئے کہ وہ اس سرکار کو فوراً برخواست کر دیں۔ کانگریس کے ۱۹۸۰ء کے الیکشن مینیفسٹو کو دیکھئے۔ پھر ۱۹۸۰ء کے خطبہ صدارت کو دیکھئے۔ ۱۹۸۱ء کے صدارت کے خطبہ کو دیکھئے۔ ۱۹۸۲ء اور ۱۹۸۳ء کو دیکھئے اور پھر ۱۹۸۴ء کے صدر صاحب کے خطبے کو دیکھئے۔ اس میں بہت زیادہ فرق محسوس نہیں ہوتا۔ ۱۹۸۰ء کے صدر صاحب کے خطبہ میں اس سرکار نے وعدہ کیا تھا کہ وہ اس ملک سے بے روزگاری کو دور کر دیگی، اس ملک سے غربت کو دور کر دیگی، کمیونل رائٹس کو دور کر دے گی۔ بڑھتی ہوئی قوتوں کو نہ صرف آگے بڑھنے نہیں دے گی بلکہ اس لیول پر لوٹے گی جو ۱۹۷۱-۷۲ء میں تھی۔

اس نے وعدہ کیا تھا کہ قانون کی حالت اور قانون کی ویوستھا کو اس ملک میں درست کر دے گی۔ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ ان میں کوئی بھی بات پوری نہیں ہوئی اور آج جب ۱۹۸۴ء کا خطبہ صدارت پڑھا جاتا ہے تو یہ محسوس ہوتا ہے کہ ان ساری چیزوں پر سے جن پر زور دیا گیا تھا وہ زور ہٹا کر کے میں نہیں جانتا کیوں اور کس وجہ سے اندرونی بیرونی خطرات کی طرف پوری شدت کے ساتھ زور لگایا جا رہا ہے۔

لوگوں کو یہ بتانے کی کوشش کی جا رہی ہے کہ ملک اندرونی اور بیرونی خطرات سے گھرا ہوا ہے ملک ٹوٹ رہا ہے ملک برباد ہو رہا ہے ملک ختم ہو رہا ہے۔ لہٰذا اس ملک کو بچا سکتی ہے تو صرف کانگریس سرکار اور ہماری پرائم منسٹر صاحبہ۔ میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ ان تمام خطرات کیلئے ذمہ دار کون ہے۔

شعر یاد آتا ہے

"محسوس ہوتا ہے یہ دورِ تباہی ہے
شیشے کی عدالت میں پتھر کی گواہی ہے
دنیا میں کہیں اس کی تمثیل نہیں ملتی
قاتل ہی محافظ ہے قاتل ہی سپاہی ہے"

میں پوچھنا چاہتا ہوں آپ کے ذریعہ کہ آج جو پنجاب میں ہو رہا ہے اس کی ذمہ داری کس پر ہے۔ پنجاب پر زیادہ نہیں بولونگا کیونکہ اس پر آج ڈسکشن ہونے والا ہے۔ آج کشمیر کے اندر آپ نے جو سچویشن پیدا کر دی ہے۔ اس کی ذمہ داری کون ہے۔ کون نہیں جانتا کہ بھنڈرانوالا کا تعلق کس سے رہا ہے۔

۱۹۸۰ء کے الیکشن میں یہ کس کے ایجنٹ تھے - کون نہیں جانتا کہ پروفیسر شیر سنگھ جو ہندو سمتی کے ادھیکش ہیں - ہریانہ میں وہ کس پارٹی سے تعلق رکھتے ہیں - اگر بھنڈران والے نے ۱۹۸۰ء میں ہم لوگوں کی مدد کی ہوتی اور وہ اس توڑ پھوڑ کے ذمہ دار ہوتے تو ہم اپنی ذمہ داری مان لیتے - اگر پروفیسر شیر سنگھ ہماری پارٹی کے ممبر ہوتے اور وہ توڑ پھوڑ کے ذمہ دار ہوتے تو ہم اپنی ذمہ داری مان لیتے لیکن بدقسمتی سے یا خوش قسمتی سے - ملک کی بدقسمتی سے اور ہماری خوش قسمتی سے نہ بھنڈران والے کا ہماری جماعت سے کوئی تعلق رہا ہے نہ وہ ہمارے کسی الیکشن کے کنڈیڈیٹ کے ایجنٹ رہے ہیں اور نہ پروفیسر شیر سنگھ ہماری پارٹی سے کوئی تعلق رکھتے ہیں - پھر یہ کس کی ذمہ داری ہے - (انٹرپشن)

ہمارے ساتھ تو کبھی نہیں تھے آپ کے ساتھ تھے -

آج کشمیر میں کیا ہو رہا ہے - کشمیر کے اندر کون گڑبڑ کرنا چاہتا ہے - ایک طرف فاروق عبداللہ ہیں جس کی ایک تاریخ ہے جس کے باپ کی ایک تاریخ ہے کہ جس نے ہندوستان کے ساتھ الحاق کے لئے مسلسل قربانیاں دی ہیں - جس نے ہندوستان کے ساتھ الحاق کیلئے مستقل جیلیں کاٹی ہیں ایک طرف فاروق عبداللہ ہے جو دن میں اور رات میں اور اجالے میں سامنے اور پوشیدہ طور پر یہ کہتا ہے کہ ہندوستان کے ساتھ کشمیر کا الحاق فائنل ہے - اس کے اوپر کوئی بات نہیں ہو سکتی: ہندوستان کا اٹوٹ حصہ ہے کشمیر - اور دوسری طرف مولوی افتخارالدین صاحب ہیں جو اتفاق سے اسمبلی میں آپ کے صدر ہیں -

کیا آپ کو یاد نہیں ہے سنہ ۱۹۶۸ء میں لال چوک پر تقریر کرتے ہوئے افتخارالدین صاحب نے یہ بات کہی تھی -

کہ پنڈت جواہر لال نہرو کے وعدے کے مطابق ہندوستان کے ساتھ کشمیر کا الحاق فائنل نہیں ہے - میں نہیں سمجھتا کہ وہ آدمی جو دن رات یہ بات کہہ رہا ہو کہ کشمیر ہندوستان کا ایک اٹوٹ حصہ ہے وہ غدار ہے - وہ باغی ہے - وہ سیشنسٹ ہے اور وہ آدمی جو وہ ہندوستان کے ساتھ کشمیر کا الحاق مانتا نہ ہو وہ آدمی جو ملک کے پہلے وزیراعظم کے وعدوں کی یاد دلا کر یہ دکھانے کی کوشش کرتا ہو کہ ہندوستان کے ساتھ کشمیر کا الحاق فائنل نہیں ہے کشمیر ہندوستان کا حصہ نہیں ہے وہ آج

دیش بھگت ہے - کیا آپ کے یہاں دیش
بھگت کا پیمانہ یہ ہے کہ جو کانگریس پارٹی
میں رہ کر اس ملک کے ٹکڑے ٹکڑے کرنے
کی کوشش کرے گا وہ دیش بھگت ہوگا -
اور جو کانگریس پارٹی کے خلاف رہ کر اس
ملک کو جوڑنے کی بات کرے گا جو کانگریس
پارٹی کے خلاف رہ کر اس ملک کے اتحاد
کی بات کرے گا وہ غدار ہوگا -

آپ کی یہی وہ پالیسی ہے جس نے
آج تک ہندوستان میں ہندوستانی کو پیدا
نہیں ہونے دیا - آج آپ کو اس دیش میں
ہندو مل جائے گا مسلمان مل جائے گا سکھ مل جائیگا
عیسائی مل جائے گا، بودھ مل جائے گا دوسرے
لوگ مل جائیں گے لیکن کیا کہیں پر ہندوستانی
بھی ملتا ہے - نہیں ملتا ہے -

اس کے لئے کون ذمہ دار ہے - اس کے
ذمہ دار آپ ہیں - آپ نے یہ کوشش کی
ہوتی کہ ہمیں ہندوستانی میں ایک نیشن بنانی ہے
اس ملک میں ہندوستانیوں کو پیدا کرنا ہے
اور اگر یہاں پر اگر درد شمال میں ہوتا ہو تو وہ
جنوب میں محسوس کیا جائے اگر ہندو کے درد
ہوتا ہو تو مسلمان کو محسوس ہو، ایک
ہریجن کا درد برہمن کو محسوس ہو اور [illegible]
کا درد جاٹ کو محسوس ہو، کسانوں کا درد
انڈسٹریلسٹ کو محسوس ہو - اگر اس بات

کی کوشش آپ نے کی ہوتی تو آج ہندوستان
کا نقشہ ہی مختلف ہوتا - لیکن آپ نے ایسا
نہیں کیا - ۱۹۵۲ء میں جب اس پارلیمنٹ
کا پہلا الیکشن ہوا اس وقت ایک سنہری موقع
تھا ہندوستان کی آزادی تازہ تھی، سو وقت
ہر ہندوستانی کے دل میں ہندوستان کے لئے
محبت تھی، اس وقت ہر دیش واسی اپنے کو
ہندوستانی سمجھتا تھا اور اس وقت ہر ہندوستانی
اس بات کی کوشش کرتا کہ وہ قربانی دے
کرکے اس ملک کی تعمیر کرے - اس ملک کو
ایک بنائے اور اس ملک سے محبت کرے -
کاش اس وقت آپ نے عقل سے کام
لیا ہوتا - کاش، اس وقت آپ نے
اس وقت ایک مسلمان کو ایک ایسی جگہ
سے کھڑا کیا ہوتا جہاں کوئی مسلمان نہیں
ہوتا - وہ مسلمان مکمل طور پر ہندوؤں
کے ووٹوں پر جیت کر یہاں آتا اور ہندوؤں
کے دکھ درد کی بات اس پارلیمنٹ میں
رکھتا -

ایک ہندو کو آپ اس جگہ سے کھڑا
کرتے جہاں مسلمانوں کی تعداد زیادہ
ہوتی تو وہ ہندو اس پارلیمنٹ میں آ کر
مسلمانوں کے دکھ درد کی بات کہتا اور
بتاتا کہ مسلمانوں کو کیا کیا تکلیفیں ہیں
اس طرح سے جہاں پر ہریجنوں کی تعداد

سب سے کم ہوتی وہاں سے آپ ہریجن کو کھڑا کرتے اور وہ ہریجن یہاں ہو برہمنوں کو ریپریزینٹ کرتا اور جہاں پر ہریجنوں کی تعداد زیادہ تھی وہاں وہاں سے آپ برہمن کو کھڑا کرتے یا راجپوت کو کھڑا کرتے - تب اس دیش کے ہریجن راجپوت برہمن اور مسلمان جانتے یہ ہندوستان کیا ہے - جو برہمن ہریجنوں کے ووٹروں پر جیت کر اس پارلیمنٹ میں آتا وہ اگر بتاتا کہ ہریجنوں کو کیا تکلیفیں ہیں - لیکن آپکو تو اپنی کرسی چاہیئے تھی - آپکو ممبر حق نہیں چاہیئے تھے - آپکو تو ایسے لوگ چاہیئیں تھے جو آپ کے کہنے پر ہاتھ اٹھائے آپ کو ایسے لوگ چاہئیں تھے جو آپ کے نام پر زندہ رہتے - ان کو اس بات کا احساس رہتا کہ وہ آپ کے نام پر جیت کر آ رہے ہیں - وہ کوئی پاپولر کام کرکے اچھا کام کرکے ملک میں اتحاد قائم کرنے کے لئے کام کرکے آتے اور ہندوستان میں ایک قوم پیدا کرنے کا کام کرکے اس ایوان میں نہیں آ رہے ہیں بلکہ آپ کے نام پر ہی جیت کر آ رہے ہیں - اس لئے آپکو ضرورت اس بات کی ہی تھی کہ ایسے لوگ آئیں جو کہ آپ کے نام پر ہاتھ اٹھائیں - آپ کے کہنے پر ووٹ دیں - آپ کہنے پر

چلیں اور آپ انکو بھیڑ بکریوں کی طرح سے جیسے بھی چاہیں ہانک دیں - آپ نے اس ملک کے ہندوستانی کو ہندوستانی بننے ہی نہیں دیا - اور آج آپ اپوزیشن پر الزام لگا کر بیٹھ جائیں گے - یہ حق دینا بڑا آسان ہے کہ آج کشمیر میں کیا ہو رہا ہے - وہاں پر ایک الیکٹڈ گورنمنٹ آئی ہے لیکن آپ وہاں پر ہنگامہ کرا رہے ہیں تاکہ اس سرکار کو ڈسمس کر دیا جائے کیونکہ اتفاق سے ڈاکٹر فاروق عبداللہ صاحب کانگریس (آئی) سے نہیں ہیں اور کانگریس (آئی) کی بات سننے کو وہ تیار نہیں ہیں - آپ نہیں چاہتے ہیں مولانا ابوالکلام آزاد جیسا کوئی نیتا مسلمانوں کو ریپریزینٹ کرنے والا پیدا ہو - کیا اسکی بھی ذمہ داری اپوزیشن پر ہے -

دوستوں میں آپ کے ذریعہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ابھی بھی وقت ہے دیر آئے درست آئے -

آپ ہندوستان کے تعمیر کی بات کرو - لیکن افسوس ہوتا ہے جب ہریجن یہاں سے پٹتا ہے - آپ کی پولیس کے ذریعہ آفیسرس کے ذریعہ پٹتا ہے تو اوپر کے لوگ ان آفیسرس کو سپورٹ کرتے ہیں - کانگریس کا ہریجن یہ دی

پٹتا ہے تو ادھر ہم لوگ یہاں سے آواز اٹھاتے ہیں کہ وہ کیوں پٹ رہے ہیں تو کوئی اثر نہیں ہوتا ہے - آپ کو اپنی کرسی پیاری ہے - آپ سمجھتے ہیں کہ اگر ہمیں ہم نے آفیسر کو سزا دیدی تو وہ آفیسر ہم سے کہیں ناراض نہ ہو جائے اور وجہ یہ کہ آپ کو ناجائز فائدے اٹھانے ہیں اس آفیسر سے - آپ کو درد کیوں نہیں ہوتا ہے - جو ہندوستان کی عوام کا ممبر ہے جو پارلیمنٹ کا ممبر ہے - کیا وہ سب ایک نہیں ہیں - پارلیمنٹ کے ممبر کے دکھ درد کو آپ کیوں نہیں سمجھتے ہیں - اس پارلیمنٹ کے اندر ۵۴۴ کے قریب سدسے ہیں اور جب ہندوستان کی اس پارلیمنٹ کے اندر اس طرف بیٹھے ہوئے لوگ یا اس طرف بیٹھے لوگ نہیں سمجھ سکتے ہیں تو میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ وہ ہندوستان کہاں ہے جس کا خواب مہاتما گاندھی نے دیکھا تھا - ہندوستان کو بننے نہیں دیا - یہ آسانی سے کہہ دیا جاتا ہے کہ اپوزیشن والے لوگ اس کو ٹکڑوں میں بدل رہے ہیں - میں نے یہ بات پہلے بھی کہی تھی اور آج بھی کہہ رہا ہوں آپ بتائیے ایسا کون سا موقع دیا ہے جہاں اپوزیشن والوں نے ایک ہو کر سولیوشن تیار کرنے کی کوشش نہیں کی ہے - لیکن ہر میٹنگ کے بعد کہہ دیا جاتا ہے کہ اپوزیشن والے اس کام کو نہیں کرنے دینا چاہتے ہیں -

محترم ڈپٹی اسپیکر صاحب - غریبی کو ہٹانے کا نعرہ سنہ ۱۹۸۰ء میں اس سرکار دوارا دیا گیا تھا - اس سرکار کے ۱۹۸۰ء جولائی کے پرشن کے جواب کے مطابق سنہ ۱۹۸۰ء میں جب یہ سرکار آپ کو دی تھی - اس وقت ملک کے اندر غریبی کی ریکھا سے نیچے رہنے والے لوگوں کی سنکھیا ۴۸٫۱۳ پرسینٹ تھی - اب ۲۸ر جولائی ۱۹۸۲ء پوچھے گئے ایک پرشن کے جواب میں ان کے انوسار بلو پاورٹی لائین لوگوں کی سنکھیا بڑھ کر ۵۶٫۵ پرسینٹ ہو گئی ہے - اس پرکار دو سال کے اندر دس پرتی شت لوگوں کو غریبی کی ریکھا سے نیچے ڈھکیل دیا ہے - یہ آپ کی کون سی اکانومی ہے - کون سا طریقہ ہے ملک کی بے روزگاری کو دور کرنے کا - اب یہ سنکھیا بڑھ کر ۶۷-۶۶ پرسینٹ ہو گئی ہے - یہ افسوس کا مقام ہے اس ملک کو سنہ ۱۹۸۰ء میں یہ کہہ کر کہ لا اینڈ آرڈر کی پرابلم کو دور کریں گے - مہنگائی کو دور کریں گے - بھوکے ننگے لوگوں

کو ردی کپڑا اور مکان دیں گے - بلو پاورٹی لائن سے لوگوں کو اوپر اٹھائیں گے - اس ملک کو اپنے ہاتھ میں لیا ہے - اس وقت بھی ملک کی دو تہائی آبادی غریبی کی ریکھا سے نیچے اپنا جیون ویتیت کر رہی ہے - آپ کے جگمگاتے بڑے بڑے شہر دلی کلکتہ مدراس اور بمبئی جہاں کی روشنیوں سے آدمیوں کی آنکھیں چندھیا جاتی ہیں ان شہروں کے اندر بھی ۳۲ پرتی شت ۴۸ پرتی شت اور ۲۸ پرتی شت لوگ سلموں میں رہ رہے ہیں - جہاں پینے کو پانی نہیں ہے - جہاں رہنے کے لئے مکان نہیں ہے - میں آپ سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا آپ کو اس کا علم نہیں ہے - میں آپ سے پوچھنا چاہتا ہوں آپ نے کتنی جھگیوں کو اب تک ہٹایا ہے - آپ کے زمانہ میں ہر شہر میں سلمس بڑھ رہے ہیں - آپ کے زمانے میں جھگی جھونپڑی میں رہنے والے کی سنکھیا بڑھ رہی ہے - چار سال پہلے جن کو کھانے کو بھر پیٹ مل رہا تھا آپ کے زمانے میں شاید دو تہائی آدمیوں کو بھی بھر پیٹ کھانے کو نہیں مل رہا ہے - پھر بھی ان سب کے لئے ذمہ دار اپوزیشن ہے - اپوزیشن بجٹ بناتی ہے - اپوزیشن اس کو امپلی منٹ کرتی ہے - لا اینڈ آرڈر کی ذمہ داری اپوزیشن کی ہے - یہ سارا کام آپ کا ہے - اگر آپ یہ سمجھتے ہیں کہ ان سب کے لئے ذمہ داری اپوزیشن ہے تو یہ سرکار کس لئے ہے - یہ بات میری سمجھ میں نہیں آتی ہے - لیکن ایک رسم چل رہی ہے - آپ کوئی نہ کوئی بات کئی مرتبہ کہتی ہے جس سے وہ سچ محسوس ہونے لگے آپ سنہ ۱۹۸۰ء سے لیکر ۱۹۸۴ء تک کانفرنس کر رہے ہیں - باہر کے لوگوں کو بلا رہے ہیں - باہر کے لوگوں کو بلا بلا کر دعوتیں دے رہے ہیں - دنیا کا لیڈر بننے کا خواب دیکھ رہے ہیں - دنیا کو لیڈر شپ پرووائڈ کرنے کے بعد بات کر رہے ہیں چاہے اپنے یہاں لوگ مرتے رہے - ان نوٹنکیوں سے اوپر ۴۰۰ کروڑ روپیہ خرچ کیا جا رہا ہے -

ایسے ملک کے اندر جہاں ایک لاکھ تیس ہزار سات ہزار اکسٹھ گاؤں ایسے ہیں جہاں آج تک پینے کا پانی میسر نہیں ہے اس ملک میں ۴۴ سو کروڑ روپئے نوٹنکی پر خرچ کئے جا رہے ہیں - اور بڑے خوش ہو رہے ہیں - کہ ہم دنیا کے لیڈر بن گئے ہیں دنیا کو دکھلا دیا ہے کہ ہم ایک ترقی یافتہ ملک ہیں - یہ کون سی ترقی ہے -

ڈپٹی اسپیکر صاحب - جہاں ہماری بہنیں

اور بیٹیاں پیٹ بھرنے کیلئے عزت بیچتی ہیں۔ وہاں اڑتالیس کروڑ روپئے اڑتالیس گھنٹوں میں گوا میں خرچ کر دیا لوگوں کو پینے کا پانی نہیں ملتا لیکن ہم انکو شراب پلاتے ہیں۔ اس ملک کا عوام آج یہ کہتے ہوئے نظر آتا ہے۔

گل پھینکے ہیں اوروں کیطرف بلکہ ثمر بھی
اے خانہ برانداز چمن کچھ تو ادھر بھی

ہندوستان کی غربت کس کو نظر آتی ہے۔ اس کو کون دیکھنا چاہتا ہے۔ جو دیکھنا چاہتے ہیں وہ اپوزیشن میں بیٹھے ہیں ساری باتوں کی ذمہ داری اپوزیشن پر ہے۔ میں پوچھنا چاہتا ہوں۔ اگر یہ ساری ذمہ داری ہماری ہے تو براہ مہربانی سرکار کو چھوڑیئے ہم اپنی ذمہ داری نبھانے کی کوشش کریں گے۔

میں نے ابھی کہا تھا کہ غربت کی لائن ۱۔۸۴ پرسینٹ سے ۲۶ پرسینٹ پر آ گئی ہے آج ان ایمپلائیڈ کا کیا حال ہے جب ہم نے سرکار چھوڑی تھی اس وقت ایک لاکھ ۲۶ ہزار لوا یجوکیٹڈ ان ایمپلائیڈ رجسٹرڈ تھے۔ لیکن جولائی کے جواب کے مطابق آج دو کروڑ دس لاکھ آدمی ایجوکیٹڈ ان ایمپلائز رجسٹرڈ ہیں۔

آپ یہ سمجھئے گا کہ یہ کل ہندوستان کے بے روزگاروں کی تعداد ہے ہندوستان کی بے روزگاروں کی تعداد تو اس سے کہیں زیادہ ہے۔ اور میرا اندازہ ہے کہ شاید دس بارہ کروڑ ایسے لوگ ہوں گے جن کے پاس کوئی روزگار نہیں ہے۔ یہ تعداد تو رجسٹرڈ لوگوں کی تھی جو لوگ دیہاتوں میں رہتے ہیں ہمارے مزدور بھائی اور دوسرے لوگ وہ کہاں رجسٹر کرائے ہیں دہلی جیسے شہر میں بھی ہزاروں بے روزگار لوگ ہمارے پاس آتے ہیں اور ان سے پوچھتے ہیں کہ کیا آپ کا رجسٹریشن ہو چکا ہے تو وہ کہتے ہیں کہ رجسٹریشن نہیں ہوا ہے۔ اس لئے پڑھے لکھے لوگوں کی صحیح فگر نہیں ہے یہ تعداد کچھ نہیں تو تین کروڑ چار کروڑ کے قریب ہونا چاہئے۔ لیکن اس کے باوجود بھی آپ فرماتے ہیں کہ ہندوستان ترقی کر رہا ہے۔ آگے بڑھ رہا ہے کیا خاک آگے بڑھ رہا ہے۔

ایک اور تماشہ دیکھئے۔ اس ملک کے ۱۹۸۰ء کے خطبہ میں صدر صاحب کے ذریعہ ایک زبردست نعرہ دیا گیا۔ ہندوستان میں سامپردائکتا بڑھ گئی ہے ہندوستان خطرے میں ہے۔ میں ہندوستان کی حفاظت اپنا فرض سمجھتا ہوں۔ ہندوستان کی مائنورٹیز نے ۱۹۷۷ء میں کانگریس

کو ووٹ نہیں دیا اور اس لئے نہیں دیا تھا کہ ان پر ظلم اور زبردستی چل رہی تھی ہریجنوں نے ۱۹۷۷ء میں کانگریس کو ووٹ نہیں دیا اس لئے کہ ان پر ظلم اور زبردستی ہو رہی تھی۔

۱۹۸۰ء کے خطبے میں کہا گیا کہ ہم ہندوستان کی مائنوریٹیز اور دیگر سیکشنس کو پروٹیکشن دیں گے۔ لیکن ووٹ نہ دینے کی سزا ان کو کیا دی گئی۔ ۱۹۸۰ء سے پہلے بھی ہندو مسلم فساد ہوتے تھے۔ ایسا ہو سکتا ہے۔ دو بھائی لڑ سکتے ہیں۔

یہ بات سمجھ میں آ سکتی ہے ہندو ہندو سے لڑ سکتا ہے مسلمان مسلمان سے لڑ سکتا ہے۔ ہریجن ہریجن سے لڑ سکتا ہے۔ اور اس طرح ہندو مسلمان سے لڑ سکتا ہے مسلمان ہندو سے لڑ سکتا ہے۔ یہ سب باتیں ہو سکتی ہیں۔ کیونکہ ہم ہندوستان میں رہتے ہیں۔ ہماری اپنی کوئی لوکل پرابلمس ہیں یا دوسری پرابلمس ہیں لیکن اس کا یہ مطلب نہیں ہے کہ ایک دوسرے سے نفرت کرتے ہیں۔ آپ نے ۱۹۸۰ء میں وعدہ کیا تھا کہ آپ پروٹیکشن دیں گے اور اس میں کوئی شک نہیں کہ آپ نے انکو بچایا اور اس کے لئے ہم آپ کا دھنے واد کرتے ہیں۔ آپ ہندو کو مسلمان کے ظلم سے مسلمان کو ہندو کے ظلم سے ہریجنوں کو دوسروں کے ظلم سے بچایا۔ لیکن اس کے بعد آپکا اپنا ظلم شروع ہو گیا۔ آپ بتائیے ۱۳ر اگست ۱۹۸۰ء مراد آباد میں کون سا ہندو مسلمان کو مارنے کے لئے گیا تھا۔

بتائیے اگر آپ کے پاس کوئی جواب ہے ایک آدمی بھی ہندو نہیں تھا جو مسلمانوں کو مارنے گیا ہو۔ ۱۹۸۰ء میں عید گاہ پر مسلمان اپنے بچوں کو لیکر گئے تھے۔ مسلمانوں کے ایک سو پینسٹھ بچے بوڑھے اور جوان شہید ہو گئے اور اس عید گاہ میں کس کے ذریعہ۔ کیا ہندوؤں کے ذریعہ نہیں وہاں ہندوؤں نے نہیں مارا بلکہ آپ کی جو پولیس ہے۔ اور پی اے سی ہے اس کی گولیوں سے وہ مرے اس کی ذمہ داری اپوزیشن پر ہو گی۔ جو گولیاں آپکی پولس چلائے گی مسلمانوں کو مارنے کیلئے کیا اس کی ذمہ داری بھی اپوزیشن والے اٹھائیں گے۔ کیا جو گولی آپ چلائیں گے ہمارے اوپر اس کی بھی ذمہ داری ہو گی۔ آپکی پولیس اور پی اے سی نے عید گاہ میں مسلمانوں پر گولیاں چلائیں اور وہاں ہندوؤں نے گولی نہیں چلائی یہ آپ نے وہاں مسلمانوں کو پروٹیکشن دیا۔ آپ سزا دینے لگے ان لوگوں کو

ان مسلمانوں کو جنہوں نے آپ کے خلاف ووٹ دینے کی جرأت کی وہ کہنے لگے کہ تم نے ہمارے خلاف ووٹ دینے کی جراءت کیسے کی۔ زر خرید مسلمان کانگریس کو ووٹ دیتا ہے۔ اس کے اندر جرأت کیسے ہوئی کہ کانگریس کے خلاف ووٹ دیا اس لئے آپکو یہ برداشت نہیں ہوا اور آپ نے اسکو گولی کا نشانہ بنا دیا کیا آپ نے ایک آدمی کا بھی ٹرانسفر کیا۔ کیا آپ نے کسی افسر کو سزا دی کیا آپ نے ایک آدمی کا بھی تبادلہ کیا اور کیا آپ نے ایک آدمی کو بلا کر پوچھا کہ ایسا کیوں ہوا۔

سوال یہی ہے۔ اس سے بھی بڑھ کر میرٹھ کے اندر دوبارہ وہی سلسلہ شروع ہو گیا۔ آج میں پھر کہتا ہوں کہ آپ نے میرٹھ کے اندر ایک سامپردائک فضا پیدا کی۔ لیکن اچھی بات یہ ہے کہ ایک مقام پر بھی ہندو اور مسلمان میں مٹھ بھیڑ نہیں ہوئی۔ جہاں بھی ملتا ہے یہی ملتا ہے کہ ہو سکتا ہے کوئی اکا دکا کوئی کیس ہو گیا ہو۔ لیکن آپ کی پولیس اور پی اے سی نے جا کر گولی چلائی اور آپ کے ذریعہ سے میں آپ کو تبا دینا چاہتا ہوں کہ آپ کے زمانے میں کیا ہوا۔ ہندوستان

کو سیکولرزم کی ضرورت ہے۔ اور آپ کہتے ہیں کہ ہم ہندوستان کو آگے بڑھانا چاہتے ہیں۔ اور سامپردائکتا کے جھگڑوں کو ختم کرنا چاہتے ہیں۔ آپ نے ۱۹۸۰ء میں یہ وعدہ کیا تھا کہ دڑھتا اور شکتی کے ساتھ ہم سامپردائکتا کو کچل دیں گے دبانا چاہتے ہیں لیکن ذرا آپ اپنی تصویر دیکھئے۔ جو پندرہ بیس سال کے آپ کے آنکڑے ہیں۔ آپ کے جوابوں کے مطابق وہ میرے پاس ہیں۔ ۱۹۶۷ء میں جارکا سرکار آئی اور ۱۹۶۹ کے دسمبر تک رہی ان تین سالوں کے اندر کل فسادات ہندو مسلمان سات سو بائیس ہوئے اس کو آپ چھتیس سے تقسیم کر دیکھئے کیونکہ تین سال میں ۳۶ مہینے ہوئے۔ ان تین سال کا ایوریج آتا ہے ۱۹٫۴ بھئی آپ اسکو ۲۰ ہی مان لیجئے۔ یعنی ایک مہینہ کے اندر بیس ہندو مسلمانوں کے فساد ہوئے اس سرکار کے اندر جس سرکار میں آر ایس ایس کے لوگ بھی تھے اور بقول آپ کے جس سرکار کے اندر سامپردائک لوگ بیٹھے تھے اس سرکار کے زمانہ میں ایک مہینہ کے اندر بیس فساد ہوئے۔ یعنی ایک دن کے اندر ایک فساد سے کم ہوا۔ اس کے بعد جب

آپ کی سرکار آجاتی ہے سامپردائکتا
ورودھی سرکار اس ملک سے سامپردائکتا
ختم کردینے والی سرکار آجاتی ہے تو
اس کی استھتی کیا ہے - میرے پاس
پندرہ جون ۱۹۸۳ء تک کے آنکڑے
ہیں - آپ کے جواب کے مطابق کل فسادات
کی تعداد ۱۴۸۴ ہے - اسکو آپ ۴۲
سے تقسیم کردیجئے کیونکہ ۴۲ مہینے ساڑھے
تین سال میں ہوتے ہیں ۴۲ سے تقسیم کرنے
پر ایورج آتا ہے ۳۵.۳۳ = ایک مہینہ
کا اور ایک دن کا ایورج ایک سے زیادہ
ہوا - اس طرح سے آپ کی سرکار نے
ایورج کو بیس سے بڑھا کر ۳۵ کردیا -
اور اگر آج کی تاریخ کا ایورج لگایا جائے
اور پنجاب کے جھگڑوں کو اس میں جوڑا
جائے میں تو صرف ان جھگڑوں کے بارے
میں بتا رہا ہوں جن میں آپ کے ظلم شامل
ہیں تو ایورج ۷۵ سے اوپر جاکر بیٹھے
گا اس طرح سے آپ نے اس ملک کو تباہ
کردیا اور سامپردائکتا کو ختم کرنے کے
بجائے اسکو بڑھا دیا -

آپ نے ملک کو توڑنے کی سازش
کی ہے - اور میں نہیں سمجھتا کہ آپ نے
سوچ کیا رکھا ہے -

شاید آپ نے بھی وہی سوچ رکھا
ہے جو کہ انگریزوں کی سرکار نے سوچا تھا کہ
لڑاؤ اور راج کرو اور سمجھتا ہوں کہ آپ
اس سے بھی آگے بڑھ گئے ہیں -

آپ اپنے پچھلے ریکارڈ کو بھی سن لیں
کیونکہ اپنے جواب میں شاید آپ یہ کہیں
کہ ہمارا پچھلا ریکارڈ بہت اچھا تھا - مجھے
آپ کا ۱۹۶۹ء سے لیکر ۱۹۷۶ء تک کا
ریکارڈ ملا ہے - اور آپ کے جو جوابات
ہیں اس کے پہلے کا ریکارڈ بھی میرے پاس
ہے - لیکن وہ ان آفیشل ریکارڈ ہے -
جسکے مطابق وہ فساد پر منتہہ بیٹھتا ہے
لہٰذا میں ان آفیشل ریکارڈ والی بات
نہیں کہتا - آپ کا جو ان آفیشل ریکارڈ
ہے اس کے مطابق پچھلے سات سالوں
میں ۲۴۶۵ فساد ہوئے ہیں - ۱۹۶۹ء
سے لیکر ۱۹۷۶ء تک اس طرح سے ان
سات سالوں میں جو ۲۴۶۵ فسادات
ہوئے اونکا اوریج نکالیں تو ۲۵،۶۱
پر منتہہ آتا ہے - یعنی قریب ایک فساد ہر
روز ہوا یہ آپکا ریکارڈ ہے اب آپ
بتائیے کہ وہ سرکار بہتر تھی یا یہ سرکار
کمیونل اور سامپردائکتا درشٹی سے آپکی
سرکار ۲۵،۶۱ ایوروج پر تھی اور اس
ایورج کو دیکھتے ہوئے ہماری سرکار گھٹا کر
۱۹۷۵ کو دیا تھا -

یہ آپکی سرکار تھی کہ جس نے بیس فیصدی مہینے میں ہوتے تھے انکو بڑھا کر ۴۴ ۴۳ پرسنتیہ کر دیا۔ اب آپ ہی بتلائیں دونوں سرکاروں میں کون سی اچھی سرکار ہے۔

ڈپٹی اسپیکر صاحب - اب میں آپ کی اجازت سے دو تین پیراگراف پڑھ کر سنانا چاہتا ہوں۔ ۱۹۸۰ء سے لیکر ۱۹۸۴ء تک پریزیڈنٹ کے ایڈریس ہوئے ہیں ان سے کوٹ کرنا چاہتا ہوں۔ یہ کھیتی کی پیداوار کے متعلق ہے۔ ۱۹۸۱ء آپ فرماتے ہیں

"The outlook for the agricultural production in 1981-82 is encouraging. Preliminary assessment indicates that the kharif foodgrains production might reach an all-time level of 79.95 million tonnes for the year as a whole.

پھر آپ پروڈکشن کی بات نہیں کرتے آپ فرماتے ہیں کہ پروکیورمینٹ سب سے زیادہ ہوا۔ آپ لوگوں کو یہ بتانا چاہتے ہیں کہ یہ سب ریکارڈ ٹائم میں سب کچھ ریکارڈ ہوا ہے - آپکو ریکارڈ میں زیادہ دلچسپی ہے - آپکو اس میں انٹرسٹ نہیں ہے کہ ملک سے غربت دور ہو - لوگوں کو روزگار ملے ملک سے بیروزگاری غائب ہو - ریکارڈ کا ریکارڈ پریزیڈینشل ایڈریس میں ہے - ۱۹۸۳ء میں دیکھئے -

The production of nearly 97.5 million tonnes of foodgrains during kharif was an all-time record. Prospects of the current wheat crops are promising."

لیکن سال ۱۹۸۳ء کے بارے میں آپ فرماتے ہیں کہ ۴ فیصدی پروڈکشن کم ہوا اس کے لئے آپ فرماتے ہیں کہ پروڈکشن بڑھانے کی کوشش کی جا رہی ہے -

یہ سب آپنے اس ڈھنگ سے کہا ہے تاکہ ہندوستان کا کم پڑھا لکھا انسان ان چیزوں کو نہ سمجھ سکے -

آپ فرماتے ہیں -

وہ اگر پروڈکشن ریکارڈ نہیں ہوا تو پروکیورمینٹ ریکارڈ ہوا۔

ڈپٹی اسپیکر صاحب

ایک بات بڑے تعجب کی ہے جو کہ دنیا کی پارلیمنٹ میں نہیں ہو سکتی۔ میرے پاس کتاب ہے میں اس سے آپ کو پڑھ کر سنا سکتا ہوں کہ دنیا کی پارلیمنٹ میں اور یہاں کس طرح سے جواب دیئے جاتے ہیں۔ ایک سوال کے جواب میں سرکار فرماتی ہے کہ فوڈ گرینس کا ریکارڈ پروڈکشن ہوا اور فوڈ گرینس کا امپورٹ ریکارڈ ہوا جس سال میں فوڈ گرینس کا ریکارڈ پروڈکشن ہو رہا تھا اس سال میں ریکارڈ امپورٹ بھی ہو رہا ہے۔

(انٹرپشنز)

ہاں ریکارڈ پرائس انکریز بھی ہو رہا ہے۔ کس طرح سے لوگوں کو بیوقوف بنایا جاتا ہے۔

پروفیسر مدھو دنڈاوتے

بیوقوف بنانے میں بھی ریکارڈ۔

شری رشید مسعود :-

ہاں بیوقوف بنانے میں بھی ریکارڈ ہے۔ آپ ذرا ۱۹۸۴ء کے ایڈریس سے سنئے۔

"Agricultural production is expected to grow by 9 per cent as against a decline of 4 per cent in the previous year. The production of foodgrains is likely to exceed the target of 142 million tonnes, compared to the actually production of 128.4 million tonnes in 1982-83 and the previous best record of 133.3 millions tonnes."

ڈپٹی اسپیکر صاحب۔ آپ کو یہ سنکر تعجب ہوگا کہ جب سے ہم آزاد ہوئے ہیں جب سے ملک میں تین سال اچھے رہے ہیں جن میں کہ ہم نے بھیک پر زندگی نہیں گذاری ہے۔ نہیں تو ہر سال ہم باہر سے اناج منگاتے رہے ہیں کبھی گیہوں کبھی چاول۔ آپ بتا دیجئے کہ ان تین سالوں کے علاوہ کب آپنے باہر سے اناج نہیں منگایا۔ یہ تین سال تھے ۱۹۷۷، ۱۹۷۸ اور ۱۹۷۹ء کے جن سالوں میں ہم نے باہر سے اناج نہیں منگوایا بلکہ باہر کے ملکوں کو اناج بھیجا۔ جب سے آپ کی سرکار آئی جب سے کیا آپ نے گیہوں نہیں منگایا۔

اس کے بعد جو سرکار آئی اس لئے

اس کے بعد جو سرکار آئی اس نے ریکارڈ پروڈکشن کیا اور ریکارڈ امپورٹ کیا - پرکیپٹا اویلیبلٹی ڈاؤن رہی ہے - افسوس کی بات یہ ہے - سمجھ میں نہیں آتا کہ کیسے شروع کروں اور کیسے ختم کروں دو تین باتیں ضرور کہنا چاہتا ہوں - آج آپ کسان کو جاکر دیکھیں تو آپکو اسکی مشکلوں کا احساس ہوگا - کسان کو پریشانی ہوگی تو مزدور کو پریشانی ہوگی - مزدور پریشان ہوگا تو دیہات میں رہنے والا چھوٹا دستکار پریشان ہوگا - لیکن آج کسان کی پرابلم کوئی دیکھنا نہیں چاہتا ہم ایگریکلچرل پرائسز کمیشن کے کمپوزیشن کے خلاف ہیں - اس میں مزدور کا نمائندہ ہونا چاہیئے - کسانوں کا نمائندہ ہونا چاہیئے - ان لوگوں کا نمائندہ ہونا چاہیئے جو دیش کے لئے کھانے پینے کی چیزیں پیدا کرتے ہیں لیکن یہ کچھ نہیں ہوتا - چلئے یہ بھی چھوڑیئے - تعجب کی بات تو یہ ہے کہ وہ بھی جو ریکارڈ ریکمینڈ کرتا ہے اسکو گھٹا کر منظور کیا جاتا ہے - کبھی ایک آدھ روپیہ بڑھا دیا جب الیکشن قریب ہو - میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ یہ آپ کون سا اکانومک الوالو کر رہے ہیں - کس طرف آپ ہندوستان کو لے جا رہے ہیں - جب ڈیڑھ روپے کلو پیاز بک رہی تھی اس وقت شرما جی نے خوش ہو کر کہا تھا کہ ڈیڑھ روپے کلو پیاز پر حکومت بدلیں گے -

آج ۲½ روپے کلو پیاز بک رہا ہے لیکن آج کوئی آگے نہیں آرہا ہے - پیاز پر حکومت بدلنے جبکہ پیاز اسپیشل نہیں ہے آج تو گیہوں نہیں مل رہا ہے اناج نہیں مل رہا ہے - آپ نے بڑے زور شور سے کہا ہے کہ ہم دیہات میں ہیلتھ کیلئے پروگرام شروع کریں گے آج کون دیہات کے لوگوں کو دیکھنے کے لئے تیار ہے - کون دیہات کے لوگوں کی فکر کر رہا ہے - جب ہماری سرکار کی جنتا اور لوک دل دونوں کی سرکار کی بات کر رہا ہوں اس وقت دیہات کے اندر ہسپتال کھلے - ڈاکٹروں کو زبردستی بھیجا گیا تھا - اس وقت دیہات میں نرسز کو رکھا گیا تھا تاکہ دیہات کے اندر زچہ خانہ کھل جائے - آج دیہات کی بات تو چھوڑ دیجئے - وہاں تو ڈاکٹر نہیں ملے گا - نرسز نہیں ملے گیں - دیہات میں تو کوئی جانے کیلئے تیار نہیں ہے - میں اپنے چھتر کے اندر جتنے بھی ہسپتال ہیں ان کے اندر ڈاکٹر نہیں ہیں - اپوائنٹمنٹ کیا ہے لیکن جاتے نہیں ہیں - ہم لکھ لکھ کر پریشان ہو گئے ہیں -

چھوٹا منسٹر جواب تک نہیں دیتا ہے۔ آج میں
یہاں بیٹھے بیٹھے آپ کے اوپر ۲۰۰ کا تقرر
دائر کرا سکتا ہوں۔ دو سو روپیہ خرچ ہوگا
ان کے ڈاکٹر آج یہ کام کر رہے ہیں۔ یہاتوں
کی بات چھوڑ دیجئے اون کے اندر دوائیاں
نہیں ہیں۔ ہسپتال کی دوائیاں وہاں کے
کیمسٹ کے یہاں بک رہی ہیں۔ کھلے عام بک
رہی ہیں۔ آپ دیہات میں ہیلتھ کا خیال
رکھنے کا دعوہ کرتے ہیں لیکن شہر کے لوگوں
کو ہی نہیں کر پا رہے ہیں یہاں ڈاکٹر ہیں
ہسپتال ہیں۔ ساری سہولتیں ہیں۔ یہ سرکار
دیہات کے لوگوں کا کیا خیال رکھے گی جہاں
نہ ہسپتال ہے نہ ڈاکٹر ہیں نہ نرسز ہیں نہ
سہولتیں ہیں۔ میں نہیں سمجھتا کہ سرکار کا
کچھ کرنے کا ارادہ ہے۔

جناب ڈپٹی اسپیکر صاحب۔ ہمارے
منگل رام پرمی جو بیٹھے ہیں۔ یہ بیچارے
ایک ایسی جاتی سے تعلق رکھتے ہیں۔ جسکو
بدقسمتی سے عزت کی نگاہ سے نہیں دیکھا
جاتا۔ نہ دیکھا جا رہا ہے اور سرکار کے
چلتے نہ دیکھا جائے گا۔ اس سرکار کے یہاں
تو بے عزت لوگوں کی ضرورت نہیں ہے
یہاں تو ایسے لوگوں کی ضرورت ہے جو جاہل
ہوں۔ جو غریبوں کی ریکھا سے نیچے ہوں
جو یہ نہ سمجھ سکتے ہوں کہ انکا پروپیگنڈہ
کیا ہے اور جو بنا سوچے سمجھے ان کے نشان
پر مہر لگا دیں۔ ایسے لوگوں کی انکو ضرورت
ہے۔ ہمارے پریمی جی مستقل اس بات کی
کوشش کر رہے ہیں۔ صفائی کرمچاریوں
کو بنیادی سہولتیں دی جائیں۔ ان کی دوا
وغیرہ کا خیال کیا جائے اور ان کی فیملیز کیلئے
مکان وغیرہ الاٹ کئے جائیں۔ یا کچھ ایسے
طریقے اختیار کئے جائیں جس سے وہ باعزت
زندگی گزار سکیں۔ آپ کا بچہ تو فوراً
ہی ڈی۔ پی۔ ایس میں داخل ہو جائے گا
لیکن ان کے بچوں کو میونسپلٹی بھی لینے کو
تیار نہیں ہوتی ہے۔ ان لوگوں کے لئے
کیا کر رہے ہیں۔ آپ ان کو جاہل اور
غربت کی ریکھا سے نیچے رکھنا چاہتے ہیں
میں ان الفاظ کے ساتھ اس شکریہ پرستاؤ
کی مخالفت کرتا ہوں جو ہمارے ایوان
کے سامنے ہے۔

ختم شد

SHRI D.P. YADAV (Monghyr) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I was listening to the speech of hon. Member Shri Rasheed Masood and I felt that his speech was like a speech given on the occasion of the discussion of Demands for Grants of the Ministry of Home Affairs, Ministry of Agriculture, Ministry of Health and other Ministries.

श्री रशीद मसूद : यादव साहब, मैंने जो कुछ भी कहा है, पवाइन्ट-वाइज ही कहा है। मैं, प्रेजीडेन्ट एड्रेस से बाहर नहीं गया हूं।

شری رشید مسعود : یادو صاحب میں نے جو کچھ بھی کہا ہے، پوائنٹ وائز ہی کہا ہے۔ میں پریذیڈنٹ ایڈریس سے باہر نہیں گیا ہوں۔

SHRI D.P. YADAV : In the life of a country there are some occasions when we should feel happy and proud. It is not as if that we should express despondency, we should express frustration and we should be on record for all time to come that this great country has done nothing for the teaming millions. Definitely there have been developments, we have made strides and progress in various fields, of which our country and the leadership and the people at large should boast. When Shri Rasheed Masood was speaking, it looked as if we had done nothing I will just pick out one paragraph from the President's Address, Paragraph 12 The hon. President has mentioned something in Paragraph 12 Will Shri Rasheed Masood deny what the hon. President has said in that paragraph ? He is sitting by the side of a professor of physics, Prof. Madhu Dandavate. At least Prof. Madhu Dandavate will bear me out that what the President has said in Paragraph 12 is cent per cent correct, it is a cent per cent factual statement. What have we done in the year 1983-84 ? Take the case of science and technology. Is the progress not remarkable ? The progress is definitely tremendous for which both Shri Rasheed Masood and myself should feel proud. Take the case of Indian space science. When we look at the chronology of development of Indian space science in the last two decades, that is in the decades 1970 80 and 1980-90, definitely there has been a tremendous progress. There was a time when we had just been hearing about satellites. I will trace the history of this very subject, how progressively we have developed.

India has taken major strides over the past two decades in the development and application of space technology and space science for the socio economic benefit of the nation. Various facilities have been created and a whole range of capabilities development, The expression is 'a whole range of capabilities'. It is not a case of despondency. We have developed a whole range of capabilities in the field of space science.

As a result of this, India can now plan, build and test satellites for scientific experiments as well as for practical applications such as earth observations and telecommunications. All these things have been combined. We start with ARYABHATA of 1975. What was Aryabhata ? It was a very small satellite which we envisaged, designed and fabricated. What was the purpose of Aryabhata ? The first indigenously and fabricated satellite was launched by us and we had to depend for its launching on USSR. We took their help, but we designed and fabricated it. What was the purpose ? This was a technology test setellite which also carried instruments for conducting scientific experiments. After that came Bhaskara I in 1979. Bhaskara I satellite was designed and fabricated by our scientists for the purpose of earth observations and it carried a microwave radiometer and a television camera system on board....

MR. DEPUTY SPEAKER : In 1979 they were in power.

SHRI D.P. YADAV : Yes, Sir, but the seed was sown in 1971 when Indira Gandhi was the Prime Minister. This Bhaskara I which we launched in 1979 was primarily a remote-sensing satellite.

SHRI RASHEED MASOOD : It does not concern the common man.

PROF. MADHU DANDAVATE: He is trying to tell you how people below the poverty line are sent to outer space.

SHRI D.P. YADAV: No. I will come to that—where the satellite is needed for eliminating the poverty line.

Launching at that time was also done by the USSR. Then there has been progress and there have been developments and we put Bhaskara II in space in 1981. Bhaskara II was a modified and improved version of Bhaskara I and was meant for earth observation. Launching at that time was also done by the USSR. Then came APPLE. It was the first experimental three axis stabilised communication satellite. For launching this satellite we used the European Space Agency. So it means that for the purpose of launching only we had to depend on others. But we made our own satellites. Then came the Rohini. In the President's speech Rohini had been mentioned. What is this Rohini satellite? This satellite was placed in a near earth orbit on 17th April 1983. This speaks volumes of the progressive development of space science in India. Rohini was entirely designed and fabricated and launched by Indian space scientists for the benefit of space to Indian people. Are we not getting benefit from the space? Yes. Even the carbon di-oxide which is available in space is used by the nature as well as by our scientific laboratories for the betterment of human being.

Then came the Insat-I. In Insat I there was some improvement. The design was ours. The fabrication was ours. Three major national services telecommunication, metereology and developmental television—all these three were combined....

MR. DEPUTY SPEAKER: The best users of this are sitting here.

SHRI D. P. YADAV: This was launched by a spacecraft which was procured from abroad. At that time we imported only the spacecraft. But far how long should we depend on foreign agencies for launching? Now it was entirely indeed an effort of our scientists that we have devised our own space launching vehicle also and Insat 1B was successfully launched on 30th August 1983 by our own vehicle. Is it a small achievement? This achievement of launching a satellite by our own vehicle, is a remarkable and tremendous achievements in the field of Science and Technology and I hope Prof. Madhu Dandavate would bear with me. (*Interruptions*). Our scientists need to be congratulationed. But compliments should be paid to the person who envisaged the idea of harnessing the space for the betterment of Indian people and the person is none else but Smt Indira Gandhi. Since October 15, 1983, INSAT-1 B has been serving as our Master Centre in space for the purpose of telecommunication, television, radio and meteorology programme.

From the satellite to the launching vehicle SLV-3, we have come to a stage where we are happy and are proud. But, Sir, what is the purpose of this? We have in our mind the perspective of scientific planning and we shall use these satellites for the purpose of remote sensing. The future of remote sensing is wellknown to the coming generation. We shall have to harness our whole scientific manpower and deploy it for the advancement of our Science and Technology, mineral development, water etc., etc. Sir, the Indian Remote Sensing Satellite System will cater to our resource-management requirements on agriculture, water management, forestry, certain aspects of mineral geology and so on.

Sir, we are not going to sit back. We have to go ahead. Science is not static. Science is dynamic. Science is progressive. We have to march forward and we have to keep pace with those who claim to be the most advanced in the world forum and we hope that a time will come when we shall be ranked equal or, we can say, not less than equal with any of the scientifically advanced nations who claim to be the leaders in the

field of space technology. Sir, we have a plan for launch vehicle We have developed the capability to launch small scientific satellites into near-earth orbits. Rohini RS-I (35 KG) and Rohini RS-D-I (38 KG) were launched by the Indian SLV-3 launch vehicle in 1980 and 1981 respectively. More powerful launch vehicles are to be developed during this decade This will include the Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV) which will have a capability of launching 1000 kg class satellites into sun-synchronous polar orbits. In parallel, the Augmented Satellite Launch Vehicle (ASLV) is being developed to launch 150 KG class satellites for scientific and technological purposes.

Now, Sir, the other part of the President's address says that "the first unit of the Madras Atomic Power Station, which was designed and fabricated indigenously, attained criticality on July 2, 1983, and has been operating at power levels up to 200 M.W."

What we read looks very simple. But, when we analyse it, it is very heartening. We are happy. Why ? I would like to explain.

When Jawahar Lal Nehru thought of nuclear science, many people outside the Indian territory said that Jawahar Lal Nehru was planning a nuclear war. He is envisaging an atomic war and that is why he is developing and creating the atomic power at the disposal of this country. No, Sir. In our scientific policy resolution and in our atomic power resolution we have very clearly said that India will develop nuclear science for the benefit of mankind and not for the destruction of human race.

Sir, we thought that the countries from whom we take help in the sphere of Nuclear Science shall be friendly and the help given shall be without strings. We expected that they will treat us on equal footing. But unfortunately those powers who were a bit advanced in the field of Nuclear Science thought that we should entirely depend on their technology and remain under their tulelage.

The President has mentioned in his speech about the commissioning of Madras Atomic Power Station People say what is special about this ? Yes, there is a speciality and the speciality is of total self-reliance in the field of atomic power generation. Our scientists have developed the capability of designing, fabricating fuel processing and feeding and commissioning of the reactor. We are self-reliant in the production of atomic fuel and heavy water, the principal component of atomic power production unit. From now onwards the situation is changed. Canada and USA wanted to dictate terms and put an embargo on atomic fuel. We had no alternative but to depend on our own resources—the resources of nuclear technology manpower. We have achieved this. We are committed to peaceful use of atomic science in the field of power generation, agriculture, radio isotopes, radiation medicine, biology and bio-chemistry, food preservation and metallurgy. The credit of perspective planning and use of atomic energy for the welfare of human being has been the plank of our political philosophy—and the political philosopher is none else but Shrimati Indira Gandhi

Now, sometimes a scare is created in this country that the border is threatened. Our space is threatened Sir, I hope Professor Dandavate will share the view that time has come when we can claim that the order is fully protected. How this border is well protected. Not because we only talk in Parliament but from this Parliament we empower our scientists and ask them to develop the technology and science for the betterment of our Defence forces and for the betterment of our defence weapon technology.

We are proud of our defence scientists. India's capability in designing and fabrication of weapons like 130 mm and 105 mm self propelled gun is remarkable. Production of sonars, radars, and major weapon system and our capability in electronic sophisticated weapon is an indi-

[Shri D.P. Yadav]

cator that the border is safe and sky is free. Now things are ready. Inputs are ready. Yes, poverty is there. I also represent a constituency and the same type of constituency is represented by Shri Rasheed Masood. I don't deny the fact that there is poverty, but then there is a difference of poverty of today and that of poverty of 1946. There has been a marked difference as of today We can fight among ourselves. We can change the Government Before that, we could not do that. We must, on this occassion, thank our great leader, Pandit Jawaharlal Nehru, who framed the scientific policy of this country. We had great scientists like Dr. Bhatnagar, who created the CSIR Laboratories in this country. We had Dr. Homi J. Bhabha We had Dr. C V. Raman. We had Dr. Sarabhai.

PROF. MADHU DANDAVATE : Don't include Prime Minister in that.

SHRI D. P. YADAV : I will include you there at least.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMUNICATIONS (SHRI V N. GADGIL) : That is what he is asking

SHRI D.P. YADAV : Let us include Prof. Madhu Dandavate, in this galaxy of scientists.

Can we deny, saying that there has been no expansion? No. There has been a significant expansion in the whole educational system. Around 1,60,000 quallfied scientists and technologists are produced every year. The present Indian scientific and technical manpower stock is estimated at 2.5 million. We rank third in this field on the world scene. With 130 specialised laboratories and institutions set up under the aegies of Indian Council of Agricultural Research, Council of Scientific and Industrial Research, Indian Council of Medical Research, the Directorate of Atomic Energy, the various Defence Science Laboratories etc. About these achievements we all feel proud and happy. Let all of us join in congratulating our scientists, due to whose efforts we are self-sufficient, capable and self-reliant.

On this occasion we must thank the President for the speech to both Houses of Parliament and we are obliged to him for the address.

MR. DEPUTY SPEAKER : It is a rare kind of speech in the Parliament today which I like. This should be recorded in the Parliament.

PROF. MADHU DANDAVATE : He talked only about the assets, Sir.

MR. DEPUTY SPEAKER : I am not going into it. It is a rare kind of speeh. This kind of speech should be there and should be recorded.

Now, Mr. Negi.

श्री टी० एस० नेगी (टिहरी गढ़वाल) : उपाध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी जब अपना अभिभाषण पढ़ रहे थे तो मैं गौर से उनको देख रहा था और उस समय राष्ट्रपति का चेहरा ऐसा लग रहा था कि वे जबरदस्ती इस भाषण को पढ़ रहे है। यह अभिभाषण उनके गले से उतर नहीं रहा था। बीच-बीच में उन्होंने पानी पिया तो मैंने सोचा कि पानी से इसको नीचे उतार रहे है। इस अभिभाषण को पढ़ने में उनको दिक्कत आ रही थी। इस किस्म का यह भाषण था।

एक बात के लिए मैं जरूर बधाई दूंगा लेकिन वह साइंटिस्ट्स को, सरकार को नहीं क्योंकि साइंटिस्ट्स के साथ सरकार का जो व्यवहार है उसकी तो भर्त्सना ही की जा सकती है। सबसे पहले इसमें इस बात का जिक्र किया गया है कि देश में पैदावार बढ़ी है। पैदावार बढ़ रही है, कीमतें भी बढ़

रही है, विदेशों से गल्ला भी मंगाया जा रहा है और वह भी बढ़ोत्तरी पर है। पैदावार के साथ-साथ इस देश में भुखमरी भी बढ रही है। अन्न की कमी भी होती जा रही है। सस्ते गल्ले की दुकानों पर उपलब्ध नहीं है। यह सारी बातें साथ-साथ चल रही है। वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक सरकार 700 करोड़ के आयल सीड बाहर से मंगवाती है और आगे 10 सालों में तीन चार हजार करोड़ रुपए का आयात करना शुरू देगी। इस सिलसिले में सरकार ने क्या व्यवस्था की है, यह बताने की कृपा करें। गेहूं और चावल विदेशों से मंगाया जा रहा है, लेकिन यहा सरकारी गोदामों में गल्ला सड रहा है। उसको चूहे खा रहे है, छोटे-बडे सभी चूहे लगे हुए है। उसकी सुरक्षा यह सरकार नही कर सकती। मैं पूछना चाहता हूं कि यह गल्ला क्यों बाहर से मंगाया जा रहा है? इसका साफ कारण यह है कि इनको कमीशन चाहिए। यह कमीशन की सरकार है। यदि आप देश की उन्नति चाहते है तो सबसे पहले बाहर से सामान मगाना बद करिए। जनता पार्टी के जमाने में तो यह सामग्री बाहर से नही मंगायी गयी, उस वक्त कोई भूखा नही मरा, सब चीजे यहां पर उपलब्ध थीं। लोगों का कहना है कि जनता के जमाने में जितनी सस्ती चीनी खायी, वह अब कभी वह मिलने वाली नहीं है। उस समय 6.50 रु० किलो तेल था और अब पहाडों में 25-30 रु० किलो तेल मिल रहा है। केरोसिन आयल आठ रु० प्रति लीटर तक पहुंच गया है। कहा जाता है कि दूध की पैदावार दुगनी हो हो गई है, लेकिन पता नही कहां है दूध तक लोगों को नहीं मिल पा रहा है पैदावार बढ रही है, फिर भी लोगों को खाने तक को नही मिल रहा है। सरकारी गल्लों की दुकानों पर गल्ला लोगों को नहीं मिल पा रहा है। इन सब चीजों के बारे में आपको देखना चाहिए। रेडियो और टेलीविजन पर सब बाते सुनने को मिलती है, लेकिन असलियत यह है कि लोग भूखे मर रहे है। गरीबी की रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। इस बारे में सरकार ने क्या कदम उठाया है, सरकार को बताना चाहिए।

पंजाब, काश्मीर और असम के बारे मे यहां चर्चा होती है, लेकिन श्रीमान्! सबसे ज्यादा चर्चा यहां जम्मू और काश्मीर की की जाती है। अप्रैल तक जम्मू-कश्मीर के मुख्य मंत्री बहुत अच्छे थे, लेकिन अब बिल्कुल खराब हो गए है, निकम्मे हो गए है। उनकी सरकार इस देश की सरकार नही रही। नार्थ-ईस्ट में सरकार नाम की कोई व्यवस्था है ही नही। सी० आर० पी० एफ० और बी० एस० एफ० के जवानो के कत्ल हो रहे है, लेकिन सरकार उन को नहीं बचा पा रही है। वहां के भूतपूर्व मुख्य मंत्री का कत्ल हो गया, मगर सरकार कुछ नही कर सकी। आज भी असम की समस्या लटकी हुई है। असम की समस्या को नही सुलझा पा रहे है। नार्थ ईस्ट के चीफ मिनिस्टरो को यहा नही बुलाया जाता है,

13 58 hrs.

[SHRI N. K. SHEJWALKAR *in the Chair*]

फारूख साहब को बुला रहे है जिनके खानदान ने देश की आजादी के लिए संघर्ष किया है. उनको परेशान कर रहे है सिक्किम में चीफ मिनिस्टर और गवर्नर की लडाई चल रही है, उनका कोई फैसला नहीं होता है। यह सरकार निर्णय लेने में सक्षम नहीं है, यह बात भी हिन्दुस्तान के लोग मानने

[श्री टी० एस० नेगी]
लगे है। पंजाब और हरियाणा मे एक नया ताडव शुरू हो गया है। पानी के झगडे को तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्रियों ने तय कर लिया इसलिए कि वहा गैर कांग्रेसी सरकारें है लेकिन पंजाब और हरियाणा की सरकारें इसको तय नही कर सकते है। आपस मे इसका फैसला नही कर सकते है। इसका कारण यह है कि लीडरशिप निकम्मी है या पंजाब के झगडे को सुलझाना नही चाहती। इसके लिए कांग्रेस सरकार जिम्मेदार है। पंजाब में लगी आग हरियाणा मे तो फैल रही है अब यह महाराष्ट्र मे भी पहुचने वाली है। आप चाहते है कि हिन्दुस्तान मे गडबड रहे।

14.00 hrs

हम तो यहा तक कह सकते है कि पाकिस्तानियो या विदेशियो के हमले का भय दिखाया जा रहा है, हमारे ऊपर आक्रमण करेंगे और हो सकता है—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जो लीडरशिप है वह 10-15 दिनों का लडाई का फ्रैंडली मैच कर ले क्योंकि दोनों की हालत अपने-अपने मुल्क मे खराब होती जा रही है, उन के तले जमीन खिसक रही है, किसी भी फ्रन्ट पर उन को सफलता नही मिली है। इस लिये इसी दिशा मे बाते कर के वे सारी दुनिया और यहां के लोगो का ध्यान दूसरी तरफ ले जाना चाहते है। यह इन की साजिश है और इसी के आधार पर ये लोग काम कर रहे है।

पिछले दिनो कानून मे एक बडा भारी परिवर्तन किया गया—पहाडो पर कल्टीवेटेड लैंड खुद काश्त के अलावा जितनी जमीन है सब सरकार की हो गई, जगलात विभाग की हो गई। जो ग्राम सभा की जमीन थी, वह भी उन की नही रही। लोग अगर स्कूल बनाना चाहता है, पंचायत घर बनाना चाहते है या सडक बनाना चाहते है तो नही बना सकते। आज सडक बनाने का काम बंद है, बिजली की लाइन जाने का काम बन्द है, पीने के पानी के नल नही जा सकते है, सिंचाई की नहर नही जा सकती है, लेकिन इन के पैसे सब से लिये जा रहे है, जब कि पीने को पानी भी नही मिल रहा। आज पहाडो की यह हालत हो गई है और यह सरकार उस कानून को बदलने के लिए तैयार नही है क्योकि जो लोग यहा बैठते है, टेबिल पर बैठ कर कागजी कार्यवाही मे माहिर है, इदिरा जी को अपने तरीके दिखा कर वाह-वाही लूटते है, रेडियो और टेलिविजन पर प्रचार हो जाता है अखबारो मे खबरे छप जाती है। मैं एक घटना आप के सामने रखता हूं—पिछले दिनो "नर-प्रयाग" मे गोली-काण्ड हुआ, उन जाति के लोग मारे गए, घायल हुए, बहुत बडी बदतमीजी की, वहा की जनता ने एन्कवायरी कमीशन की मांग की और कहा कि हाई कोर्ट के जज से जाच कराई जाय, लेकिन अभी तक यह निश्चय नही किया है कि जांच कब हो। ऐसी स्थिति मे हमारे जो दूर-दूर क्षेत्र है उन की समस्याये दिन प्रति दिन बिकट होती जा रही है और जिस ढंग से उन की समस्याओ को सोचना और समझना चाहिए यह सरकार उस तरह से करने से इंकार करती है।

भ्रष्टाचार को देखिए—हर जगह भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्टाचार का पोषण यह सरकार खुद करवा रही है, इस के नेता करवा रहे है। इन्होने कर्मचारियो

और अफसरों को भ्रष्ट कर दिया है ताकि उन की जुबान बंद रहे, वे कुछ न बोलें और जो धांधलीबाजी सरकार करती है, वह चलती रहे। अगर ऐसा नहीं है तो सरकार बताये कि जिन आई० ए० एस० अफसरों को सी० बी० आई० की एन्क्वायरी के बाद दोषी पाया गया, उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही क्यों नहीं हो रही है? मैं इन के कारनामों का चिट्ठा आप के सामने पेश कर रहा हूं। सरकारी पक्ष ये विरोधी दलों को कहता है कि सहयोग नहीं देते। हम ने किस बात में यह सहयोग नहीं दिया कोई एक बात पिन-प्वाइंट कर के बता दीजिए, तब हम समझेंगे कि विरोधी दलों ने फलां काम ठीक नहीं किया।

चुनाव आयोग के सम्बन्ध में विरोधी दलों ने एक राय से कुछ प्रपोजल्स दिये थे लेकिन उन पर अमल किया जा रहा है, चुनाव कानून में कोई परिवर्तन नहीं किया जा रहा है, उन के बारे में गवर्नमेंट बिल्कुल खामोश है। न्यायालयों के सम्बन्ध में विरोधी दलों ने कहा कि आप न्यायालयों के मामलों में इंटरफीयर न करें, जुडीशियरी को इंडीपेन्डेंट रहने दें, लेकिन जजों की ट्रांस्फर, प्रमोशन, सब कुछ सरकार कर रही है। मैं अभी हाल में क्षेत्र घूम कर आया हूं आज यह कहा जा रहा है कि जुडीशियरी भी वर्स्ट करप्शन वाली हो गई है, जो पैसा देगा वह मुकद्दमा जीत जायगा। यह आज आपकी जुडीशियरी की हालत है

सातवें प्लान के बारे में बहुगुणा जी ने पत्र लिखा था—कि सरकार सातवां प्लान बना रही है, देश के सामने बेरोजगारी की तथा अन्य समस्यायें हैं इस लिये यह प्लान बनाते समय विरोधी दलों, देश के बुद्धि-जीवियों और विद्वानों की राय ली जाय ताकि एक अच्छा प्लान बन सके। लेकिन यह सरकार ऐसा करने के लिये तैयार नहीं है। इन का कहना है कि जब प्लान बन जायगा, तब पार्लियामेंट के कन्फिडेंस को लिया जायगा और उस वक्त—हाथ खड़े हो जायेंगे और प्लान पास हो जायगा। मैं समझता हूं कि प्लान गलत आंकड़ों के आधार पर बन रहा है। 20 सूत्री कार्यक्रम का किस्सा चल रहा है जहां भी मैं घूमता हूं और क्षेत्रों में देखता हूं, तो पाता हूं कि काम नहीं हो रहा। पांच-पांच हजार रुपये लोगों को दे रहे हैं और इस तरह से बैंकों में लोगों की जो पूंजी जमा है, उस को लूटने-खसोटने का काम हो रहा है वह रुपया सरकारी पक्ष अपने कार्यकर्ताओं को दे रहे हैं। आप ही बताइए कि 5 हजार रुपये में कोई क्या करेगा और कौन सी ऐसी इंडस्ट्री है, जो पांच हजार रु० में लग जाएगी और देश की तरक्की हो जाएगी। चुनाव आ रहे हैं, इसलिए 5-5 हजार रुपया लोगों को दिया जा रहा है जोकि वापस होने वाला नहीं है और डिपोजिटर्स का जो यह रुपया है, उस की लूटमार हो रही है। यह लुटेरों की सरकार है।

अब मैं अस्पतालों की बात कहता हूं। गांवों में जो अस्पताल हैं उसमें डाक्टर नहीं हैं दवाइयों का तो कहना ही क्या। दवाइयां तो शहरों के अस्पतालों में भी लोगों को नहीं मिलती हैं और सब बिक जाती हैं। 50-60 प्रतिशत अस्पताल ऐसे हैं, जहां पर कोई डाक्टर नहीं है, कर्मचारी है और बिल्डिंग भी नहीं है। जब ऐसी स्थिति है, तो फिर लोगों के स्वास्थ्य की परवाह कैसे हो रही है। आप इस से अन्दाजा लगा सकते हैं।

[श्री टी० एस० नेगी]

शिक्षा के बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि दोहरी शिक्षा चल रही है। बड़े लोगों के लिए अलग शिक्षा है और छोटे लोगों के लिए अलग शिक्षा। बड़े लोगों के जो लडके है, उन पर बडे लोग एक एक, दो दो और डेढ़ डेढ़ हजार रुपया महीना खर्च कर रहे है और उन के लिए रहने-सहने और पढाई का अच्छा प्रबंध है जबकि गरीब लोगों के बच्चों के लिए न मेज है और न कुर्सी यहा तक कि टाट-पट्टी भी नही है। जब इस तरह की उन के लिए पढाई की व्यवस्था है तब कैसे वे उन लडको के साथ कम्पीट कर सकेंगे और कैसे तरक्की कर सकेंगे। कहा जाता है कि शिक्षा ठीक नही है। जब ऐसी बात है तो शिक्षा की नीति को आप बदलें और शिक्षा ऐसी हो, जिस से लोगों को दो-चार साल पढ़ाई के बाद रोजगार मिल जाए और रोजगार मिलने का सिलसिला बढे। इस मामले में सरकार फेल रही है।

सरकारी पक्ष के लोग कहते है कि सब चीजें बढ़ रही है। मैं मानता हू कि पैदावार बढ रही है लेकिन इस के साथ ही साथ आप यह देखिए कि भ्रष्टाचार भी बढ रहा है, गुंडागर्दी भी बढ रही है, चोरी-डकैतियां बढ़ रही है और लूट खसोट बढ रही है। सारी गलत चीजे आज मुल्क मे बढ रही है। कांग्रेस के राज में कोई अच्छी बात नही बढ रही है। अगर कोई अच्छी बात बढ़ रही है, वह मुझे बता दें, मैं मान लूंगा। जहां कहीं हम जाते है, वहां यही चर्चा लोग करते है कि यह क्या गवर्नमेंट है, यह क्या सरकार है, जो हम को सुरक्षा नहीं दे सकती। अभी हम ने देखा कि यहा के एक संसद सदस्य ने कहा कि उनके साथ पुलिस व कांग्रेसी मारपीट कर रहे है और मैं तो यह कहूंगा कि चोरी-डकैती के जो काम हैं, उन में ये लोग भी इनवोल्वड है। इस देश की स्थिति को खराब करने के लिए कांग्रेस सरकार जिम्मेवार है। सन् 1977 के बाद जो इन लोगों ने किया, मैं देहरादून की बात बताता हूं। स्वर्गीय संजय गाधी वहां थे। उन्होने वहां लडको से कहा कि तुम नकारा हो। लडकों ने वहां गडबड भी की और मुकदमा चला। वहां पर यह कहा गया कि तुम को न्यायालय को जला देना चाहिए और वहा न्यायालय के रिकार्ड को फाड कर ले गये। तो इस तरह की परपरा वहा पर डाली गई और इस तरह की बात अपोजीशन वाले भी करते तो पता नही क्या हो जाता। सरकारी पक्ष ने जो असामाजिक तत्व थे, उन को ग्राम प्रधान बना दिया और उत्तर प्रदेश मे 100 से ज्यादा ऐसे असामाजिक तत्व है जो एम० एल० ए० और मिनिस्टर के बन गये है। जब ऐसी स्थिति है, तो किस ढग से ला एण्ड आर्डर ठीक होगा। जब गलत आदमी रखे जाएंगे, तो व्यवस्था ठीक नही रहेगी। मैं बता रहा हू कि गलत आदमियो को वहा रखा हुआ है और आप इस की इक्वायरी कर लो। वहां पर विधान परिषद के एक सदस्य ने इस्तीफा दे दिया और इसके बारे मे अखबार में भी आया है सब ने उस के बारे मे पढा होगा। उन्होने कहा है कि सरकार मे असामाजिक तत्वो का बोलबाला है हम ऐसी स्थिति में इस कांग्रेस में नही रह सकते। कांग्रेस से इस्तीफा दे कर वे अलग हो गये। यह परम्परा चल रही है और ला एण्ड आर्डर की स्थिति बहुत खराब हो गई है।

इसी तरह से आई० एम० एफ० से जो लोन लिया गया, तो उस ने यह शर्त लगाई कि खाद्य पदार्थों के दाम बढ़ाओ। इस तरह खाद्य पदार्थों के दाम बढ़ाये जा रहे

हैं और रेलों के किराये भी बढे हैं। गाड़ियों के भाड़े और दूसरी सारी वस्तुओं के दाम सरकार ने स्वयं बढ़ाये। कुछ दिनों पहले आपने कोयले के 25 प्रतिशत दाम बढ़ा दिये। आप मंहगाई बढ़ा रहे हैं, भ्रष्टाचार बढ़ा रहे हैं। आपके यहां गुंडागर्दी बढ़ रही है।

जब सारे मुल्क की ला एण्ड आर्डर की व्यवस्था खराब हो रही हो तो उसकी जिम्मेदारी किस की है। क्या वह जिम्मेदारी सरकार की नहीं है ? क्या सरकार इस जिम्मेदारी से बच सकती है ?

पंजाब की समस्या के बारे में विरोधी दल के लोगों ने एक राय से आपको कहा था कि त्रिपारटाईट बैठक करो समस्या का हल निकालो लेकिन आप चुप बैठे हुए है। क्यों नहीं सरकार भिंडरावाले को वहां स्वर्ण मंदिर से निकालती है, क्यों नही दूसरे लोगो को वहां से बाहर निकालती है जो कि गलत काम कर रहे है ?

इन सारे आपके असफल कामो के लिए बधाई देने की बजाए आप गद्दी छोड़ें, रिजाइन करें तभी इस मुल्क का उत्थान हो सकता है।

SHRI A. K. SEN (Calcutta North West) : Mr. Chairman, Sir. I rise to support the Motion of Thanks on the President's Address. We are gratefull that the President has drawn attention of the House and through the House of the entire country to the great problems facing us. We are also gratefull that he has indicated the way to solve those problems. It will not be an excessive statement if one would like to emphasise the evil character of the various divisive forces which have been raised by persons who have no motive excepting to destroy the fabric of the nation as also to destroy everything which has been built up ever since Independence. Let us come, first of all, to the divisive forces which have been raising their heads all over the country, from Jammu & Kashmir then to Punjab and across the Indo-gangetic plains, to Assam and to other parts of the country. What is the necessity for these movements which have been initiated by these forces ? What earthly idealism is there behind these movements?

Look at the problems in the Punjab. We have been ever since our young days, nurtured with the great ideals of Guru Govind Singh, the sacrifices which have been rendered by the great Sikh community in the past as also of the leaders like Banda and others. I remember as a child I used to get enthused by the poems of Dr. Tagore on the life of Guru Govind Singh and Banda. I will try if I can translate one of those great poems; and those were the poems which raised national instinct of the people. If I may translate one of those poems inio English it will be like this. On the death of Banda—you know after Guru Govind Singh, the leadership fell on his discipline, Banda; who was captured by Farooq Shah forces in Gurdaspur and was brought in chains to Delhi; and he was, first of all, asked to kill his own son, which he did; and the son died shouting Guruji-ke-jai; and then he stabbed himself to death; and before that, an hangman came and took out his flush bit by bit with a pair of hot spincers; and on that a greatpoem was written by Dr. Tagore. He said, *on the banks of the 5 rivers* have risen the great people; he does not say, sikhs; they have rent the sky with their shouts of Guruji-ke-jai; and the entire Punjab has been electrified by one mantra and that is; "Alak Niranjan"; and he said that when these shouts came and reached the cars of Farooq Shah in Delhi, he sent his cruel forces to capture the leader Banda. He was brought like a lion in a cage, bound in irons hand and feet, and then he was brought to Delhi, where he was condemned to death. And before he was put to death he was asked to kill his own son, a young boy, when Banda knelt down and sang into the ears of that young child, the *Mantra* of the Guru and

[Shri A.K. Sen]

said, "My child, do not be afraid of death. Just take the name of Guruji before you die" And that is what he did.

These are the great episodes which rouse the Indian national fervour of the country in olden days, and then the sikhs and the Hindus, all fought together the *Gadars*. Bhagat Singh and other martyrs of the Azad Hind forces, who laid their lives for the liberty of our people and for the freedom of the country. And their blood, when it flowed over the great plains of India, in Jalianwala Bagh, in Andamans and Lahore and all over the country—their blood did not look different at all. The Sikh blood and the Hindu blood mingled together on which flowered the seeds of Indian freedom and today when I find that these two communities are being made to fight each other, that Hindus are being killed simply because they are Hindus and Sikhs are being attacked simply because they are Sikhs, our hearts are completely destroyed. Sometimes we seem to lose all our hopes but the finest hour is the hour when we overcome all our difficulties. And this will be our finest hour.

When during the civil war in America in 1870 as you will remember, in 1865 the two parts of the United States were fighting each other in a civil war, one of the great battles which was fought was at Gettysberg. It still remains there, a memorial to freedom and democracy. In the battle of Gettysberg the Northern Forces won. But the carnage and the slaughter was extreme. Thousands died in that battle, both of the Northern forces and also of the Southern forces. And after the battle, President Lincoln went there to deliver his famous Gettysberg Speech. It is said by a biographer that he never knew what he used to say; but on the last day in the train he wrote on his pad the famous speech which today ranks as one of the finest gems of English literature. I refer to this incident because we seem to have come almost to the brink of a disaster, from which America was recovered with the great leadership of Lincoln and others. And Lincoln was supposed to commemorate the Battle of Gettysberg to those who had died and fought for the freedom of the country and for its integrity. These were his great words. He said,

> "Four scores of years ago our forefathers brought on this land a democracy dedicated to the ideal that all men are born free and that all of them enjoy the great rights of humanity."

He said that. Today we are faced with a peril which threatens the very basis of that structure and this war will prove whether the democracy established by our forefathers, a democracy for the people, by the people and of the people, would survive or not. That is the test that is before us today.

Will the great fabric of our socialist democratic society established on the floor of this House in the Central Hall on the 26th of January 1950, survive, when our great leader Pandit Jawaharlal Nehru said that,

> "Today we have fulfilled our tryst with destiny which years ago we had started with."

And he said : Many years will pass before we reach our goal, but today is the beginning of that march to destiny. 33 years have passed since that night when the Constitution was accepted by our people granting to them a great democratic State and guaranteeing to them the fundamental rights which enlivened and enlightened their lives. During these 33 years great progress has been achieved in every field—in science and technology, in arts, in education, in nation building, in every field of human activity. And a colonial country that we were has now become the leader of the non-aligned world. And a country which never produced even a screw which had to be imported before independence from outside, has now sent the INSAT to the

heavans. Our space ships are cruising across the skies. Our ships are playing over the oceans. Our motor cars and engines particularly trucks are being exported outside. Therefore, progress there has been. Buit the forces of disintegration. have also marched forward. It is our test of statesmenship, dedication, nationhood, our loyalty to our ideals and our country which is now put to the ultimate acid test. We must prove that we are ready and we are to overcome these divisive forces. At this state of our nation what has been achieved with blood and tears and this strength of the country and of our nationhood which have been achieved under the great leaders of past, they are there not to perish but to survive for all times to come, And we must pledge todav that we shall not allow this state of our nation to perish and we shall overcome all the obstacles that lie in their way. It may be a long time before we achieve the final results but that we shall achieve the final results I have not the least doubt about it. This House must declare to the entire nation that this nation is determined to put down all divisive forces and all the forces of disintegration and that this nation shall not perish.

I remember the great speach of Churchill when in Dunkrik their allies suffered a great defeat and the British forces had come back to England. England was left without any arms whatsover. France had succumed and surrendered to Germany. Only England remained and everybody thought that possibly England would extend the hand also of surrender. But then came a great leader who said : This is our finest hour for the great crisis which has overwhelmed us, must be resolved by our sweat and blood. We shall fight on the beaches; we shall fight on the streets; we shall fight in every park; we shall fight in every house, but fight we shall and win we shall. Let that be our motto that we will fight everywhere against shese forces which are conspiring to destory our nationhood and to destroy. everything, our value and utility that we have built up all these years. This, therefore, must be the lesson that this House must send forth without any equivocation to the whole nation.

I am glad that the President has underlined that in the midst of these forces of disintegration and the violence which has fallen, the majority of the people have remined calm and sobre. Only a handful are trying to destroy what the majority wants to build. He has very pointedly said that we are all glad, and if I may read from that part of the President's speach, he has said :

> "It is however heart warming that the majority of the people, irrespective of the community to which they belong, have refused to be misled by the sinister propaganda of hate let loose."

A few Hindus have died, a few Sikhs possibly have died. Who has been the aggressor it is not for us dow to judge. Whether the Sikhs first let loose this compaign of hatred and violence or there are others also in the game or not, it is not for us to judge because I always hear that what can the poor Haryanvis do? When they found that the Hindus were being slaughtered, just because they are Hindus across the border, they get inflamed. They should not get inflomed. I do not get inflmed. I am a Hindu. I never consider the Sikhs outside our great Hindu folk because the Hindu folks have impressed the Jains the Sikhs and others every religion that has sprung from the soil of India—the Budhists, the Jains, the Sikhs and other great religions. We have always been a great amalgam of ideas A great poet Dr. Tagore said that into this country has flowed streams of humanity. Pathans have come, Mughals have come, Dravids have come, the Aryans have come, the Huns have come and others have come but they have all merged into this great sea of humanity called Bharatvarsh. This is a great sea of humanity and I call it the pilorimade of man. Therefore this has been the sea of humanity. Years ago, when I went to see for the first time the caves of Ajanta, one thing impressed me immediately and that was this that side by side over the countries the Buddhists have built their caves, the Jains have built their caves next to it, the Hindus have bullt their caves next to it and they have

[Shri A.K. Sen]

all existed side by side over the cenruries. They still exist there singing the glory of unified India, of the great culture of India which has been enriched by every stream of humanity which has flown into it. When I went to Kerala I went to the Synagogue of the Jews in Cochin. The Rabbi there proudly displayed to me. I was then the Minister incharge of endowments also so I made it a point to see all the religious places whether they are of the Hindus, Muslims, Christians or of the Jews. The Rabbi came and showed to me the copper grant by which in the sixteenth century the then Maharaja of Cochin gave them the land free to build their Synagogue opposite the Hindu temple of the Maharaja himself It still exists their Whoever goes to Cochin he will not fail to notice that Maharaja gave the land to build the Synagogue of the Jews next to the Maharaja's ancestral temple in which they worshipped for generations. That copper grant is in Sanskrit because Cochin and Trivandrum are great centres of Sanskrit learning. As I happened to read Sanskrit I will translate to you what that copper grant said. It said: Our Friends from the West have been driven into our shores by the storms of hatred. Because these were the days of inquisition in Spain the first lot of Jews who came to India came from Spain driven by the inquisition programme in Spain let loose by the Catholic fenatics and they all came by ship. This grant says : They have been driven into our shores by the fury of passion and hatred. It is my duty which I owe to my ancestors and to my God whom I worship everyday, that we give succour and help and shelter to these unfortunate men who have come to us without any blame to be attached to them. He gave them land and the Synagogue was built on that land and it is still there. Dozens of mosques have been built on free land give by the Maharaja of Cochin and Trivandrum, and they still exist today rent free. Hindu Kings have given free lands for building mosques to Muslims And the same thing with the Sikhs. Maharaja Ranjit Singh did the same thing He kept Hindu places of worship and Muslim places of worship near the places of worship of the Sikhs. The best of Maharaja Ranjit Singh's advisers were Hindus. Every Hindu family of Punjab used to have at least one man, possibly the eldest son in the family, who is to be given to the Sikh community. So, he grew his beard and long hair and put his turban. So, the eldest son always became the Sikh. Intermarriages between the Sikhs and the Hindus was the most common thing.

It is a curious irony of fate that these two communities have been made to fight. We must see that this does not happen in the country. Let us crush that, not merely by force, but by the might idealism which has been handed over to us by Mahatma Gandhi, Pandit Jawaharlal Nehru and other great leaders, the leaders of the Hindus, Sikhs and Muslims, who are all great leaders of India as a whole. There are no Hindu leader, Muslim leader or Sikh leader; they are all Indian leaders of the past.

Therefore, I raise my voice very strongly, with great expectation and with great temerity also, that these forces of violence must be completly destroyed, and I have no doubt that they will be destroyed very soon.

Coming to the other poinets, to which reference has been made by the President, he has referred to the great progress which has been achieved in the field of agriculture. It is now a matter of universal acknowledgement that the Indian green revolution has been one of the wonders of the third world. I remember I want in 1965 to the United States on my way back from Latin America. After the Pakistani conflict in 1965, Prime Minister, Shri Lal Bahadur Shastri, had sent me there to Latin America to explain our standpoint. I remember I went to the United States and I saw there some of the imported Ministers and officials. All of them tried to impress upon me that we are so poor in agriculture. They said : what is the point in continuing this PL 480, unless you develop your own agriculture, how can you

feed your own people and all your plans are bound to go as under.

Now that lie has completely been nailed. We have not only shown to the whole world how magnificently our agricultural sector can revive and can expand, but we have also set an example for the entire third world and even the Chinest Government have now expressed their great admiration for the progress achieved in the agricultural sector. The only thing that I can suggest is that we must take lessons from collectivisation by the formation of co-operatives of agriculture, because fragmented holdings can never sustain advance in agriculture. Therefore, we must organise our agriculturists into co-operatives so that they can jointly carry on mechanised agriculture, advanced agriculture, which will further hasten the growth of our agricultural sector.

At one time, I remember it was said by one of the agriculturists in the Planning Commission—I think he belonged to the opposition party; he is in the opposition now - that have if 2 per cent advance in agriculture is achieved, he will be very happy. Between 1982 and 1983 the advance has been of the order of 9 point something It is really unthinkable and it is really significant compared to anywhere in the world.

Therefore, Sir, I hope that the Government, in deference to what the expectation of the President is—and I take it that it is the expectation of the Government also—will organise our agricultural sector into large-scale cooperatives so that the fragmented holdings can become unified holdings with people working together, sharing together according to their respective holdings and yet making the foundation for modern and mechanised agriculture.

Now, I come to the question of industry. When the Britishers were here, this country was considered to be mainly an agricultural economy. I remember, when Sir Jamshed Ji Tata first conceived the idea of establishing a steel factory in Jamshedpur for manufacturing steel in India, the then Chariman of the Railways, an Englishman, said: 'Steel in India'.. I would rather like to bite it and see whether it is steel or not." It is on record. It is in history. He said:, I will rather bite it and see whether it is steel or not. He thought this country would not be able to produce steel. And today our steel factories are not only modern, but they produce the finest steel and that our progress in this field is magnificent. A country which produced not even a screw before Independence has sant INSAT into the space. Thanks to be leadership of the Prime Minister, the entire momentum of scientific and technological advacne has been put into new motion and gear. And we have sent our ships to the Antarctica for the purpose of further exploration. Sir, most of our ships moving in the ocean are the ones which have been manufactured in our own shipyards. Our engins have found markets outside the country and our industry today ranks very high in the list of the industrial nations. I think we rank eighth today in the list of industrial nations. During the British days we were a poor agricultural country and it was said that people here are born in debts, they live in debts and that they die in debts. That was the concept of Indian agriculturists before Independence. Today he is a proud Indian who would wield his mechanical plough whether hand driven or tractor driven, he employs modern techniques of agriculture and in industry our workers are considered to be the finest in the world; their still is equal to the best in the world and their deft hands are regarded as excellent everywhere in the world.

Therefore, I am very happy to acknowledge the gratefulness to the President for referring to the great grogress achieved by the nation under the stewardship of the present Government and our leader. Shrimati Indira Gandhi. We hope that they will live long to guide the nation for further and better prospects and that we shall be able to travel very far after overcoming the forces of disruption and violence which seem to threaten us for the moment; but overcome we must, beat

[Shri A.K. Sen]

we must these forces of and destroy we must these forces of disintegration and build once again on the foundations laid by our great leaders of the past, the fabric for the future, our citadel for the future so that we shall be proud and our children will be proud to think that 'we were the architects who destroyed the forces of disruption for all times to come. Thank you very much.

श्री सूरज भान (अम्बाला) : सभापति महोदय, नेशनल डेमोक्रेटिक एलायेंस की तरफ से राष्ट्रपति के अभिभाषण का हम ने नाम काट दिया था ...(**व्यवधान**)... मैं कुछ और कह रहा हूं, पहले सुन लीजिए। उस से हमारा मतलब उन का कोई अनादर करना नहीं था। अपनी पोजीशन हम ने राष्ट्रपति जी के पास जा कर एक्सप्लेन भी की उनको बताया। उस के बाद जब उनके भाषण की कापी लोक सभा में रखी गई उस वक्त हम ने अपनी बात कहने की कोशिश की लेकिन कह नही पाये। आज मैं कहना चाहता हूं और कांस्टीच्यूशनल आबजेक्शन रखना चाहता हूं, मैं आप से उस पर रूलिंग चाहूंगा। आर्टिकल 87 के पार्ट 2 के मुताबिक हम इस को डिस्कस कर रहे हैं। लेकिन आर्टिकल 87 का पार्ट टू तो तभी आएगा जब पहले पार्ट बन आए।

Article 87(1) says :

"At the commencement of (the first session after each general election to the House of the People and at the commencement of the first session of each year) the President shall address both Houses of Parliament assembled together and inform Parliament of the causes of its summons."

The President shall inform Parliament of the causes of its summons.

यह जो प्रेसीडेंशियल एड्रेस है इसको मैं ने पांच बार पढ़ा है। इसमें मैं समझता हूं राष्ट्रपति जी ने एक भी रीजन नहीं दिया है कि क्यों वे पार्लियामेंट को बुला रहे हैं। इस सम्बन्ध में मैं सभापति महोदय, आपकी व्यवस्था चाहता हूं हालांकि यह एड्रेस टेबल पर ले हो चुका है और डिस्कशन भी आरम्भ हो गया है।

SHRI RAM PYARE PANIKA (Robertsganj): I think that the hon Member is confused.

(Interruptions)

SHRI SURAJ BHAN : Sir, the discussion should be stopped because it is unconstitutional. It does not fulfil the constitutional requirement.

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN : What is the point of order ?

SHRI SURAJ BHAN : It does not fulfil the constitutional requirement.

MR. CHAIRMAN : But you know, on any constitutional matter the Chair cannot give a ruling. As you know, the convention is that on such matters the House decides, not the Chair.

SHRI SURAJ BHAN : Sir, it is a constitutional obligation.

MR. CHAIRMAN : Whatever it is, the legal position of the Constitution.........

SHRI SURAJ BHAN : I have read the Constitutional provision. Not even a single sentence, not even a word has been mentioned in the Presidential Address as to why this Session has been called for.

MR. CHAIRMAN : No, no. It is not necessary. If they want...

(*Interruptions*)

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY (Calcutta South) : Sir, this is important because he has raised a point. Whether you uphold it or not, he has raised a point. Until unless that is cleared, how the debate can proceed.

MR. CHAIRMAN : In a way what I say is that now actually it is another question whether it is the proper time or not...

(*Interruptions*)

SHRI SURAJ BHAN : It should be stopped. That is what I mean to say. This is unconstitutional (*Interruptions*). This should be stopped.

SHRI NARAYAN CHOUBEY (Midnapore) : Do you want time for consultation ?

SHRI SURAJ BHAN : This is not the time for consultation.

MR. CHAIRMAN : Whose consultation ?

SHRI SURAJ BHAN : We can discuss it afterwards.

MR. CHAIRMAN : If they want to give any reply to this, it is another thing. But the whole point is that question cannot be decided by the Chair, it has to be put to the House.

SHRI SURAJ BHAN : Who else will decide it ?

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : There is a convention, my friend, You just see...

SHRI SURAJ BHAN : Sir, I am quoting the constitutional provision. No convention is required here.

MR. CHAIRMAN : I think it is very clear and by now you must have known that any point of order where any question of law or Constitution is involved, it is not to be decided by the Chair's ruling, it is to be decided by the House. This is precisely the position.

SHRI SURAJ BHAN : Let this be decided by the House, I do not mind. If this is the position, let it be decided by the House. Let it be decided once again.

MR. CHAIRMAN : If you insist upon that, I will have to put it to the House.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : No, Sir. It has been raised in the House...

(*Interruptions*)

श्री सूरजभान : आप हाउस की ओपीनियन ले लीजिए।

श्रम और पुनर्वास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री धर्मवीर) : माननीय सभापति महोदय, माननीय सदस्य जिन्होंने व्यवस्था का प्रश्न उठाया है, मैं समझता हूं उन्होंने महामहिम राष्ट्रपति जी का अभिभाषण ठीक से पढ़ा नहीं है।

श्री सूरजभान : पांच बार पढ़ा है।

श्री धर्मवीर : राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण के प्रारम्भ में ही फर्माया है :

> "It gives me pleasure to welcome you to this first Session in 1984 and to extend you my best wishes for the successful completion of the budgetary and legislative business ahead."

THE PRIME MINISTER (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : It is very clear.

SHRI DHARMAVIR : This is very clear.

राष्ट्रपति जी ने इसलिए ससद् को आहूत किया है कि बजट और जो भी अन्य संवैधानिक कार्य है उनका संपादन हो सके।

SHRIMATI INDIRA GANDHI : I suggest we continue with the debate.

MR. CHAIRMAN : I thing if he agrees.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : Whether he agrees or not we have to continue

(Interruptions)

SHRI DHARMAVIR : It is very clear in the first part of his speech.

(Interruptions)

PROF. RUP CHAND PAL (Hoogly) : For the time being, let us proceed

श्री सूरजभान : सभापति महोदय, बजट सेशन में आम तौर पर देश के लोगों का ध्यान इस बात पर रहता है कि कौन सा टैक्स लगेगा, कितनी महगाई और बढ़ेगी लेकिन आज बदकिस्मती की बात है कि लोगो का ध्यान उस तरफ बहुत कम है या बिल्कुल ही नहीं है। लोग तो यह सोच रहे है कि यह देश बचेगा या नहीं। आज पंजाब में जो कुछ हो रहा है उसकी वजह से बजट की तरफ किसी का ध्यान नहीं है। हर रोज अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि दस मारे गए, पांच मारे गए या दो मारे गए—और कितने मारे जायेंगे, इसका कोई हिसाब-किताब नहीं है। आदरणीय राष्ट्रपति जी ने भी अपने अभिभाषण में इसका जिक्र किया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि दिया जल रहा हो या मोमबत्ती जल रही हो, उसको फूंक मार कर बुझाया जा सकता है, लेकिन आग अगर भड़की हुई हो, तो फूक मारे से वह बुझती नही है और बढ़ जाती है। आज पंजाब में दिया या मोमबत्ती बुझाने की बात नही है, आग बहुत हद तक बढ़ चुकी है। हरियाणा भी उसकी लपेट में आ चुका है। मुल्क का कौन सा हिस्सा कब उसकी लपेट में आ जाएगा, उसका कुछ पता नही है। इसलिए भाषणों से उसकी आग नही बुझायी जा सकती है, और कुछ और सख्त कदम उठाने पड़ेगे। यह मैं कहने के लिए मजबूर हूं कि दिल्ली में हकुमत नाम की कोई चीज नहीं है। कौन सी चीज है, जो हकुमत नही कर सकती है फिर रोजाना कतल क्यों हो रहे है। इसके लिए अकेली सरकार ही नही अकाली दल को भी मैं जिम्मेदार ठहराता हूं। अकाली दल के नेताओ ने पंजाब में खून की होली खेली है। बस में से उतरते हुए लोगों को मारा जा रहा है, दुकानो पर बैठे हुए आदमियों को मारा जा रहा है, घरो मे बैठे हुए लोगों को मारा जा रहा है। सिनेमा हाल मे कतल हो रहे है। बैकों में डाके पड़ रहे है। लाला जगतनारायण से लेकर बाबा गुरबचन सिंह तक कोई सेफ नहीं है। न महिला सेफ है, न पुरुष सेफ है। न बच्चा सेफ है और न बूढ़ा सेफ है। कोई भी महफूज नही है। इसके लिए जिम्मेदार काफी हद तक अकाली दल भी है। इस बात को क्या वे महसूस नहीं करते हैं। क्या वह निर्दोष निरकारियों को कतल करके, निर्दोष हिन्दुओं को कतल करके पंजाब के बाहर रहने वाले सिक्ख भाइयों के जान व

माल को खतरे में नहीं डाल रहे हैं ? उनको इन सब बातों को सोचना चाहिए। लेकिन बदकिस्मती हमारी यह है कि यह बात उनके दिमाग में नहीं आती है। हो सकता है कि इसका कुछ लाभ उनको पहुंच रहा है। कुछ पैसा तो जरूर मिल रहा होगा। इकट्ठा हो रहा है। दरबार साहिब के बारे में सरकार खुद कहती है कि हथियार जमा है। वहां से गोलिया भी चलती है। वहा से विभिन्न तरह के बयानात भी आते है। भिंडरावाला कहता है कि शाम तक पाच हजार हिंदुओं का कतल कर दूगा। कभी कहता है कि पजाब से सारे हिन्दुओं का मैं कतल कर दूगा। कभी वहा से सिन्धु नाम का व्यक्ति खालिस्तान के कांस्टीचूशन के एलान की बात करता है विधान जलाने का अह्वान वहां से होता है। सब कुछ वहा से हो रहा है उस पर भी सरकार हाथ पर हाथ रख कर बैठी है। क्या इस को सरकार कहा जा सकता है। मैं सरकार से भी कहना चाहता हूं कि कितने और बेगुनाह लोगों का आप खून बहाना चाहते है। कितनी और माताओं की गोद खाली करना जरूरी है। कितनी और बहनों के सुहाग लुटाने जरूरी है—इन सब के बाद क्या आप की आंख खुलेगी। आखिरकार आप क्यों एक्शन में नहीं आते है। कौन सी चीज है जो सरकार नहीं कर सकती है। यह बात सही है कि कुछ काम सरकार ने किए है। पिछले साल अकाली दल ने कहा कि रेल रोको और सरकार ने हुकुम दिया कि रेल बन्द। खुद ही बंद कर दिया। इस महीने आठ फरवरी को अकाली दल ने कहा कि पंजाब बंद। इस पर सरकार ने रेल भी बंद, मोटर भी बद सब बंद कर दिया। लेकिन इत्तिफाक की बात है कि 15 फरवरी को एक आर्गेनिजेशन हिन्दू सुरक्षा परिषद में पवन कुमार कहां से आ जाते हैं और एलान करते हैं कि पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश बन्द, लेकिन सरकार पहले जैसा कुछ नहीं करती है और वहां गोलियां चलती हैं। हरियाणा को मैं अच्छा समझता हूं कि उसने हुकुम दिया कि कोई इस किस्म की शरारत करे उसको गोली से मार दिया जाएगा—शूट-एट-साइट। इस प्रकार के आर्डर पंजाब के अंदर क्यों नही लागू होते है केवल हरियाणा में ही क्यों है ? पंजाब में जिस तरह से धांधलियां हो रही है, खून बहाया जा रहा है—क्या यह स्थिति शूट-एट-साइट के काबिल नहीं है।

जहां तक उनकी मांगों का सवाल है, इसके लिए आप दो साल तक अपना मन नही बना सके है। कौन सी चीज को मानना है, कौन सी चीज को रिजैक्ट करना है। आप सीधे-सीधे कह दीजिए कि हमें इस चीज को नहीं मानना और यह हमारा फैसला है।

श्री एम० रामगोपाल रेड्डी (निजामाबाद) : वह हो गया है।

श्री सूरजभान : क्या हो गया है ? अगर हो गया है तो सरकार कहती क्यों नहीं ?

अकाली दल यह चाहता है कि चाहे पाकिस्तान को पानी मुफ्त में जाता रहे, लेकिन हरियाणा की सूखी खेती को पानी नही मिलना चाहिए। आज मैं यह कहने पर मजबूर हूं कि झगड़ा महज चंडीगढ़ और पानी का नहीं है, बात कहीं और पहुंच गई है। मैं आदरणीया प्रधान मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि अगर आप इन हालत का जायजा लें तो आपको मालूम होगा कि जो कम उम्र के नौजवान हैं, वे

[श्री सूरजभान]

चाहे सिख हों या हिन्दू हों, उन के दिमाग कहां तक जहर से भर दिये गये है। जो ज्यादा उम्र के है वे ठीक लाइन पर सोच सकते हैं, लेकिन यही हालात चलते रहे तो मुलक नही बचेगा। एक दिन आप को कंट्रोल करना ही पड़ेगा, लेकिन वह दिन कब आयेगा, आप कब कंट्रोल करेंगी? आज सारा देश आपकी तरफ देख रहा है, कभी तो आप को आंखें खोलनी पड़ेगी। इस के बगैर बात नहीं बनेगी।

राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में एक जगह पर जिक्र किया है कि 32 लाख हरिजनों और आदिवासियों को कुछ फायदा मिला है—

14.52 hrs.

[SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI *in the Chair*]

आई० आर० डी० पी० और एन० आर० ई० पी० कार्यक्रमों के तहत। ये आकड़े सरकार के ठीक हो सकते है, लेकिन किस तरह का लाभ हुआ है यह देखने की बात है। मैं एक उदाहरण आप के सामने रखना चाहता हूं—पिछले साल जनवरी मे आदरणीय राष्ट्रपति जी मध्य प्रदेश में भोपाल से 20 किलोमीटर के फासले पर "वालमपुर गांव में गये थे। उस गांव को एक आदर्श गांव डिक्लेअर किया गया था और हरिजनो तथा आदिवासियों के लिए ऐलान हुआ था कि उन के घर पक्के किये जायेंगे, उन के लिये पानी के हैण्ड-पम्प्स लगाये जायेंगे, सडकें बनाई जायेंगी, गोबर-गैस प्लांट लगाये जायेंगे, बिजली पहुंचाई जायगी और कुछ काम हुआ भी। जिस दिन राष्ट्रपति जी वहां गये, बिजली के खम्बे आ गये, कुछ घरों में बिजली के बल्ब लग गये। लेकिन उसके बाद क्या हुआ—यह आपको सुन कर हैरानी होगी। एक साल के बाद आज वहा यह पोजीशन है—अगर बिजली के बल्ब टूट जाते तो बात समझ में आ सकती थी, लेकिन वहां आज बिजली के खम्भे भी नही हैं। यह उस गाव की बात है जिस का राष्ट्रपति जी ने एक आदर्श गांव के रूप में उद्घाटन किया था। 12 खड्डे गोबर गैस प्लाट के लिये खोदे गये थे लेकिन एक भी गोबर गैस प्लांट नही लगा, एक भी हैण्ड-पम्प नही लगाया गया। एक गरीब हरिजन, जिस का नाम किशोरी लाल है, उस का फोटो छपवाया गया, टोकरी बुनते हुए उस को दिखाया गया था...

श्री राम प्यारे पनिका (राबर्ट्सगंज): यह पचजन्य मे छपा होगा।

श्री सूरजभान: दूसरे अखबारो मे छपा है, पंचजन्य तो आप को बुरा लगता है।

श्री राम प्यारे पनिका: आप की इन बातो से यह वहा सिद्ध हो रहा है कि 32 लाख हरिजनो और आदिवासियो को गरीबी रेखा से ऊपर नही उठाया गया? इस तरह के तर्क दे कर आप जबरदस्ती अपनी बात को सिद्ध करने की कोशिश कर रहे है।

श्री सूरजभान: जब आप की टर्न आये तब आप बोलिएगा।

मैं निवेदन कर रहा था कि उस गरीब का फोटो छपवाया गया और कहा गया कि उस को 500 रुपया दिया गया है। उस से यह कहलाया गया कि अब मेरे हालात ठीक हो जायेंगे। इस किस्म के कर्जे हजारों आदमियों को दिये गये है और कहा गया कि हरिजनों और आदिवासियो को आज

यह महसूस हुआ कि देश में उन की सरकार है। लेकिन जब उस से पूछा गया... .

सभापति महोदय : आप का क्या कहना है – क्या उन को लोन नहीं दिया जाता है ?

श्री सूरजभान : मैं यही बतलाना चाहता हूं – उस किशोरी लाल ने कहा कि मैं पहली बार सुन रहा हूं कि मुझे कर्जा दिया गया, कम से कम जिस का फोटो छपा था उस को तो देना चाहिए था।

सभापति महोदय : वह गलत फोटो होगा।

श्री सूरजभान : मैगजीन में उस का फोटो छपा हुआ है, राष्ट्रपति जी वहां गये थे, मैं किसी छोटे मोटे की बात नही कर रहा हूं।

सभापति महोदय, आर्टीकल 338 में स्वर्गीय बाबा अम्बेदकर साहब ने प्रावीजन रखा था कि हरिजनों और आदिवासियों की भलाई के लिए एक अफसर होगा। जिस का नाम रखा गया कमिश्नर फोर शेड्युल्ड कास्ट्स एण्ड शेडयूल्ड ट्राइब्स। आप को सून कर हैरानी होगी कि ढाई साल से वह पोस्ट खाली पड़ी है और कोई कमिश्नर फोर शेड्यूल्ड कास्ट्स एंड शेड्यूल्ड ट्राइब्स हिन्दुस्तान में आज नहीं है। वह पोस्ट खाली पड़ी हुई है।

हमने एक मांग और की थी। 1947 में जब भारतवर्ष आजाद हुआ तो कुछ लाख रिफ्यूजी पाकिस्तान से आए थे और कुछ सालों के लिए उन रिफ्यूजियों के लिए एक अल्हेदा मंत्रालय सरकार ने बनाया था, जिसका नाम रिहैबीलीटेशन डिपार्टमेंट था। हजारों साल से जो करोड़ों रिफ्यूजी हरिजन और आदिवासी हैं, उन के लिए एक अल्हेदा मंत्रालय बनाने की जरूरत महसूस नहीं हुई। हम ने बार बार मांग की और मांग करने के बाद यह एलान हुआ कि मंत्रालय नहीं बनाएंगे बल्कि एक डिपार्टमेंट बनाएंगे और अभी थोड़े दिन पहले एलान हुआ कि डिपार्टमेंट भी नहीं बनाएगे। क्या इसी हिसाब से कहते हैं कि हम हरिजनों और आदिवासियों के लिए भलाई का काम कर रहे है।

एक तीसरी बात यह कहना चाहता हूं कि हमारा देश एक धर्म निरपेक्ष देश है। ऐसा कहा जाता है लेकिन यहां पर ईसाई भाइयों के गुरू के जन्म दिन पर छुट्टी होती है मुसलमान भाइयों के गुरु के जन्म दिवस पर छुट्टी होती है और सिखों के गुरू के जन्म दिन पर छुट्टी होती है लेकिन हरिजन और आदिवासी भाइयों के गुरू रविदास के जन्म दिन पर छुट्टी नहीं होती, महर्षि बाल्मीकी के जन्म दिन की छुट्टी नहीं होती और बाबा साहिब डाक्टर अम्बेडकर के जन्म दिन के अवसर पर छुट्टी नहीं होती।

श्री गिरधारी लाल व्यास (भीलवाड़ा) : नेहरू जी के जन्म दिन की भी छुट्टी नहीं होती है।

श्री सूरजभान : मैं धार्मिक नेता की बात कर रहा हूं। क्या वे धार्मिक नेता थे। आप की जानकारी के लिए मैं बता दूं कि जनता पार्टी की रिजीम में गुरू रविदास के जन्म दिन की छुट्टी 1979 में हुई थी मगर इस सरकार ने 1980 में आते ही वह छुट्टी काट दी। मैं कहना चाहता हूं अगर आप छुट्टी नहीं करना चाहते है इन तीनों जन्म दिनों की तो मत कीजिए लेकिन फिर सिर्फ

[श्री सूरजभान]

साल में दो ही छुट्टी रखिये। एक 26 जनवरी की और दूसरी 15 अगस्त की। बाकी सारी छुट्टियां आप काट दीजिए। अगर औरों की छुट्टियां करते हैं, तो हमारी भी कीजिए और हमारी नही करते हैं, तो औरों की भी मत कीजिए। हमारे साथ सौतेली मां का सुलूक नही होना चाहिए।

मैं अभी जल्दी जल्दी अपनी बात खत्म कर रहा हूं। हरिजनों की बात मैं कहना चाहता हूं। इसी महीने की 14 तारीख को अम्बाला जिले की नारायणगढ़ तहसील में रायपुर रानी कस्बे में एक गरीब हरिजन नौजवान पर चोरी का इल्जाम लगाया गया था। वह इल्जाम झूठा है मगर थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाए कि वह सच्चा था, तो थाने में उस के बाप और मां को बुलाया गया और पीटा गया। पीटना ही काफी नहीं समझा गया। अखबारों में उस के बारे में काफी कुछ लिखा है। मां और बेटे को नंगा कर थाने मे एक दूसरे पर लिटाया गया। इस तरह से हरियाणा में दोबारा रिवासा कांड दोहराया गया। चंडीगढ़ से निकलने वाला प्रसिद्ध ट्रिब्यून अखबार है। इस के एडीटोरियल में जो लिखा है, उस में से मैं एक अंश पढ़ कर सुनाना चाहता हूं :

> "यदि यह सही है तो पीड़ित मां-बेटे और पुलिस हिरासत के बाद की उन शारीरिक तकलीफों का रहस्य क्या है ? कोई भी मां-बेटे ऐसे आरोप लगाना तो दूर, सोच भी नहीं सकते कि उन्हें नंगा करके लिटाया गया और कुमर्म करने पर मजबूर किया गया। इसके पहले कभी इन व्यक्तियों पर आज तक चोरी या किसी अपराध का इल्जाम नहीं लगा। फिर पूछताछ में ऐसी ज्यादती क्यों हुई ?

मैं पूछना चाहता हूं कि क्या हरिजनों के साथ यही सलूक होगा और मां बेटे के पवित्र रिश्ते पर इतना लाछन आएगा। क्या कार्यवाही की गई अपराधियों के खिलाफ। आज तक कोई कार्यवाही नही हुई।

फिर उसी तहसील में, उसी जिले में, उसी नाम से मिलते-जुलते गांव रायपुर वीरा में 80 साल से जमीन के एक टुकड़े पर हरिजनों का कब्जा था और गुरु रवि दास के जन्म दिन को मनाने के लिए उन्होंने एक झंडा लगा रखा था। उन से कहा गया कि इस झंडे को उखाड़ो और वह वहां से हटाने का प्रयास किया। इस पर वहां हरिजन इकट्ठा हुए और वहा का डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट उन को कहता है कि इन चमार, चूहों का दिमाग खराब हो गया है। उन्होंने इश्तहार छापे और उन को सब में बंटवाया और सब को लिखा लेकिन आज तक उस डिप्टी सुपरिन्टेन्डेंट के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई। यह केवल स्टेट का ही मामला नहीं है, केन्द्र भी इसमें जिम्मेदार है।

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी (निजामाबाद) : जब यह वाकया हुआ, उसी वक्त क्या आप ने स्टेट गवर्नमेंट या सेन्ट्रल गवर्नमेंट को लिखा था।

श्री सूरजभान : मैं ने लिखा है। मैं ने पब्लिक मीटिंग की है और मैं कहता हूं कि

आप का सिविल राइट्स प्रोटेक्शन एक्ट है उसके अन्तर्गत कार्यवाही की जाए।

एक माननीय सदस्य : यह कब हुआ ?

श्री सूरजभान : इसी महीनेकी 16, 17 तारीख को यह हुआ है और राय-पुर रानी का किस्सा, जिस के ऊपर एडो-टोरियल लिखा जा चुका है, यह 14 तारीख को हुआ है।

15.00 hrs.

सभापति महोदय, उन्होंने कहा कि इको-नोमिक सिचुएशन इम्प्रूव हो गई। यह शायद ये इसलिए कह रहे हों कि इन्होंने इंटरनेशनल मोनिटरी फंड से कर्जा लेना छोड़ दिया है। अगर पैसा है तो सरकार अब एशियन बैंक से क्यों कर्जा मांग रही है।

आज मंहगाई की हालत क्या है ? सर-कारी कर्मचारियों की चार पांच किस्तें बकाया है उनकी पेमेंट आप क्यो नही करते है ? गरीब आदमी की हालत आज बदतर होती जा रही है।

आप किसान की बात करते हैं। आपने गेहूं का दाम एक रुपया बढ़ाया है इसको बढ़ा कर आप यह समझते है कि आपने किसान के लिए बहुत काम कर दिया। एक तरफ आप कहते है कि एग्रीकल्चरल प्रोड-क्शन बहुत बढ़ गया है और दूसरी तरफ आप अनाज बाहर से मंगाते है। आप बाहर से अनाज क्यों मंगाते है ?

मैं आखिरी बात कहकर समाप्त कर रहा हूं। मंहगाई भी भ्रष्टाचार का एक कारण है। व्यापारी, सरकारी अफसर और मंत्री सब मिल कर भ्रष्टाचार बढ़ाते है। इससे मंहगाई और भी बढ़ती है। आजकल यहां पर कुछ नाम तो मशहूर हो गये है। जैसे . साहब। यह नाम तो गाली बन गया है। किसी को गाली देना हो तो कहदो **। इसी तरह से ** .... नाम भी कुछ ऐसे नाम है। (**व्यवधान**)

सभापति महोदय : इसे आप छोड़िये, यह कार्यवाही में नहीं जाएगा।

SHRI EDUARDO FALEIRO (Mormugao) : That should be expunged. These persons are not present in the House to defend themselves. (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : I have already said it.

सभापति महोदय, इतना प्रधान मंत्री ने खुद कहा है कि भ्रष्टाचार तो ग्लोबल फीचर बन गया है। इन चीजों को कहने के बाद मैं मजबूर हूं कि आपने जो मोशन आफ थेंक्स मूव किया है, मैं इसका समर्थन नहीं कर सकता

SHRI M. SATYANARAYAN RAO (Karimnagar) : Mr. Chairman, Sir, I rise to support the Motion of Thanks to President for his kind Address.

I was carefully listening to the speeches of the Opposition leaders, particularly that of the latest speaker, Shri Suraj Bhan. He was narrating all kinds of stories regarding Punjab I would like to know from him as to who is responsible for this kind of situation. It was the Janata Party which encouraged them The Lok Dal and the BJP were also a part and parcel of that Janata Party The Akali Dal against whom you are

** Not recorded.

[Shri M. Satyanarayan Rao]

speaking now was your partner and it is because of your encouragement, these people have got so much of courage and they are indulging in all sorts of things which are endangering our country. You are forgetting that and you are blaming us. You have no right to blame this Government. In fact, in 1980 when we took over from you, we inherited all kinds of problems, the Punjab problem, the Assam problem and every other problem. It is the Janata Party which is responsible for this kind of situation. Whether it is disintegration or any other situation, it is the Janata Party, which was ruling this country, which is responsible for it. We are trying our best to see that these problems are tackled satisfactorily. When we wanted to take some steps in Punjab where the situation was going out of control, it was the same Opposition which came in our way. You were warning us, you were warning our Home Minister, 'Do not enter the Golden Temple ; otherwise, you will have to face the consequences'. I am surprised, now the Janata Party leader Shri Morarji Desai is saying, 'If necessary, send your army to the Golden Temple ; we cannot tolerate all these things'. The Lok Dal Leader, Shri Charan Singh, has said recently in Gwalior that this incompetent Government is not taking any steps. But these were the very Parties which were coming in our way to tackle this problem. When we wanted to take effective steps, unfortunately they were coming in our way. Now, of late, I do not know what happened to you, you realise that this country is going to disintegrate if we do not control the situation. Now you are blaming this Government for not taking effective steps against Akali Dal. I am not blaming the CPI and the CPM. To some extent, they are also responsible indirectly. But the other people, the Lok Dal and the BJP, are definitely responsible for this. Not only this Punjab situation—I tell you. I will give another instance also, Now in Punjab after all this encouragement this kind of situation is there. In other states also the same kind of situation is going to arise. I want to give the instance of my own State. The so-called Telugu Desam Party believes in regionalism and it does not believe in all these things. In the name of self-respect of the Telugu people, they came to power. Now you are hobnobbing with them. Not only that I am surprised to read in the newspapers that in Gwalior a conference was held and in that conference the great BJP leader, Mr. Atal Bihari Vajpayee and the great Lok Dal leader Mr. Charan Singh are saying, 'Here is a man from the south. He is playing a great role in Andhra Pradesh and we hope that he will play a great role in the nation'. He has destroyed our State. If you want to destroy the country; you are welcome— my friends. But this is the attitude of our friends over there....

SHRI NARAYAN CHOUBEY : That about Mr. Channa Reddy ?

SHRI M. SATYANARAYAN RAO : If you talk of individuals, I do not consider them at all. Leave alone individuals. I do not consider them at all Mr. Channa Reddy or Mr Narayan Choubey do not matter at all, this man or that man. After all in the mainstream whoever is not there will be forgotten. Don't bother about any individual. I am not bothered about anybody. What I want to say is that I warn these people. These people are again encouraging a man who believes in regionalism. Now you say that because of election he may be useful to 'us'. You are therefore hobnobbing with him. This is because of your selfishness, utter selfishness. But is there any alternative programme ? The only programme you have is how to remove Shrimati Indira Gandhi from power and how to remove the Congress Government from power. That is all and you have no alternative programme. The same thing happened in 1977. Again you want to repeat it ? For what ? After 1977 we have seen the destruction of the country—economic destruction, political destruction and the problems which you have left for us we are now facing and we are trying our level best to solve them. I want to

warn the CPI and CPM people—beware of all these people.

Mr Suraj Bhan says, 'I am sorry for what is happening in Punjab Innocent people are being killed'. Who is killing.' The so-called communalists whether they are Sikhs or Hindus are responsible for these things. Instead of condemning them, you come here and blame our Prime Minister and our Party saying, 'You are not taking any action and you are responsible for the killing of the innocent people, etc.' But I hold you responsible for all these things. You are encouraging them. Not only that, you were hobnobbing with these Akali Dal people at that time. Now in Haryana who are responsible ? You are encouraging these people—the Hindu Suraksha Samiti people. They belong to your Party. You are encouraging all these things. Instead of solving this problem and instead of helping the government to solve them, you are encouraging again the so-called communalists only for the sake of your Party and in the interests of your Party you are doing all these things. Now you have become a great champion of the so-called people who have killed innocent people. You have created the situation and you have created the problem and when we are trying to solve it you put so many obstructions on our way. You come here and blame our Party. I am very sorry for this irresponsible opposition. I do not know when they will release these things. At least now you should please realise. After all the country in more important than the Party. Party and power are not permanent. Our lives are not permanent. So where is the question of our position ? She may be Prime Minister to-day ; tomorrow you may be the Prime Minister. But if the country is safe, we are safe and you are safe. If the country disintegrates, where is the question of Prime Minister and who is going to rule this country ? That you have to bear in mind. Since Independence this kind of a situation never arose. This is the first time this situation is there - whether it is Assam, Jammu & Kashmir or Punjab. I can cite examples of other States also. Now we are not having agitations there but the divisive forces are there and everywhere and particularly. on the borders of our country, whether it is South or West or East or anywhere else. Northeastern region was also burning although it has calmed down now. So, it is very necessary that we should think over the matter and some collective wisdom should prevail. Then only any Government will be able to solve this problem. If you say why don't we send the army there, it will be very easy that in one minute's time the Government can order the army to enter the Golden Temple. But, the next day, you will blame us that we have unnecessarily precitated the situation. Instead of solving the problem we have only created more problems. Please be careful about all these things. Our elders including Mahatma Gandhi have sacrified their lives for the sake of freedom I take the example of Mr. Sen who mentioned the names of the great Bhagat Singh and Lala Lajpat Rai who had sacrified their lives for the sake of our freedom—not for dis-integration of the country by killing innocent lives and they wanted freedom for the country in order to achieve economic progress in this country. In those days, we were not having sufficient food or houses etc. But, after attaining independence, we tried our best to see that the poorer sections of the people get the minimum facilities. Since the last thirtysix years, we are doing all these things.

Yesterday, Shri Samar Mukherjee was telling that there was no progress at all; we were unnecessarily boasting ourselves. We should give credit to the monsoon. When it fails, you never give credit to us. We are only blamed. It is the God Almighty which is responsible. We have not created irrigation facilities. Now you say that the credit must go to the monsoon. It is because of that; we have not done anything. Ultimately, it is the soundness of the policy which is responsible for these things. I am happy to know that. We are really proud of it. In the whole world, particularly, in the African

[Shri M. Satyanarayan Rao]

continent, the agricultural production has gone down like anything. They are facing aggrave problem. They are now thinking as to how to feed those people in that country. At this juncture, in our country, we have not only progreses but we have achieved a massive food production of 142 million tonnes. This is not a small achievement for us. When we have achieved something, you should have the courage to appreciate that. If we fail, you are at liberty to say that, As Opposition leaders, you are at liberty to say that. When we do some good things you should appreciate us. If something wrong happens, you go on blaming us. It is not fair. You are also ruling in one State. There may be failure and successes. I do not see successes but only failures there.

Recently, I was in Calcutta, When I was meeting the people, we found that they were suffering like anything. There is no power available there. Because of shortage of power, the industrialists are now thinking of going out from there. Your state will suffer. You are not able to provide water as also the minimum housing and other facilities to the people. It is really a unfortunate thing. You blame the Central Government that it is not coming to the rescue of our State. You say, our planning is very hopeless. You blame us for not giving sufficient help to your State.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : What does the hon. Member say when there is some achievement in West Bengal ? How do you behave with the opposition parteis here ? Why have double standards in so far as West Bengal is concerned ?

SHRI NARAYAN CHOUBEY : The poor people are suffering in the rest of India too.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO : Yesterday, Mr. Mukherjee was saying that this Government is encouraging the industrialists and the rich people. When I was in Calcutta, I had an occasion to meet so many people, particularly, the industrialists. The Estimates Committee went there. We were examining these people. They said that they were very happy with the C. P. M. Government. When I asked them 'Why' they said that they had not interefered with them and that they were having a very good relation with them. You are happy with them there. Here you blame the Central Government that it is encouraging these industrialists and the rich people are happy with us. They maybe happy with you in West Bengal—not with us Of course Prof. Pal was one of the members of the Estimates Committee And in his presence, we were discussing these things.

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : From your side you will reply later.

SHRIMATI INDIRA GANDHI : You only shout at us but you do not like to listen.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO : Mr. Chairman, Sir, it is not me alone. Mr. Pal was also there. He is also a member of the Estimates Committee. In his presence I asked those people and they said that they are very happy. They are very happy there and you don't like them to be happy here. This kind of double standard is not good for you. We are doing the same thing. Why should you blame then ?

(*Interruptions*)

As Mr. A.K. Sen has also mentioned a little while ago, we are proud of our agricultural production. There was a time when we were completely dependent on imports particularly from America under PL 480 programme. Not only America but also the whole world was blaming us and they were telling us that this country will never be self-sufficient in the matter of foodgrains. This country will remain a begger for food. But what happened

later on. During these 10-15 years whatever policies we adopted they are responsible for this green revolution. We are proud of it. Don't you consider it a great achievement for us ?

Now, we are not only in a position to feed our people but can even export food-grains to other countries. If remunerative prices are given to farmers we cannot only feed our people but also the neighbouring countries.

We have also created irrigation potentially. Lakhs of acres are being brought under irrigation. Then there is increase in electricity generation. We are proud of all these things. It is not a small achievement at all.

Now, you speak about poverty. Where is there no poverty ? Poverty—whether you are here or we are here—is going to be there so long as population increases. *(Interruptions)* We don't have any magic wand to remove poverty within no time. We are doing our best but, unfortunately, the increase in population is coming in our way. Production has increased but at the same time population has also increased and that is why we are facing this problem. We also welcome your suggestion as to what methods should be adopted to remove poverty. But instead of giving suggestions you only try to tell us we have not done this or done that.

In 1977 when Janata Party was there in power, Shri Morarji Desai claimed that within five years he is going to remove poverty and solve the unemployment problem. After one year I put him the question that he had said he would solve the unemployment problem in five years and since one year had already passed how much he has been able to solve this unemployment problem. It was actually found that unemployment problem had further aggravated instead of decreasing. Now, NTR has made so many promise, He is not able to fulfil any of those promise. So, now he is requesting you to come to his rescue because he had made all false promises. He has made all kinds of false promises. He has no experience at all. There are some people who are comparing Mr. N.T. Rana Rao with Mr. M.G. Ramachandran. There is a lot of difference between the two. Mr. M.G.R. was in a political party for about 80 years. He was a treasurer of that party. whether he was earning he was spending on his party. But this particular gentleman has never read a paper in the life. He never contributed a single pie for the poorer section of the people. I am saying it because I know about it and now this man is being encouraged by you and you say all sorts of things about him.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : He is saying so many political things about the Chief Minister. I think he should not go on like this. He should avoid it.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO : I have got every right. Why I cannot criticise ? You go on criticising every body as you like. I am only sorry that you are encouraging this kind of** man. You are giving all encouragement to him and you are saying that he is a great national hero and all these things.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : You are both ring about us.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO : Why should I bother about you ? I am not bothered. You are bothered about your State. I am bothered about my State. I only want to bring to the notice of the honourable House that when I was touring my constituency I saw with my own eyes how the people are suffering, how the harijans are suffering there. There is no electricity. Once upon a time our State was a surplus State and it was supplying electricity to all the neighbouring States. Now this State is in difficulties.

**Expunged as ordered by Chair.

[Shri M. Satyanarayan Rao]

Thousands of electric motors have been burnt because of low voltage, because of shortage of power. Such a beautiful State is now in difficulties. Sir, anything can be done in a good way if there is good management. If there is good management everything will be all right The hon. President, in his Address, we pleased to say that in Electricity-generation, in Foodgrains, in Irrigation potential and all these things, we have made good progress It is because of the mismanagement in our State that we face all these difficulties now.

MR CHAIRMAN : Please come to the President's Address

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Are we talking about the President's Address or the Address of the Rajyapal of Andhra Pradesh ?

MR. CHAIRMAN . Please come to the President's Address. I have told him.

SHRI M SATYANARAYAN RAO When the President speaks, he speaks of the whole nation He does not speak only about Delhi or West Bengal He speaks about the whole nation Andhra Pradesh is also part of the whole nation. What I was saying was, if there is good management, everything will be all right It is because of mismanagement that we see all these difficulties now.

Regarding international situation I wish to say a few words It is not only internal situation that is worring us, but the international situation also is worrying us, particularly regarding our neighbours The induction of most modern and sophisticated weapons among our neighbours is a very alarming thing This is the situation which we face Apart from our own internal problems in Punjab, Assam and Kashmir, Pakistan is being equipment with all kinds of sophisticated weapons which is very dangerous for our country. The Indian Ocean is being militarised and particularly nuclear weapons are pouring in This is a very dangerous development. Our country is being encircled by all these imperialist forces. And these Imperialist forces never want us to be self-sufficient in our foodgrains, in our economic condition. When they see that we are achieving progress, we are making progress, they want to obstruct us in every way and they are determined to do everything which ultimately is forcing us to spend money on defence So, the international situation which is facing our country is very alarming We find that the great powers and the super powers are at loggerheads; they are not even on talking terms. They have refused to enter into negotiations So, we should keep all these developments in mind when we take up this Motion

I am very happy that the hon President has drawn our attention to this situation

It is our duty to see that there is international peace and international co-operation and international brotherhood. Let us fight against Imperialism, neo-colonialism as well as neo-Imperialism and Racialism which has been mentioned in the President's Address I think the President for his Address

SHRI N SOUNDARARAJAN (Sivakasi) Mr Chairman Sir, on behalf of my party, the AIADMK, I wish to congratulate our hon Prime Minister for having taken the initiative to host and to organise two international conferences, i e , the Non-Aligned Countries' Summit and the CHOGM in New Delhi in 1983. In the Non-Aligned Summit, the Hon. Prime Minister was elected as its Chairperson

This shows that our hon Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi is the only most and the best suitable and capable leader who can fight for disarmament, who can fight for peace and who can fight for economic cooperation among the countries of the world I also have to congratulate our hon'ble Prime Minis-

ter for her good gesture in allocating Rs. 600 crore to provide employment to the unemployed educated people. The unemployment problem is not new or known only to India, but it is prevalent in most of the other countries of the world. So, in a big democratic country like India, the unemployment problem would, to some extent, continue to prevail. In order to put an end to the unemployment problem, our Prime Minister has introduced so many schemes like I.R.D.P., N.R.E.P. new rural landless employment guarantee scheme, etc. Through these schemes, our Prime Minister is trying to eradicate unemployment problem in our country, as much as possible.

Sir, Para 14 of the President's Address deals with universalising elementary education in the age group of 6 to 14 with emphasis on girls' education and on eradicating adult illiteracy by 1990. In order to give effect to this programme the hon'ble Chief Minister of Tamil nadu introduced provision of Nutritious Food Programme to the school going children. Through this scheme, nearly 63 lakh children are getting benefit. Now only that. The condition of the school-going children has also improved to a greater level. The number of school-going children has also gone up to a great extent. Mr. Chairman, this scheme has also been appreciated by the educationists and educationalists all over the world. Our hon'ble Prime Minister has also appreciated this Nutritious Food Scheme of Tamil Nadu Sir, in this context, I may submit that our hon'ble Chief Minister of Tamil Nadu had requested several times the Central Government for inclusion of this scheme in the Plan Outlay. But so far the Government of India has not considered inclusion of this scheme in the Plan Outlay. I would therefore reiterate that the Government of India may kindly consider inclusion of this scheme in the Plan Outlay.

Sir, the Government of India has introduced a new Industrial Policy according to which a district is taken for consideration for starting a new industrial unit if the same district has no industrial unit at all. In this connection, our hon. Chief Minister as also many Chief Ministers of other States had demanded that the Government of India should take into account only upto the taluka level as no industrial unit. I would therefore request the Government of India to consider opening of a new industrial unit if a Taluka has no industrial unit at all.

Sir, in the President's address, it is stated that the production of foodgrains is likely to exceed the target of 142 million tonnes this year. Sir, in India, about 75% of the population are engaged in agriculture, both directly and indirectly. The economic condition of the Indian farmers is deterioration year after year. It is due to unremunerative prices fixed by the Government for their agricultural produce. Sir, year after year, the prices of inputs of the agriculturists are going up at a fast pace, but equally the selling prices of the foodgrains do not match with the production cost. The cost of production of foodgrains is increasing year by year. While fixing the procurement price for foodgrains, the Government of India should take into consideration the recommendations of the State Chief Ministers also. At present, the Government of India takes into consideration only the recommendations of the Agricultural Prices Commission. Our Chief Minister has requested the Central Government to fix Rs. 175/- per quintal for paddy, but the Government of India has fixed only Rs. 132/- per quintal. I request the Central Government to increase the procurement price per quintal to the tune of Rs. 175/- as requested our hon. Chief Minister.

Further, Tamil Nadu is the only state where no village is left without electrification. Not only that, in Tamil Nadu nearly 10 lakh pump-sets have been given power supply. Due to this enlarged rural electrification and the larger amount of power supply to agricultural pump sets, Tamil Nadu State, is facing acute power shortage. I would request the Government to allocate the entire power generated at the Atomic Power plant in

[Shri M. Satyanrayan Rao]

Kalpakkam to the Tamil Nadu State. Then only, the State would be in a position to face the power situation there.

15.32 hrs.

(MR. SPEAKER *in the chair*)

Then, our Chief Minister has given Rs. 200 crores of cooperative loan to small farmers. I request the Government of India to share a portion of that amount and give it back to the State Government.

With these words, I conclude my speech.

श्री उमा कान्त मिश्र (मिर्जापुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं महामहिम राष्ट्रपति के अभिभाषण पर प्रस्तुत धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं जोकि उन्होंने दोनों सदनो के संयुक्त अधिवेशन के समक्ष दिया था। यह हम लोगों के लिए सौभाग्य और गौरव की बात है कि स्वाधीनता के बाद हमने इस देश को बहुत आगे बढ़ाया है। स्वाधीनता के पश्चात पं० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व मे इस देश में लोकतंत्र की स्थापना हुई और योजनाबद्ध विकास का प्रारम्भ हुआ। विपक्ष के ऐसे ऐसे लोग भी जोकि बीस-बीस वर्ष तक इस सरकार में रहे हैं और अब उधर चले गए है, वे भी उधर जाकर कहने लगते है कि कुछ नहीं हुआ है तो उनपर हमें आश्चर्य होता है। आज देश में जो गल्ले का उत्पादन हो रहा है उनका चौथाई भी सन् 1952 में नही हो रहा था। जहां इस देश में पहले एक सुई भी नही बनती थी, वह विदेशों से मंगाई जाती थी वहां अब लाखों टन कच्चा और पक्का लोहा पैदा किया जा रहा है। जहां पहले बड़े बड़े शहरो में ही कुछ बिजली दिखाई पडती थी, अब गांव गांव में बिजलो पहुंच गई है। आज देश में जो सिंचाई की क्षमता है वह चौथाई भी पहले नहीं थी। कपड़ा उत्पादन और इसी प्रकार अन्य औद्योगिक उत्पादनों की बात है। देश ने बहुत तरक्की की है। इसलिए कृषि उत्पादन में सरकार की नीतियां शामिल है, किसानों का परिश्रम शामिल है और सभी बातें शामिल है। इसमें कोई सन्देह नही कि इस वर्ष तो कृषि का उत्पादन हुआ है, वह बहुत ही गर्व की बात है। एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। हमें आशा है कि हमें कृषि के उत्पादन के साथ-साथ अन्य औद्योगिक उत्पादनों में भी आत्मनिर्भर होते जायेंगे। राष्ट्रपति जी ने यह भी कहा है कि इस वर्ष जो कृषि का उत्पादन हुआ है, वह अपने आप में एक अभूतपूर्व बात है और इतना उत्पादन आज तक कभी नहीं हुआ। हम आशा करते है कि यह उत्पादन आगे आने वाले समय में भी मेनटेन रहेगा और उत्पादन बढ़ाते जायेंगे। प्रसन्नता की बात यह है कि जिन वस्तुओं के आयात के कारण हमको बहुत अधिक विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ती थी. जैसे तेल के मामले में उसको अब हम बचाने में सक्षम हो पा रहे हैं तेल का उत्पादन बढ़ने के कारण हमने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से जो लिया था, उसमें बहुत सा हिस्सा हम छोड़ रहे हैं। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्र मे 4 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

राष्ट्रपति महोदय ने अपने अभिभाषण मे देश की आर्थिक तस्वीर को भी पेश किया है। आर्थिक उपलब्धियों का भी जिक्र किया है। इन सब चीजों को देखते हुए आर्थिक संकट होने के बावजूद भी विकासशील देश होते हुए भी हमने अपनी आर्थिक प्रगति को, आर्थिक विकास को बनाए रखा है। आर्थिक विकास की दर को बनाए रखा है और इसको मजबूत बनाया है।

प्रधान मंत्री जी के कार्यक्रमों के द्वारा देश के गरीबों को बहुत बड़ी आशा बंधी हैं। प्रधान मंत्री जी का 20 सूत्रीय कार्यक्रम संसार में एक अद्वितीय कार्यक्रम है। जिसमें हर वर्ग के लिए, किसानों के लिए, मजदूरों के लिए, महिलाओं के लिए, आदिवासियों के लिए, हरिजनों के लिए, सभी के सर्वांगीण विकास की रूप रेखा इस कार्यक्रम में हैं। आइ० आर० डी० पी० के अन्दर कई लाख लोगों को लाभ हो रहा है। यदि विरोधी दल के लोगों को कुछ नजर नहीं आ रहा है, लेकिन हम गांवों में देख रहे हैं कि गांव में हर वर्ग के लिए अपना-अपना विकास कर रहे हैं। नई आशा का संचार हुआ है। हाल ही में प्रधान मंत्री जी ने शिक्षित बेरोजगारों के लिए एक कार्यक्रम घोषित किया है। जिस तरह से शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही थी और हम सोच रहे थे कि वे क्या करेंगे, चोरी करेंगे या डाका डालेंगे, नौकरी तो उनको नहीं मिलेगी, इस शिक्षित बेरोजगारों के कार्यक्रम से शिक्षित बेरोजगारों मे एक नई आशा का संचार हुआ है। लाखों की संख्या में लोग प्रार्थना पत्र देकर ऋण ले रहे हैं और उद्योग खोल रहे हैं। इसी प्रकार गरीबों के लिए, भूमिहीनों के लिए एन० आर० इ० पी० रोजगार गारंटी योजना एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इसके अन्तर्गत उनको 8-10-15 रु० रोज मिल रहा है, जिससे वह अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं। कहा जाता है कि गरीबी की रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या बहुत बढ गई है। मैं कहता हूं संख्या नहीं बढ़ी है, गरीबी की परिभाषा बदल गई। 15 रु० में जो खुशहाली से जिन्दगी बिताता था, अब वह 15 रु० में गुजारा नहीं कर पाता है। इस के अलावा आकांक्षायें बढ़ गई हैं, जीवनस्तर बढ़ गया है। जो पहले दो धोती पहनता था, आज 5 धोती पहनता है, पांच यदि नहीं मिलती है तो कहता है मैं गरीब हूं। पहले जो झोंपड़ियां थी, आज वे खपरेल हो गए हैं, लेकिन वे कहते हैं कि हम गरीब हैं क्योंकि हमारे पास पक्के मकान नहीं हैं। इस लिए गरीबी का दृष्टिकोण बदल गया है, परिभाषा बदल गई है। बहुब से मध्यम वर्ग के लोग जो पहले अपने को गरीब नहीं समझते थे, वे आज अपने को गरीब समझने लगे हैं। इस लिए यह भ्रम है भ्रान्ति है कि आज देश में 50 करोड़ से ज्यादा गरीब हो गये हैं। देश का बहुत विकास हुआ है, गरीबों की संख्या में कमी हुई है, लोगों का जीवनस्तर ऊंचा हुआ है। लोगों का दृष्टिकोण बदला है, अकांक्षायें बढ़ी हैं इस लिये लगता है कि गरीबी ज्यादा हो गई है और गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की संख्या ज्यादा हो गई है।

लेकिन मैं इतना सुझाव जरूर देना चाहूंगा—पिछले वर्ष जो विकास के काम थे, जैसे सिंचाई, पीने का पानी, सड़कों का निर्माण, औषधालय बनाने का कार्यक्रम, पिछड़े क्षेत्रो में उद्योग धन्धे लगाने के कार्यक्रम, इन में धन कम खर्च किया गया है। मैं निवेदन करना चाहूंगा—माननीय वित्त मंत्री जी, माननीया प्रधान मंत्री जी से, यह 6ठी योजना का अंतिम वर्ष है, जो काम सिंचाई के अधूरे पड़े है, बिजली की योजनायें अधूरी पड़ी हैं, सड़कों का बनना आवश्यक है, औषधालयों का बनना आवश्यक है, उन कार्यक्रमों में तेजी लाई जाय।

इस समय देश के अन्दर और देश के बाहर दोनों तरफ संकट छाया हुआ है। कुछ देश के अन्दर की ताकतें और कुछ देश के

[श्री उमा कान्त मिश्र]

बाहर के लोगों के संकेत पर, इशारे पर, साम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद और पांचवां वाद है—कुर्सीवाद, लोक सभा और विधान सभा में सरकार की कुर्सी पाने के लिये इस देश के राजनीतिक नेता, प्रतिपक्ष के लोग, इन बातों को बढ़ावा दे कर देश में एक भयंकर स्थिति पैदा करना चाहते है, देश को तोडना चाहते हैं, देश को खंड खंड करना चाहते है, देश मे एक विशाक्त वातावतण पैदा करना चाहते है। उन के दिमाग में यह बात है—अगर हम कुर्सी पर नही पहुच सकते है तो चलो, देश को खंड खंड करो, नाश करो, देश को विकास को रोको, प्रगति को रोको, देश में अशांति पैदा करो, झगड़े पैदा करो, जातिवाद पैदा करो, साम्प्रदायवाद पैदा करो। विदेशी ताकतें इस लिये ऐसा चाहती है कि हमारा देश इतना विशाल देश है, इतनी बडी जनसंख्या वाला देश है, इस की शक्ति बढ रही है, दुनिया में यह देश एक शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है, दुनिया के नक्शे पर भारत की प्रधान मंत्री ने निर्भीक आवाज में कहना शुरू किया है, जिस से बडी-बडी ताकते भयभीत हुई है, इस लिये वे चाहती है कि इस की प्रगति रुके, इसका विकास रुके और इसको रोकने के लिए यहा साम्प्रदायवाद को भडका रहे है, जातियों को भड़का रहे है, वे इन अन्दरूनी ताकतों को प्रोत्साहित कर रहे है, जब तुम कुर्सी पाओगे तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। इस तरह से देश के अन्दर और देश के बाहर की ताकतें देश के अन्दर खतरा पैदा कर रही है। वे यह नही समझ पा रहे है—यदि देश में इस प्रकार क्षेत्रीयवाद फैला, साम्प्रदायवाद फैला, जातीयवाद फैला, कुर्सी को पाने के लिए कुछ भी करने की भावना फैली तो देश का लोकतंत्र खतरे में पड़ जायेगा, राष्ट्रीय अखण्डता खतरे में पड़ जायगी, देश की एकता खतरे में पड़ जायगी, फिर किसे कुर्सी मिलेगी। जब लोकतत्र खतरे में पड़ेगा, अखण्डता और एकता खतरे में पड़ेगी तो कहां बैठोगे। आप को इस सरकार के दोष अधिक दिखाई दे रहे है, न कही पानी मिल रहा है और न कहीं दाना मिल रहा है—यह भाषण हमारे मित्र रशीद मसूद साहब दे रहे थे। उन का भाषण बिल्कुल निराशावादी रहा है ...

अध्यक्ष महोदय सारे वाद यहीं इकट्ठे हो गये थे।

श्री उमा कान्त मिश्र : रशीद मसूद साहब और उनकी तरफ के लोगो को सोचना चाहिए कि कितनी भयकर स्थिति फैल रही है। जो अराजकता फैल रही है और जो विघटनवादी ताकत ताकतवर हो रही है, इन से देश खतरे में पड़ेगा और डेमोक्रेसी खतरे मे पडेगी। फिर कुछ नही होने वाला है। जैसे पजाब का मामला है। वह एक अलग मसला है, जिस पर अलग से बात होने वाली है और उसमें बडे-बड़े राजनेता बोलेंगे। हम लोग तो आश्चर्य में पडते है कि आखिर पंजाब के अकाली चाहते क्या है? विपक्ष कहता है कि सरकार समझौता नहीं करना चाहती और सरकार इस मामले में अभी कुछ तय नहीं कर सकी है। सरकार ने तो उनकी धार्मिक मांगें मान ली। अब रह गया चंडीगढ़ और पानी का सवाल। क्या श्रीमती इन्दिरा गांधी या उनकी सरकार चंडीगढ़ पंजाब को दे दें और हरियाणा से पूछे भी न और क्या सारा पानी बिना हरियाणा के पूछे पंजाब को दे दे। उनकी सारी बातें मान ले हरियाणा की उपेक्षा कर के और राजस्थान की उपेक्षा कर के।

वे कहते हैं कि हम सिख पंथ की रक्षा कर रहे है। हमारी समझ में यह नहीं आ रहा है कि सिख पंथ का दावेदार कौन है ? संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल तो अकाली नेता है। वह सिख पंथ की रक्षा करने का दावा करता है। अभी अखबारों में हमने पढ़ा है कि भिंडरावाला साहब ने यह कहा है कि सारे सिखों का प्रतिनिधि मैं हूं और मैं जो बात कहूंगा, वह सिख पंथ वाले मानेंगे और श्रीमती इन्दिरा गांधी अमृतसर आएं और मुझसे बात करें। भिंडरावाला घुस कर अकाल तख्त में छिप कर बैठा है। वह सिख पंथ का नेता अपने को कहता है। अगर सिख मासेज उसके प्रति इज्जत की भावना रखती हैं, तो वह अकाल तख्त से बाहर निकले और मैदान में आए। वह पंजाब के गांवों में जाए, गुजरात जाए, बनारस जाए और दिल्ली आए और सारी जनता से बात करे कि वह क्या चाहती है। वह मुट्ठी भर आतंकवादियों को उकसा कर हिंसा की कार्यवाही करवाना चाहता है। इससे पंजाब और पंजाब के बाहर बड़े भयंकर नतीजे हो सकते है और स्थिति खराब हो सकती है। महामहीम राष्ट्रपति श्री जैल सिंह को क्या सिखों की चिन्ता नहीं है ? क्या सिख पंथ में वे विश्वास नहीं रखते हैं ? क्या वे सिख पथ की रक्षा नहीं करना चाहते हैं ? क्या वे सिखों की भलाई नहीं करना चाहते है। आज 40 परसेन्ट सिख पंजाब में है और 60 परसेन्ट सिख पंजाब के बाहर फैले हुए है। क्या सिखों की भलाई ज्ञानी जैल सिंह नहीं करना चाहते, सरदार बूटा सिंह नहीं करना चाहते और सरदार दरबारा सिंह नहीं करना चाहते। 40 परसेन्ट सिख पंजाब में और 60 परसेन्ट पंजाब के बाहर है। वे क्या नहीं सोचते कि पंजाब में अकाली क्या कर रहे है। आज जो रास्ता अकालियों ने पकड़ा हुआ है, आज जो रास्ता भिंडरावाला ने पकड़ा हुआ है, क्या वह सही रास्ता है ? संविधान को जलाना एक भयंकर अपराध है और मैं आपके माध्यम से निवेदन करूंगा कि चाहे कोई भी लोग हों, कोई भी दल हो, कोई भी सम्प्रदाय को, कोई भी व्यक्ति हो और कोई भी गिरोह या समूह हो, जो संविधान की अवमानना करता है, वह देश के लोकतंत्र और इस देश की जनता की अवमानना करता है और उसके खिलाफ सरकार को सख्त से सख्त कार्यवाही करनी चाहिए। यह कोई तमाशा है। उनके साथ सरकार को सख्ती से पेश आना चाहिए। जिस संविधान के तहत प्रदर्शन करने का, आंदोलन करने, अपनी मांगे रखने का अधिकार मिलता है, उस संविधान का जला कर वे उसकी अवमानना करना चाहते हैं। इस तरह से वे उसकी अवहेलना कर रहे है और ऐसे लोग देशद्रोही है और राजद्रोही है। यह राष्ट्र को चुनौती देने का रास्ता है, यह राष्ट्र के संविधान को चुनौती देने का रास्ता है और यह राजसत्ता को चुनौती देने का रास्ता है और यह राजद्रोह है और यह देशद्रोह है। इस चीज को कभी भी बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए और हम तो इस मत के हैं कि ऐसे लोगों को सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए और ऐसी ताकतों को कुचल देना चाहिए। यह भी दुनिया की कुछ ताकतों की प्रेरणा से किया जा रहा है और उनका उकसाने का काम वे कर रही हैं।

इसके साथ-साथ मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि देश आज खतरे में है। अभी एक सज्जन भाषण कर रहे थे और कह रहे थे कि यह जो कहा जा रहा है कि देश खतरे में है यह एक पालीटीकल स्टन्ट है। मेरी समझ में उनकी बात नहीं आई। पाकिस्तान

[श्री उमा कान्त मिश्र]

को हारपून मिसाइल और दूसरी मिसाइल मिल रहे हैं और अभी-अभी दूसरी मिसाइलों और हथियार देने का समझौता पाकिस्तान से हुआ है। अन्दर-अन्दर वह अलग से हथियार इकट्ठा कर रहा है और हथियारों का जखीरा उसके पास है। अभी पाकिस्तान और चीन का एक समझौता हुआ है। पाकिस्तान और चीन का समझौता हर प्रकार का हुआ है। औद्योगिक भी हुआ है और घातक हथियारों का भी हुआ है। पाकिस्तान न जब-जब हथियार इकट्ठे किये, तब-तब उसने हमारे देश पर हमला किया। हमारे विरोधी पक्ष के नेता, विशेष रूप से हमारे माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी कहते हैं कि पाकिस्तान हमारे ऊपर हमला नही करेगा। हम कह रहे है कि आजकल पाकिस्तान अपने होश मे नहीं है क्योंकि पाकिस्तान दूसरो के दबाव मे काम कर रहा है। पाकिस्तान दूसरो की कठपुतली बना हुआ है। वह दूसरों के हथियार अपने यहां इकट्ठा कर रहा है। इससे हो सकता है कि जैसे पाकिस्तान ने पहले हमले किये, फिर वह हमला कर दे। इसलिए आज हमें पाकिस्तान से खतरा है, हिन्द महासागर मे खतरा है। चाइना से जो पाकिस्तान का गठबन्धन हो गया है, उससे भी हमको खतरा है। इस तरह से हर प्रकार से हिन्दुस्तान की आजादी और सुरक्षा को खतरा है। यही बात प्रधान मंत्री कह रही है।

श्रीमन् राष्ट्रपति महोदय ने अपने अभिभाषण में नाभिकीय अस्त्रों का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा है कि इस समय विश्व में 6 मिलियन डालर नाभिकीय हथियारों पर खर्च हो रहा है। श्रीमन् हमने पढ़ा है कि 50 अरब डालर एक घंटे मे इन हथियारों पर खर्च हो रहा है। इस समय विश्व में 50 हजार नाभिकीय अस्त्र बने पड़े हैं और 15 हजार निर्माणाधीन है। इनसे सारी दुनिया का 6 बार नाश हो सकता है।

श्रीमन् जब नाभिकीय युद्ध शुरु होगा तब सारी दुनिया समाप्त हो जाएगी। उसके बाद न कोई यहां जीव होगा, न कोई वनस्पति होगी, न कोई चेतन होगा, न कोई जड होगा, न कोई स्थावर होगा, न कोई जंगम होगा। यह सब हमने पढ़ा है। अगर नाभिकीय युद्ध छिडता है तो इन्सान और पशु दोनो के लिए यह भयकर स्थिति होगी। आज संसार में नाभिकीय युद्ध की सभावना बढ़ रही है। इससे सारी दुनिया के, फ्रांस के, जर्मनी के, इटली के और अमेरिका के नौजवान भयभीत हो गये है। अमेरिका के नौजवान इस आशका तक पहुंच गये हैं कि इस शताब्दी के अन्त तक नाभिकीय युद्ध होगा और मानवजाति का विनाश होगा। यह बड़ी ही भयावह स्थिति है। आज संसार मे मानवजाति के अस्तित्व को, सारी सृष्टि के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न है। इसी खतरे को समझते हुए हमारी प्रधान मंत्री ने इस देश में निर्गुट सम्मेलन किया, राष्ट्र संघ मे जाकर राष्ट्राध्यक्षो से बातचीत की। अभी हाल मे राष्ट्रमंडल देशों का सम्मेलन किया और उन्होंने इस खतरे के बारे में आवाज उठाई और कहा कि हथियारो की होड़ बन्द की जाए, नाभिकीय शस्त्रों का निर्माण बन्द किया जाए और मानवजाति को सर्वनाश से बचाया जाए।

मैं इन शब्दों के साथ इस धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अब्दुल रशीद काबुली (श्रीनगर) : स्पीकर साहब, राष्ट्रपति जी का यह एड्रेस

हमारे सामने है। इस एड्रेस में मुल्क की तरक्की के बारे में जो यह कहा गया है कि पिछले 37 वर्षों से मुल्क में तरक्की हो रही है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। हमारे मुल्क ने टेक्नोलोजी और एटॉमिक एनर्जी से लेकर दूसरे बहुत से शोबों में अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश की है। इसमें हमें बहुत हद तक सफलता भी मिली है।

लेकिन जहां तक इंडस्ट्रियल ग्रोथ का ताल्लुक है, सदर साहब ने अपने एड्रेस में खुद कहा है कि हमारी इंडस्ट्रियल ग्रोथ 4, 5 परसेन्ट रहेगा, सन् 1983-84 में। जहां एग्रीकल्चर में और इंडस्ट्रीज में और बाकी के दूसरे शोबों में तरक्की के बारे में इस एड्रेस में कहा गया है वहां मैं यह भी बताना चाहूंगा कि खुद इस एड्रेस में यह बताया गया है On January 7, 1984 the annual rate of inflation reached 10.4 per cent. ये पोजीशन हमारे मुल्क की है। जहां एक तरफ हम तरक्की की तरफ जा रहे हैं, मेहनतकश किसान अपना खून बहाकर उत्पादन बढ़ा रहा है, मजदूर कारखानों में काम करके वहां उत्पादन बढ़ा रहे है, लेकिन जहां इन्फलेशन की यह हालत हो, 10 परसेंट से ज्यादा इन्फलेशन एक साल के अन्दर हो और जहां पर सरकार यह कहे कि हमने तरक्की के लिए बीस सूत्री कार्यक्रम में रूरल लैण्ड लैस एम्प्लायमेंट गारंटी प्रोग्राम के तहत करोड़ों रुपया रखा है और सेल्फ एम्प्लायमेंट से तालीमयाफ्ता 2.5 लाख लोगों को मुलाजमत देंगे। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि इस 83-84 के दौरान और कितने बेरोजगारों में इजाफा हो जाएगा। मुझे यकीन है कि वह ढाई लाख से ज्यादा होगा। उन लोगों की बेरोजगारी के बारे में आपने क्या सोचा है जिनकी तादाद बराबर बढ़ रही है और जिनको रोजगार दिलाने के सिलसिले में हम नाकाम हुए हैं। मैं बताना चाहता हूं कि इतनी तरक्की होने के बावजूद, इतना आगे बढ़ने के बावजूद, हर क्षेत्र में हम आगे बढ़े हैं, इससे कोई इन्कार नहीं है, लेकिन जिस ढंग से हम सारे साधनों और सारी दौलत को तकसीम कर रहे हैं उससे आम जनता का फायदा नहीं हो रहा है। मैं इस बात से इत्तफाक करता हूं कि तरक्की हुई है, इंडस्ट्रीज के मामले में, साइंस एण्ड टेक्नालाजी के मामले में और हर क्षेत्र में लेकिन इतनी तरक्की होने के बाद इसका ज्यादा फायदा किन को गया है। मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों के मुकाबले में अवामी और सोशलिस्ट राज में 20 खानदानों की जागीरदारी कायम है और उनकी दौलत बढ़ रही है। टाटा-बिड़ला का उद्योग बढ़ रहा है। पैसे की ताकत इनके हाथ में आ रही है। अमीरी और गरीबी की खाई को पाटने के लिए हम कुछ नहीं कर रहे हैं। यही वजह है कि आज बिहार, उड़ीसा, राजस्थान से हजारों लोग पंजाब, महाराष्ट्र और गुजरात के इलाकों में

मजदूरी करने के लिए मजबूर हो रहे हैं। उनको अपने प्रदेशों में मुलाजमत नहीं मिलती, खाने-पीने के साधन नहीं मिलते। मैं दूर नहीं जाऊंगा। हमारे यहां जम्मू-कश्मीर में ही सर्दियों में हजारों किसान कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश और पंजाब और दूसरे इलाकों में मजदूरों के लिए जाते है। जिन्दा रहने के लिए यह जरूरी है।

इतनी तरक्की के बाद अगर लोगों को गरीबी में इतना इजाफा हो और 50 परसेंट लोग सबसिस्टेंस लेवल से नीचे जिंदगी गुजर कर रहे हों, यह बड़े अफसोस की बात है।

अध्यक्ष महोदय : आपको कितना समय और लगेगा।

श्री अब्दुल रशीद काबुली : 10 मिनट का समय और लूंगा।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है फिर कल देखेंगे। अभी आप बैठिए।

شری عبدالرشید کابلی (سری نگر) اسپیکر صاحب۔ راشٹرپتی کا یہ ایڈریس ہمارے سامنے ہے۔ اس ایڈریس میں ملک کی ترقی کے بارے میں جو کہا گیا ہے کہ پچھلے ۳۰ ورشوں سے ملک میں ترقی ہو رہی ہے اس سے انکار نہیں کیا جا سکتا۔ ہمارے ملک نے ٹیکنالوجی اور اٹومک انرجی سے لیکر دوسرے بہت سے شعبوں میں اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی کوشش کی ہے۔ اس میں ہمیں بہت حد تک سپھلتا بھی ملی ہے۔

لیکن جہاں تک انڈسٹریل گرنتھ کا تعلق ہے صدر صاحب نے اپنے ایڈریس میں خود کہا ہے کہ ہمارا انڈسٹریل گرنتھ ۴۔۵ پرسینٹ رہے گا سنہ ۱۹۸۳ء۔۸۴ میں جہاں پر ایگریکلچر میں اور انڈسٹریز میں اور باقی کے دوسرے شعبوں میں ترقی کے بارے میں اس ایڈریس میں کہا گیا ہے وہاں میں یہ بھی بتانا چاہوں گا کہ خود اس ایڈریس میں یہ بتایا گیا ہے۔

On January 7, 1984 the annual rate of inflation reached 10.4 per cent.

یہ پوزیشن ہمارے ملک کی ہے۔ جہاں ایک طرف ہم سرمایہ کی طرف بڑھ رہے ہیں۔ محنت کش کسان ان کی غربت بہت زیادہ بڑھ رہی ہے مزدور کاریگروں میں بیکاری بہت زیادہ بڑھ رہی ہیں لیکن جہاں انفلیشن کی یہ حالت ہو ۱۰ پرسینٹ سے زیادہ انفلیشن ایک سال کے اندر ہوا اور جہاں پر سرکار یہ کہے کہ ہم نے نیشنل رورل ایمپلائمینٹ کے لئے بیس سوتری کاریہ کرم میں رورل

لینڈلیس ایمپلائمینٹ گارنٹی پروگرام کے تحت کروڑوں روپیہ رکھا ہے اور سیلف ایمپلائمینٹ سے تعلیم یافتہ ۲.۵ لاکھ لوگوں کو ملازمت دیں گے لیکن میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ اس ۸۳۔۸۴ کے دوران اور کتنے بے روزگاروں میں اضافہ ہو جائے گا۔ مجھے یقین ہے کہ وہ ڈھائی لاکھ سے زیادہ ہوگا۔ ان لوگوں کی بے روزگاری کے بارے میں آپ نے کیا سوچا ہے جنکی تعداد برابر بڑھ رہی ہے اور جن کو روزگار دلانے کے سلسلے میں ہم ناکام ہوئے ہیں۔ میں بتانا چاہتا ہوں کہ اتنی ترقی ہونے کے باوجود اتنا آگے بڑھنے کے باوجود ہر چھیتر میں ہم آگے بڑھے ہیں اس سے کوئی انکار نہیں ہے۔ لیکن جس ڈھنگ سے ہم نے دھن اور ساری دولت کو تقسیم کرنا ہے وہ اس سے عام جنتا ۔۔۔ نہیں ہو رہا ہے۔ میں اس بات سے انکار نہیں کرتا ۔۔۔ ترقی ہوئی ہے انڈسٹریز کے معاملے میں سائنس ۔۔۔ ٹیکنالوجی ۔۔۔ میں اور ہر چھیتر میں لیکن اتنی ترقی ہونے کے بعد اس کا زیادہ فائدہ کن کو گیا ہے۔ میں یہ کہے بنا نہیں رہ سکتا کہ ہندوستان کے کروڑوں لوگوں کے مقابلے میں عوامی اور سوشلسٹ راج میں ۲۰ خاندانوں کی جاگیرداری قائم ہے اور ان کی دولت بڑھ رہی ہے ٹاٹا برلا کا ادھیوگ بڑھ رہا ہے۔ پیسے کی طاقت انکے ہاتھ میں آ رہی ہے۔ امیری اور غریبی کی کھائی کو پاٹنے کے لئے ہم کچھ نہیں کر رہے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ آج بہار اڑیسہ راجستھان سے ہزاروں لوگ پنجاب مہاراشٹر اور گجرات کے علاقوں میں مزدوری کرنے کے لئے مجبور ہو رہے ہیں۔ ان کو اپنے پردیشوں میں ملازمت نہیں ملتی کھانے پینے کے سادھن نہیں

ملتے۔ میں دور نہیں جاؤں گا۔
ہمارے یہاں جموں و کشمیر میں بھی سردیوں میں ہزاروں
کسان کانگڑا ہماچل پردیش اور پنجاب اور دوسرے
علاقوں میں مزدوری کے لئے جاتے ہیں۔ زندہ رہنے
کے لئے یہ ضروری ہے۔

اتنی ترقی کے بعد اگر لوگوں کی غریبی میں اتنا اضافہ
ہو اور ۵۰ پرسینٹ لوگ سبسٹینس لیول سے نیچے
زندگی گزر کر رہے ہوں۔ یہ بڑی افسوس کی بات ہے

ادھیکش مہودے :۔ آپکو کتنا سمے اور لگے گا

شری عبدالرشید کابلی :۔ ۱۰ منٹ کا سمے اور لوں گا۔

ادھیکش مہودے :۔ ٹھیک ہے پھر کل دیکھیں گے
ابھی آپ بیٹھ جائیے۔

श्री अटल बिहारी बाजपेयी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, मैंने यह कहा था कि आंध्र की विधान परिषद के मामले पर विधि मंत्री एक वक्तव्य दें। पता नहीं उसका क्या हुआ ? आप यह ध्यानाकर्षण प्रस्ताव स्वीकार कर लें।

अध्यक्ष महोदय : विचाराधीन रखें।

...(व्यवधान)...

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Sir, I would request you to request the Prime Minister to remain present during the whole debate on Punjab .. (*Interruptions*) Who are you? Were you promoted ? (*Interruptions*)

---

1 .03 hrs.

MOTION FOR ADJOURNMENT

Situation in Punjab leading to communal violence and confrontation between CRPF and section of people both in Punjab and Haryana

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, आपके मत के अनुसार हाउस ने 24 तारीख को एडजर्नमेंट मोशन स्वीकार किया जिस पर आज चार बजे बहस शुरू करने से पहले मैं, आपसे नम्र निवेदन करना चाहता हूं कि जैसी समस्या आपके सामने है, उस पर संयम से विचार करें। आपके तर्क उग्रवादी तरीके से नहीं बल्कि शांत तरीके से होने चाहिए जिससे कि भाई भाई में प्यार बढ़े। आज, जबकि उल्टे ढंग से भगवान का बेटा ही कुछ करने की कोशिश कर रहा है, उसको निपटाना है। राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने से काम बनेगा पार्टी विरोधाभास से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की भावना के साथ आप अपना भाषण करें इसी प्रार्थना के साथ मैं यह भी कहना चाहूंगा कि समय का जरा ध्यान रखकर हिसाब से चलिए। फिलहाल चार बजे हैं।

प्रो० मधु दंडवते : आप भी जरा ध्यान रखिए।

अध्यक्ष महोदय : मैं पूरा ध्यान रखूंगा और पहले ही घंटी बजा दूंगा। अब सबसे पहले श्री मधु दण्डवते अपना भाषण प्रारम्भ करेंगे।

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur) : I beg to move :

"That the House do now adjourn"

This motion is to discuss the situation in Punjab, leading to communal violence and confrontation between CRPF and sections of the people, both in Punjab and Haryana.

Sir, after you admitted the adjournment motion in this House on the 24th, with the best of intentions, some of the members of the Treasury Benches suggested that, since the matter is of an extremely delicate nature, and as the situation in Punjab and Haryana is rather explosive, we should avoid a discussion of this subject through an adjournment motion. I quite realise the feeling behind this suggestion. But I must make it explicity clear that, in a free country like ours, the sovereign Parliament of the country cannot function with a fear complex.

You may recall that even during the 1971 war, to demonstrate to the world that the morale of the Parliament and the morale of the nation has not been cowed down, this Parliament continued to be in session and we discussed a number of aspects of the Bangladesh war ultimately we emerged triumphant.